चमन संदेश

वार्षिक पत्रिका : 2022-23 (वि.स. 2079-80)

चमन लाल महाविद्यालय, लंढौरा

जनपद हरिद्वार (उत्तराखण्ड)

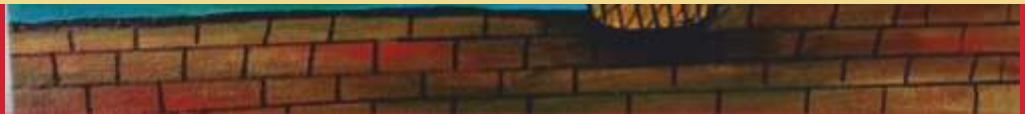

हमारे प्रेरणा पुंज

कीर्तिशेष पंडित चमन लाल शर्मा

जगमग रहेंगे दीपक तुम तो जला गये हो, रोशन रहेंगी राहें तुम जो दिखा गये हो।
कर्म रहा जिन का धर्म शिक्षा को पूर्ण समर्पण, उस मानव को नमन प्रभु चरणों पर अर्पण।।

वार्षिक पत्रिका : 2022–23 (वि.स. 2079–80)

चमन लाल महाविद्यालय, लंढौरा

जनपद हरिद्वार (उत्तराखण्ड)

चमन संदेश

मुख्य संरक्षक
श्री ईश्वर चन्द शर्मा, संस्थापक
श्री राम कुमार शर्मा, अध्यक्ष, प्रबंध समिति

संरक्षक
श्री अरुण कुमार हरित, सचिव, प्रबन्ध समिति
श्री अतुल हरित, कोषाध्यक्ष, प्रबन्ध समिति

प्रधान संपादक
डॉ. दीपा अग्रवाल, कार्यवाहक प्राचार्या

मुख्य संपादक
आशुतोष शर्मा (सहायक आचार्य, हिन्दी विभाग)

संपादक मंडल
डॉ. अपर्णा शर्मा (सहायक आचार्या, अंग्रेजी विभाग)
डॉ. अनिता रानी (सहायक आचार्या, संस्कृत विभाग)

छात्र संपादक
तमन्ना बी.ए. द्वितीय वर्ष
शीतल बी.ए. द्वितीय वर्ष

प्रकाशक
प्राचार्य, चमन लाल महाविद्यालय
लंढौरा (हरिद्वार)

मुद्रक
समय साक्ष्य
15 फालतू लाईन, देहरादून–248001
फोन: 0135–2658894

मुख पृष्ठ
प्रतीक्षा, एम.ए. चित्रकला (द्वितीय वर्ष)

नोट: इस पत्रिका में प्रकाशित लेख लेखकों के निजी विचार हैं, संपादक मण्डल का इनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है।

ISBN : 978-81-19743-23-0

आगामी अंक के लिए आपके सुझाव हेतु
Email:editorclm@gmail.com, Ph.: 9997998050, 9917489599

महाविद्यालय के संस्थापक

पं. ईश्वर चन्द शर्मा

प्रबन्ध समिति

श्री राम कुमार शर्मा
अध्यक्ष, प्रबंध समिति

श्री अरुण कुमार हरित
सचिव, प्रबंध समिति

श्री अतुल हरित
कोषाध्यक्ष, प्रबंध समिति

सुबोध उनियाल
मंत्री
Subodh Uniyal
Minister

उत्तराखण्ड सरकार

वन, तकनीकी शिक्षा, भाषा एवं निर्वाचन
उत्तराखण्ड सरकार, देहरादून-248 001
Forest, Technical Education
Language & Election
Govt. of Uttarakhand, Dehradun- 248 001

"सन्देश"

यह हर्ष का बिन्दु है कि चमन लाल महाविद्यालय, लण्ढौरा (हरिद्वार) द्वारा सत्र 2022–23 की वार्षिक पत्रिका "चमन सन्देश" का प्रकाशन किया जा रहा है। जनपद के ग्रामीण परिवेश में स्थापित यह महाविद्यालय क्षेत्र में उच्च शिक्षा के प्रचार–प्रसार के लिए प्रयासरत् है।

मुझे आशा है कि महाविद्यालय की इस पत्रिका में महाविद्यालय के आज तक के सफर, उपलब्ध संसाधनों व क्षेत्र में गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के प्रसार की कार्य–योजना के समावेश के साथ महाविद्यालय के प्रतिभाशाली छात्र–छात्राओं की रचनात्मक कृतियों का भी संकलन होगा। क्षेत्र में शैक्षणिक उन्नयन के लिए महाविद्यालय निरन्तर प्रयासरत् रहेगा, ऐसा मेरा विश्वास है।

महाविद्यालय की सत्र 2022–23 की वार्षिक पत्रिका "चमन संदेश" के प्रकाशन की सफलता हेतु मेरी सतत् शुभकामनाएं।

।। सुबोध उनियाल ।।

श्री राम कुमार शर्मा,
अध्यक्ष, प्रबन्ध समिति,
चमन लाल महाविद्यालय,
लण्ढौरा–हरिद्वार।

कक्ष संख्या- 124 - 125, प्रथम तल, विधानसभा भवन, देहरादून -248 001, उत्तराखण्ड।
Room No- 124 - 125, I[st] Floor, Vidhan Sabha Bhavan, Dehradun-248001, Uttarakhand
☎+91-135-2666 671 Fax - +91-135-2665 855 Mail us to : ministryuk1@gmail.com

उच्च शिक्षा निदेशालय, उत्तराखण्ड
हल्द्वानी – 263139 (नैनीताल)

Mail-Higherducation.director@gmail.com

प्रो०(डा० सी०डी सूंठा)
निदेशक (उच्च शिक्षा)

अर्द्धशासकीय पत्रांक 8629/2022–23
दिनांक 29 मार्च 2023

संदेश

महोदय,

मुझे यह जानकर अत्यन्त प्रसननता हुई कि चमन लाल महाविद्यालय लण्ढौरा(हरिद्वार) की वार्षिक पत्रिका "**चमन संदेश**" का सत्र 2022–23 का प्रकाशन किया जा रहा है।

पत्रिका महाविद्यालय में संचालित विभिन्न शैक्षणिक एवं शिक्षणेत्तर गतिविधियों का एक महत्वपूर्ण दर्पण होती है, जो अध्ययनरत विद्यार्थियों को उनमें अन्तर्निहित मौलिक सृजनात्मक प्रतिभा के विकास एवं अभिव्यक्ति का सुलभ अवसर प्रदान करती है। रचनाशीलता का विकास उच्च शिक्षण संस्थान का एक महत्वपूर्ण लक्ष्य होता है। " **चमन संदेश** " इस लक्ष्य की प्राप्ति का एक सशक्त माध्यम होगी।

मै उक्त पत्रिका के प्रकाशन के लिए महाविद्यालय के प्रबन्ध समिति, प्राचार्य, सम्पादक मण्डल, एवं छात्र/छात्राओं को हार्दिक शुभकामनाऐं प्रेषित करता हूँ।

मंगलकामनाओ सहित।

प्रो० (डा० सी०डी०सूंठा)

सेवा में,

प्राचार्य,
चमन लाल महाविद्यालय,
लण्ढौरा (हरिद्वार)
उत्तराखण्ड।

श्री देव सुमन उत्तराखण्ड विश्वविद्यालय
बादशाहीथौल, टिहरी गढ़वाल, उत्तराखण्ड–249199

Sri Dev Suman Uttarakhand University
Badshahithaul, Tehri Garhwal, Uttarakhand - 249199

प्रो० महाबीर सिंह रावत
Prof. Mahabir Singh Rawat
कुलपति
Vice Chancellor

Tel. : 01376 - 254110 (O)
Fax : 01376 - 254110
Website : www.sdsuv.ac.in
Mail Id : vcsdsuv2018@gmail.com

Ref. No.: SDSUV/ Memo

Dated : 24/03/2023

सन्देश

हर्ष का विषय है, कि चमन लाल महाविद्यालय, लण्ढौरा, हरिद्वार द्वारा गत वर्षों की भांति इस वर्ष भी वार्षिक पत्रिका **"चमन संदेश"** का प्रकाशन किया जा रहा है, जिसमें महाविद्यालय की शैक्षणिक गतिविधियों के साथ–साथ छात्र–छात्राओं में छिपी हुई प्रतिभा, साहित्य–संस्कृति एवं रचनात्मक उन्नयन को उजागर किया जा रहा है। पत्रिका के माध्यम से ग्रामीण क्षेत्रों के छात्र समुदाय को उच्च शिक्षा से सम्बन्धित शैक्षणिक गतिविधियों की जानकारी मिलेंगी। मुझे आशा ही नहीं अपितु पूर्ण विश्वास है कि प्रकाशित वार्षिक पत्रिका का प्रकाशन उच्च शिक्षा की विभिन्न गतिविधियों को प्रदर्शित करने, छात्र–छात्राओं तथा शिक्षा जगत के क्षेत्र में बेहतर सवांद कायम करने में महत्वपूर्ण एवं उपयोगी सिद्ध होगी।

मैं, चमन लाल महाविद्यालय, लण्ढौरा, हरिद्वार की उत्तरोत्तर प्रगति की कामना करते हुए वार्षिक पत्रिका **"चमन संदेश"** की भव्यता एवं सफल प्रकाशन के लिए हार्दिक शुभकामनायें ज्ञापित करता हूँ।

24.3.23

प्रो० महाबीर सिंह रावत
कुलपति।

राम कुमार शर्मा
अध्यक्ष, प्रबंध समिति
चमन लाल महाविद्यालय
लण्ढौरा (हरिद्वार)

E-mail : info@cldcollege.com
website : www.cldcollege.com

Mob. : 9997998050
9927027669

चमन लाल महाविद्यालय

CHAMAN LAL MAHAVIDHYALAYA

सम्बद्ध : श्री देव सुमन उत्तराखण्ड विश्वविद्यालय, बादशाही थौल, टिहरी (गढ़वाल)

लण्ढौरा (हरिद्वार) उत्तराखण्ड

पत्रांक सं- .....

दिनांक .....

शुभकामना संदेश

अत्यंत हर्ष का विषय है की चमन लाल महाविद्यालय, लंढौरा अपनी वार्षिक पत्रिका चमन संदेश के नवीन अंक का प्रकाशन करने जा रहा है। चमन संदेश के गत अंकों में स्तरीय रोचक एवं ज्ञानवर्धक लेखों का समावेश रहा है। आशा है चमन संदेश का यह नवीन अंक छात्र–छात्राओं को अभिव्यक्ति का उचित मंच प्रदान करने के साथ ही विभिन्न विषयों पर उनके ज्ञानवर्धन में सफल सिद्ध होगा।

हमारे लिए विशेष हर्ष का विषय है कि राष्ट्रीय मूल्यांकन एवं प्रत्यायन परिषद द्वारा महाविद्यालय को B+ ग्रेड प्रदान किया गया है। निश्चित रूप से यह उपलब्धि प्राचार्य, शिक्षकों, गैर शिक्षण कार्मिकों तथा छात्र–छात्राओं के कठिन परिश्रम एवं महाविद्यालय के प्रति उनके समर्पण के बिना प्राप्त करना संभव नहीं था। आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि भविष्य में भी पूरा महाविद्यालय परिवार एकनिष्ठ भाव से महाविद्यालय की उन्नति के लिए प्रयासरत रहेगा।

चमन संदेश के सफल प्रकाशन के लिए संपादक मंडल सहित संपूर्ण महाविद्यालय परिवार को हार्दिक शुभकामनाएं प्रेषित करता हूं।

(रामकुमार शर्मा)
अध्यक्ष, प्रबंध समिति

E-mail : info@cldcollege.com
website : www.cldcollege.com

Mob. : 9997998050
9927027669

चमन लाल महाविद्यालय

CHAMAN LAL MAHAVIDHYALAYA

सम्बद्ध : श्री देव सुमन उत्तराखण्ड विश्वविद्यालय, बादशाही थौल, टिहरी (गढ़वाल)
लण्ढौरा (हरिद्वार) उत्तराखण्ड

B+ NAAC

पत्रांक सं. .....

दिनांक .....

शुभकामना संदेश

यह जानकर अत्यंत प्रसन्नता हुई कि चमन लाल महाविद्यालय, लंढौरा अपने वार्षिक पत्रिका चमन संदेश 2022–23 का प्रकाशन करने जा रहा है। चमन संदेश अपने प्रथम अंक से ही अत्यंत ज्ञानवर्धक एवं रोचक जानकारियां पाठकों तक पहुंचा रही है। आशा है चमन संदेश का यह नवीन अंक भी ज्ञानवर्धक सामग्री पाठको तक पहुंचाने में सफल रहेगा। संपादक मंडल एवं संपूर्ण महाविद्यालय परिवार को ऊर्जा से परिपूर्ण एवं ज्ञानवर्धक अंक के प्रकाशन के लिए हार्दिक शुभकामनाएं प्रेषित करता हूं।

नेक द्वारा B+ ग्रेड प्राप्त करने के लिए संपूर्ण महाविद्यालय परिवार को हार्दिक बधाई।

(अरूण कुमार हरित)
सचिव प्रबंध समिति

प्राचार्या की कलम से...

प्रिय विद्यार्थियों

महाविद्यालय की वार्षिक पत्रिका चमन संदेश का यह अंक आपको सौंपते हुए प्रसन्नता का अनुभव हो रहा है। हमारी प्रसन्नता इसलिए भी बढ़ गई है क्योंकि इसी वर्ष नैक की ओर से महाविद्यालय का मूल्यांकन किया गया है। भारत सरकार की इस एजेंसी की ओर से हमें बी प्लस ग्रेड प्रदान किया गया है। आपको यह जानकर हर्ष होगा कि श्री देव सुमन उत्तराखंड विश्वविद्यालय टिहरी से संबद्ध महाविद्यालयों में इस वर्ष नैक से मूल्यांकन कराने वाला चमन लाल महाविद्यालय पहला एडेड कॉलेज है।

नैक से मूल्यांकन का अर्थ है कि भारत सरकार ने एक अच्छे उच्च शिक्षण संस्थान के लिए जो मानक तय किए हैं, चमन लाल महाविद्यालय उन मानकों पर खरा उतरा है।

हालांकि किसी भी शिक्षण संस्था का सही मूल्यांकन उसके विद्यार्थी और उसके पश्चात उन विद्यार्थियों के अभिभावक अर्थात समाज करता है। हमें खुशी है कि हम अपने विद्यार्थियों को गुणवत्तापरक शिक्षा देकर उनकी अपेक्षाओं पर खरे उतरे हैं। अभिभावकों की दृष्टि में एक बेहतर शिक्षण संस्थान की जो छवि होती है, हमने अपने महाविद्यालय को उस सांचे में ढालने की कोशिश की है। इसी साल महाविद्यालय के कई छात्र-छात्राओं ने नेट, जेआरएफ, गेट और जैम जैसी देश की प्रतिष्ठित परीक्षाओं में सफलता हासिल की है। पूर्ण आशा है कि छात्रों की सफलताओं का यह सिलसिला आगामी वर्षों में और तीव्र गति से आगे बढ़ेगा। वस्तुत: किसी भी संस्था में उसके विद्यार्थियों की सफलता ही संस्था की वास्तविक सफलता है।

हमारे छात्र छात्राओं ने प्रतियोगी परीक्षाओं के साथ ही खेल, एनएसएस, एनसीसी और सामाजिक सहभागिता में भी उल्लेखनीय उपलब्धियाँ हासिल की हैं।

यह साल सफलताओं की कई कहानियां कह रहा है। इसका प्रतिबिंब वार्षिक पत्रिका चमन संदेश में भी देखने को मिलेगा।

जहां हमारा अतीत गौरवमयी है वहीं आने वाले साल में भी हमें शिक्षा के नए आयाम स्थापित करने हैं। यह सब हमारे विद्यार्थियों और उनके अभिभावकों के सहयोग से ही संभव होगा। महाविद्यालय की प्रबंध समिति के मार्गदर्शन में सभी प्राध्यापक और कर्मचारी शिक्षा के प्रचार-प्रसार में निरंतर जुटे हैं।

वार्षिक पत्रिका चमन संदेश के सफल प्रकाशन के लिए पूरे संपादक मंडल को बहुत-बहुत शुभकामनाएं। उम्मीद करते हैं कि यह अंक छात्र छात्राओं के लिए उपयोगी साबित होगा।

डॉ. दीपा अग्रवाल
कार्यवाहक प्राचार्या

संपादकीय

चमन संदेश का नवीन अंक आपके सम्मुख प्रस्तुत करते हुए प्रसन्नता के साथ-साथ उत्साह की भी अनुभूति हो रही है। पत्रिका महाविद्यालय की वर्षभर की गतिविधियों का दर्पण तो होती ही है साथ ही छात्र-छात्राओं को अभिव्यक्ति का एक मंच भी प्रदान करती है। चमन संदेश के इस अंक का यही उद्देश्य है कि महाविद्यालय के छात्र-छात्राएं अपने भावों को अपने लेखों के माध्यम से अभिव्यक्त करें और अपनी प्रतिभा को अधिक निखार प्रदान कर सकें। शिक्षकों एवं अन्य विद्वत जनों के लेख भी संकलित किए गए हैं ताकि ज्ञानवर्धक सामग्री आपके सम्मुख प्रस्तुत की जा सके। आशा है हमारा यह प्रयास सार्थक सिद्ध होगा।

सत्र 2022-23 महाविद्यालय के लिए विशेष उपलब्धियों से परिपूर्ण रहा। राष्ट्रीय मूल्यांकन एवं प्रत्यायन परिषद नैक द्वारा प्रतिशत बी+ ग्रेड विशेष उल्लेखनीय उपलब्धि रही साथ ही महाविद्यालय के छात्र छात्राओं ने शैक्षिक एवं पाठ्येतर स्तर पर अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन किया। चमन संदेश के इस अंक में नैक टीम के भ्रमण को विशेष रूप से स्थान दिया गया है। महाविद्यालय के विभिन्न विभागों, एन.सी.सी., एन.एस.एस. तथा रोवर्स-रेंजर्स द्वारा आयोजित कार्यक्रमों को पत्रिका में सम्मिलित किया गया है।

पत्रिका के प्रकाशन में मार्गदर्शन एवं सहयोग प्रदान करने के लिए श्री राम कुमार शर्मा, अध्यक्ष प्रबंध समिति श्री अरुण हरित, सचिव प्रबंध समिति तथा श्री अतुल हरित, कोषाध्यक्ष प्रबंध समिति, शिक्षकों, गैर शिक्षण कार्मिकों तथा छात्र-छात्राओं का का हृदय से आभार व्यक्त करता हूं।

आशुतोष शर्मा
मुख्य सम्पादक

नैक टीम भ्रमण – कुछ झलकियाँ

के माननीय सदस्यों का
अभिभावक शिक्षक संघ एवं पुरातन छात्र
संवाद में हार्दिक स्वागत एवम् अभिनंद
दिनांकः 27 व 28 फरवरी 2023
पुरातन छात्र समिति

राष्ट्रीय मूल्यांकन एवम् प्रत्यायन परिषद
स्वागत करती है

LANDHAURA, HARIDWAR
INTERACTION WITH IQAC

दिनांक 27-28 फरवरी, 2023
राष्ट्रीय मूल्यांकन एवम् प्रत्यायन परिषद्

दिनांक 27-28 फरवरी, 202

दिनांक 27-28 फरवरी, 2023
राष्ट्रीय मूल्यांकन एवम् प्रत्यायन परिषद्

विभागीय गतिविधियाँ

शिक्षक वर्ग

डॉ. दीपा अग्रवाल
कार्यवाहक प्राचार्या/सहायक आचार्या
(अंग्रेजी विभाग)

डॉ. किरन शर्मा
सहायक आचार्या
(वाणिज्य विभाग)

डॉ. नीशू कुमार
सहायक आचार्य
(राजनीति विज्ञान विभाग)

डॉ. सूर्यकान्त शर्मा
सहायक आचार्य
(इतिहास विभाग)

श्री विनीत कुमार
सहायक आचार्य
(गणित विभाग)

डॉ. नवीन कुमार
सहायक आचार्य
(भूगोल विभाग)

श्री विपुल सिंह
सहायक आचार्य
(भौतिक विज्ञान विभाग)

डॉ. तरुण कुमार गुप्ता
सहायक आचार्य
(गणित विभाग)

डॉ. विमल कान्त
सहायक आचार्य
(अर्थशास्त्र विभाग)

डॉ. संजीव कुमार
सहायक आचार्य
(रसायन विज्ञान विभाग)

डॉ. मीरा चौरसिया
सहायक आचार्या
(हिन्दी विभाग)

श्री आशुतोष शर्मा
सहायक आचार्य
(हिन्दी विभाग)

डॉ. देव पाल
सहायक आचार्य
(वाणिज्य विभाग)

डॉ. मौ. इरफान
सहायक आचार्य
(वनस्पति विज्ञान विभाग)

डॉ. ऋचा चौहान
सहायक आचार्या
(वनस्पति विज्ञान विभाग)

डॉ. अनिता शर्मा
सहायक आचार्या
(संस्कृत विभाग)

डॉ. प्रभात कुमार सिंह
सहायक आचार्य
(सूक्ष्म जीव विज्ञान विभाग)

डॉ. कुलदीप कुमार
सहायक आचार्य
(पुस्तकालय विज्ञान विभाग)

डॉ. अपर्णा शर्मा
सहायक आचार्या
(अंग्रेजी विभाग)

श्री नवीन कुमार
सहायक आचार्य
(समाज शास्त्र विभाग)

डॉ. विधि त्यागी
सहायक आचार्या
(जन्तु विज्ञान विभाग)

डॉ. धर्मेन्द्र कुमार
सहायक आचार्य
(राजनीति विज्ञान विभाग)

डॉ. अरविन्द कुमार
सहायक आचार्य
(भौतिक विज्ञान विभाग)

डॉ. नीतू गुप्ता
सहायक आचार्या
(गृह विज्ञान विभाग)

डॉ. अनामिका चौहान
सहायक आचार्या
(गृह विज्ञान विभाग)

डॉ. हिमांशु कुमार
सहायक आचार्य
(समाजशास्त्र विभाग)

डॉ. पुनीता शर्मा
सहायक आचार्या
(पुस्तकालय विज्ञान विभाग)

डॉ. दीपिका सैनी
सहायक आचार्या
(जन्तू विज्ञान विभाग)

डॉ. श्वेता
सहायक आचार्या
(वाणिज्य विभाग)

प्रयोगशाला सहायक वर्ग

श्री अभिषेक
प्रयोगशाला सहायक
(भूगर्भ विज्ञान विभाग)

श्रीमती रीना गुप्ता
प्रयोगशाला सहायक
(गृह विज्ञान विभाग)

श्रीमती प्रणीता भण्डारी
प्रयोगशाला सहायक
(कम्प्यूटर विज्ञान विभाग)

श्री जितेश बगडवाल
प्रयोगशाला सहायक
(कम्प्यूटर विज्ञान विभाग)

श्री अमित बहादुर
प्रयोगशाला सहायक
(चित्रकला विभाग)

श्रीमती दीपाक्षी शर्मा
प्रयोगशाला सहायक
(सूक्ष्मजीव विज्ञान विभाग)

श्री नावेद आसिफ
प्रयोगशाला सहायक
(भूगोल विभाग)

श्री गौरव अग्रवाल
प्रयोगशाला सहायक
(भौतिक विज्ञान विभाग)

श्री भुवन चन्द्र ब्रजवासी
प्रयोगशाला सहायक
(जन्तु विज्ञान विभाग)

श्री सतीश
प्रयोगशाला सहायक
(वनस्पति विज्ञान विभाग)

पुस्तकालय विभाग एवं लिपिक वर्ग

डॉ. राजीव वशिष्ठ
पुस्तकालयाध्यक्ष
(अवकाश पर)

श्री दिनेश कुमार
कार्यालय अधीक्षक

श्री विदित कौशल
लेखाकार

श्रीमती मंजू लता
उप स. पुस्तकालयाध्यक्ष

श्री निशिथ कुमार
स्टेनो

श्री दिनेश कौशिक
कनिष्ठ सहायक

श्री रविन्द्र सिंह
कनिष्ठ सहायक

श्री सचिन शर्मा
कनिष्ठ सहायक

श्री दीपक चौधरी
कनिष्ठ सहायक

श्री विपिन कुमार
कनिष्ठ सहायक

श्री विशाल कुमार
कनिष्ठ सहायक

श्री सुमित कौशिक
कनिष्ठ सहायक

अनुक्रमणिका

- **शुभकामना संदेश**
- **प्राचार्या की कलम से**
- **सम्पादकीय**

हिन्दी अनुभाग

क्रमांक	विषय	लेखक का नाम	पृष्ठ संख्या
1.	पुस्तकालय में आर आर.एफ.आई.डी. प्रौद्योगिकी का उपयोग और पुस्तकालय स्टाफ की भूमिका	डॉ. कुलदीप कुमार	7
2.	ऑनलाइन धोखाधड़ी	डॉ. सूर्यकान्त शर्मा	15
3.	सफलता का सूत्र गतिशीलता	आशुतोष शर्मा	18
4.	पंचायती राज व्यवस्था में महिलाओं की स्थिति	नवीन कुमार	20
5.	मोटे अनाज : एक बेहतर स्वास्थ्य की ओर	डॉ. नीतू गुप्ता	22
6.	पर्यावरण और माँ : सिक्के के दो पहलू	डॉ. पुनीता शर्मा	24
7.	भारतीय समाज में नारी की समानता का लक्ष्य	डॉ. हिमांशु कुमार	27
8.	मोटे अनाज का अन्तर्राष्ट्रीय वर्ष : एक विश्लेषण	सुनील शर्मा	29
9.	योग का स्वरूप	डॉ. अंकित कुमार	31
10.	युवा पीढ़ी और नैतिकता	डॉ. मधु मेहरा	32
11.	दक्षिण व राजस्थानी भित्ती चित्रकला शैली	डॉ. आंचल शर्मा	34
12.	स्वस्थ रहने के तरीके	रीना गुप्ता	40
13.	सोशल मीडिया	गौरव अग्रवाल	41
14.	कोरोना महामारी का सामाजिक एवं आर्थिक प्रभाव	डॉ. विपिन कुमार	43
15.	भौतिक विज्ञान का प्रगति क्षेत्र	शुभम जुरीवाल	48
16.	सकारात्मक बदलाव का पाठ्यक्रम	आयुष शर्मा	50
17.	नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति	साक्षी	52
18.	उच्च शिक्षा में गुणात्मक सुधार की आवश्यकता	रीटा सैनी	54
19.	ग्रुप ऑफ ट्वेंटी (जी-20)	नीलू	56
20.	जी-20	तनु सिंह	57
21.	बालश्रम अपराध	दिव्या	58
22.	महिला सशक्तिकरण	डॉली	60
23.	तीन तलाक	सोनिया	62
24.	जल संरक्षण : आज की आवश्यकता	पूजा धनकर	63

25.	नमामि गंगे परियोजना : सुधर रही है गंगा की सेहत	अनुराधा	64
26.	पर्यावरण संरक्षण	शाहरुख	67
27.	गरीबों का मेवा : मूंगफली	खुशनुमा	69
28.	बेटियाँ	मेहर जेहरा	71
29.	पर्यावरण	उदयवीर	72
30.	पर्यावरण संरक्षण : जीवन रक्षण	रूबीना	74
31.	जल प्रदूषण : एक विकट समस्या	अर्पित	75
32.	नारी शक्ति	तमन्ना	76
33.	महिला सशक्तिकरण	शहराज़	78
34.	महिलाओं पर अत्याचार	अलिशा	80
35.	द केरल स्टोरी	उज़्मा नूर	82
36.	नारी उत्पीड़न	बुशरा	84
37.	गृह विज्ञान : एक परिचय	प्रिया	85
38.	स्त्री शिक्षा	मानसी पंवार	87
39.	अंतर्राष्ट्रीय नृत्य दिवस	गौरव	88
40.	ओढ़ के तिरंगा क्यों पापा आए हैं	अनस खान	89
41.	जनसंख्या नियंत्रण	आर्यन	90
42.	सफलता की राह	दीपांशी	91
43.	इक्कीसवीं सदी में दंत चिकित्सा में आए सुधा	शिवानी देवी	92
44.	भारतीय कला और संस्कृति का इतिहास और विकास	अंशु सैनी	93
45.	मुस्कुराना-एक वरदान	मेहर जेहरा	94

अंग्रेजी अनुभाग

क्रमांक	विषय	लेखक का नाम	पृष्ठ संख्या
1.	An Investigation of Shakespear's Villain in the light of gunas	Dr. Deepa Agarwal	97
2.	Origin and Applications of Vedic Mathematics	Dr. Tarun Kumar Gupta	100
3.	Production of Bio-fertilizer use of Algae	Mohd. Irfan	104
4.	Adulteration in food and Pollution : Leading to Cancer	Dr. Vidhi Tyagi	109
5.	Biosensors: An Useful Aid in Environmental Monitoring	Dr. Deepika Saini Dr. Sagarika Kabra	111

6.	Plant Tissue Culture, A Technique for Propagation and Conservation of Endangered Plant Species	Anuradha Saini	114
7.	Organic farming : Friend and foe	Sagar Chaudhary	116
8.	Physics demonstrations for promoting STEM Education	Arvind Kumar	118
9.	Gender sensitization need of the hour for woman empowerment	Dr. Kanika Rawat	121
10.	Financial Freedom of Women in India: Empowering Through Economic Independence	Abhishek	124
11.	Importance of Education	Anuradha	126
12.	My friend	Shama	128
13.	G-20	Gayatri	129
14.	G-20 Summit	Karen Singh Bisht	132
15.	Ancient Indian Unviersities : Taxila and Nalanda	Shivank Sharma	134
16.	Surya Chikitsa	Neetu Singh	136
17.	Effectiveness of CRM in Banking Sector	Dr. Shweta	137

संस्कृत अनुभाग

क्रमांक	विषय	लेखक का नाम	पृष्ठ संख्या
1.	भारतवर्षे विदेशीयाक्रमणम्	अंजलि कुमारी	142
2.	नीतिश्लोकाः	नीतू	143
3.	अस्माकं देशः	प्रियंका	144
4.	वृक्षाणां लाभः	मनीषा कुमारी	145
5.	पर्यावरणम्	साक्षी	146
6.	सुभाषितानि	अन्नू	147

हिन्दी अनुभाग

पुस्तकालय में आर.एफ.आई.डी प्रौद्योगिकी का उपयोग और पुस्तकालय स्टाफ की भूमिका

डॉ. कुलदीप कुमार
असिस्टेंट प्रोफेसर, पुस्तकालय विज्ञान विभाग
चमन लाल महाविधालय, लंढौरा, हरिद्वार

सारगर्भित

आईसीटी की तेजी से हो रही प्रगति के कारण हमारा समाज भी तेजी से बदल रहा है। इंटरनेट सर्वर में बड़ी मात्रा में जानकारी संग्रहीत की जाती है और लोगों द्वारा साझा की जाती है। इसे लगातार अपडेट किया जाता है। यह पेपर उद्देश्य सभी घटकों और तकनीकी विशषताओं को कवर करता है। आर.एफ.आई.डी. प्रौद्योगिकी पुस्तकालय स्वचालन प्रणाली विलय कर रहा है। यह पुस्तकालय की प्रभावशीलता में सुधार करने के लिए पुस्तकालय का हिस्सा है। जानकारी का उपयोग आर.एफ.आई.डी. के प्रति उपयोगकर्ता की चेतना को ध्यान में रखते हुए। आर.एफ.आई.डी. तकनीक मोबाइल फोन की अवधारणा के समान है। यह तकनीक रेडियो तरंगों का उपयोग लोगों या वस्तुओं को स्वचालित रूप से पहचानने के लिए करती है। यह कोई नई व्यवस्था नहीं है लेकिन इसका आधार 1940 के दशक में स्थापित किया गया था।

कीवर्ड्स : आर.एफ.आई.डी., पुस्तकालय विज्ञान, पुस्तकालय सुरक्षा, रेडियो तरंगों, सुरक्षा प्रणाली, टैग, चोरी इत्यादि।

परिचय

यह एक छोटा सा उपकरण है जो जानकारी स्टोर कर सकता है। यह 1970 के बाद से उपयोग में है। आर.एफ.आई.डी. टैग सक्रिय अर्ध-निष्क्रिय और निष्क्रिय हो सकते हैं। आर.एफ.आई.डी. तकनीक जो स्वचालित रूप से वस्तुओं की पहचान करने के लिए रेडियो तरंगों का उपयोग करती है। किसी भी आर.एफ.आई.डी. प्रणाली का उद्देश्य उपयुक्त ट्रांसपोंडर में डेटा ले जाना है जिसे आमतौर पर टैग के रूप में जाना जाता है और पठनीय मशीन द्वारा डेटा को पुनर्प्राप्त करना है। यह प्रौद्योगिकी प्रणाली सुरक्षा से परे ट्रैकिंग सिस्टम बनने के लिए आगे बढ़ती है जो पूरे पुस्तकालय में सामग्रियों की अधिक कुशल ट्रैकिंग के साथ सुरक्षा को जोड़ती है। आसान और तेज चार्ज और निर्वहन सूची और सामग्री हैंडलिंग करती है।

आर.एफ.आई.डी. इतिहास

हाल के वर्षों में इस तकनीक पर अधिक से अधिक ध्यान दिया जा रहा है। आर.एफ.आई.डी. के इतिहास का पता द्वितीय विश्व युद्ध (1940 के दशक) से लगाया जा सकता है। इसका इस्तेमाल दुश्मन के विमानों को हमारे विमानों से अलग करने के लिए किया गया था। द्वितीय विश्व युद्ध के बाद के 40 वर्षों में लोग शायद ही रेडियो फ्रीक्वेंसी आइडेंटिफिकेशन की बात करते हों। 1991 तक

टेक्सास इंस्ट्रूमेंट्स इनकॉर्पोरेटेड ने पशुपालन के लिए आर.एफ.आई.डी. तकनीक लागू की। 1999 में मैसाचुसेट्स इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी ने अध्ययन करना शुरू किया कि कैसे प्रौद्योगिकी से थोक विक्रेताओं को लाभ पहुंचाया जाए। तब से आर.एफ.आई.डी. अनुप्रयोगों की सीमा तेजी से व्यापक रूप से शुरू हो गई है। (मार्क रॉबर्टी, 2002-2011) रेडियो आवृत्ति पहचान दशकों से है और इसके विकास को 10 साल की अवधि में निम्नानुसार विभाजित किया जा सकता है

आर.एफ.आई.डी. के दशक

1940-1950 रडार परिष्कृत और इस्तेमाल किया, प्रमुख द्वितीय विश्व युद्ध के विकास के प्रयास। 1948 में आर.एफ.आई.डी. का आविष्कार किया गया।

1950-1960 आर.एफ.आई.डी. प्रौद्योगिकी प्रयोगशाला प्रयोगों के प्रारंभिक अन्वेषण।

1960-1970 आर.एफ.आई.डी. के सिद्धांत का विकास। अनुप्रयोगों के क्षेत्र परीक्षणों की शुरुआत।

1970-1980 आर.एफ.आई.डी. विकास का विस्फोट। आर.एफ.आई.डी. के टेस्ट में तेजी आती है। आर.एफ.आई.डी. के बहुत जल्दी गोद लेने वाले कार्यान्वयन।

1980-1990 आर.एफ.आई.डी. के वाणिज्यिक अनुप्रयोग मुख्यधारा में प्रवेश करते हैं।

1990-2000 मानकों का उदय। आर.एफ.आई.डी. व्यापक रूप से तैनात। आर.एफ.आई.डी. रोजमर्रा की जिंदगी का एक हिस्सा बन जाता है।

2000-आर.एफ.आई.डी. विस्फोट जारी है।

पुस्तकालय के लिए आर.एफ.आई.डी. की अवधारणाएं

पुस्तकालय सूचना, स्रोत, संसाधन, पुस्तकें और सेवाओं का संग्रह है। आर.एफ.आई.डी. तकनीक की अवधारणा 1948 में विकसित की गई थी लेकिन इसे अपने मूल वादे पर खरा उतरने से पहले पचास साल इंतजार करना पड़ा। छोटे एकीकृत सर्किट (चिप्स) के आगमन ने समाधान डिजाइनरों को आपूर्ति श्रृंखला के माध्यम से वस्तुओं की आवाजाही में खुफिया जानकारी जोड़ने और जब एक चिप की अनुमति दी। कई पुस्तकालयों की पुस्तकों से संरचना अब माइक्रोफॉर्म (माइक्रोफिल्म / माइक्रोचिप), ऑडियो/वीडियो टेप जैसे विभिन्न भंडारण मीडिया पर नक्शे, प्रिंट और अन्य दस्तावेजों के लिए भंडार और पहुंच बिंदु भी हैं। पुस्तकालयों में एक पुस्तकालय वर्गीकरण प्रणाली के अनुसार एक निर्दिष्ट क्रम में व्यवस्थित सामग्री होती है, आइटम जल्दी से स्थित हो सकते हैं और संग्रह कुशलता से ब्राउज़ किया जा सकता है। संदर्भ स्टैक अलग-अलग होते हैं जिनमें केवल संदर्भ पुस्तकें होती हैं और केवल चयनित सदस्य होते हैं।

आर.एफ.आई.डी. सिस्टम के घटक

एक व्यापक आर.एफ.आई.डी. प्रणाली के तीन घटक हैं

आर.एफ.आई.डी. टैग

इस तकनीक में एक टैग शामिल है जो एक उत्पाद को चिपकाता है जो रेडियो तरंगों के माध्यम से उत्पाद को पहचानता है और ट्रैक करता है। टैग कागज पतला, लचीला और लगभग 2"× 2" आकार में है जो इसे पुस्तकालय के संग्रह में प्रत्येक पुस्तक के अंदर के कवर पर असंगत रूप से रखने की अनुमति देता है। इसमें एक नक़्क़ाशीदार एंटीना और एक छोटी चिप होती है जो प्रत्येक आइटम की

पहचान करने के लिए एक अद्वितीय आई डी नंबर सहित महत्वपूर्ण ग्रंथ सूची डेटा संग्रहीत करती है। यह एक बारकोड लेबल के विपरीत है, जो किसी भी जानकारी को संग्रहीत नहीं करता है, लेकिन केवल एक डेटाबेस को इंगित करता है। ये टैग 2,000 बाइट्स तक डेटा ले जा सकते हैं। इस तकनीक में तीन भागों स्कैनिंग, एंटीना, ट्रांससीवर के साथ एक डिकोडर है जो डेटा को इंटरप्रेट करता है और एक ट्रांसपोंडर (आर.एफ.आई.डी. टैग) पूर्व-सूचना के साथ सेट होता है। स्कैनिंग एंटीना एक रेडियो-फ्रीक्वेंसी सिग्नल भेजता है जो आर.एफ.आई.डी. टैग के साथ संचार का एक साधन प्रदान करता है। जब आर.एफ.आई.डी. टैग स्कैनिंग एंटीना के आवृत्ति क्षेत्र से गुजरता है। यह सक्रियण संकेत का पता लगाता है और स्कैनिंग एंटीना द्वारा उठाए जाने वाले होल्ड में सूचना डेटा को स्थानांतरित कर सकता है।

सेंसर या रीडर

पुस्तकालय के भीतर संबंधित अनुप्रयोगों के अनुरूप सेंसर विभिन्न आकारों में उपलब्ध हैं और अक्सर उस विशिष्ट उद्देश्य के लिए एक बाड़े में एकीकृत होते हैं अर्थात संरक्षक स्वयं चेक-आउट मशीन और इन्वेंट्री रीडर। पाठक एंटीना को आर.एफ. क्षेत्र उत्पन्न करने की शक्ति देता है। जब कोई टैग इस आर.एफ. फ़ील्ड से गुजरता है, तो चिप पर संग्रहीत जानकारी को पाठक द्वारा डिकोड किया जाता है, और कंप्यूटर सिस्टम या सेंट्रल सर्वर को भेजा जाता है जो बदले में, लाइब्रेरी सूचना प्रणाली को संचारित करता है। आर.एफ.आई.डी. कामकाज की संरचना को निम्नलिखित चित्र 1 से समझा जा सकता है।

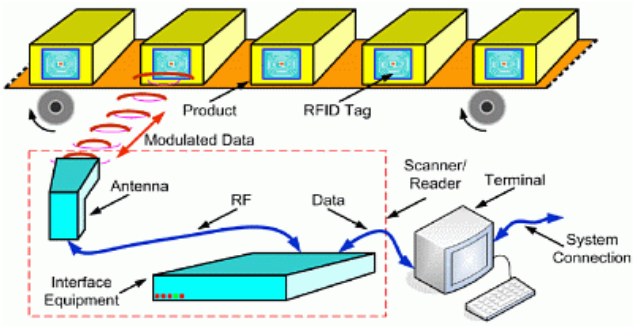

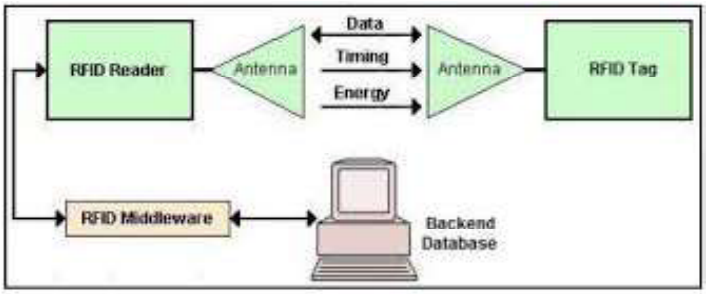

सर्वर/डॉकिंग स्टेशन

सर्वर एक या एक से अधिक पाठकों से जानकारी प्राप्त करता है और परिसंचरण डेटाबेस के साथ जानकारी का आदान-प्रदान करता है। सर्वर कुछ व्यापक आर.एफ.आई.डी. सिस्टम का दिल है। यह विभिन्न घटकों के बीच संचार गेटवे है। यह इसके सॉफ्टवेयर में APIs - एप्लीकेशन प्रोग्रामिंग इंटरफ़ेस शामिल है, जो इसे स्वचालित पुस्तकालय प्रणाली के साथ इंटरफ़ेस करने के लिए आवश्यक है।

लाइब्रेरी में आर.एफ.आई.डी. कैसे काम करता है -

जैसा कि उपयोगकर्ता लाइब्रेरी के बाहर दस्तावेज़ ले जाता है, बाहर निकलने वाले गेट पर रखा एंटीना स्वचालित रूप से आर.एफ.आई.डी. टैग पर निहित जानकारी को पढ़ता है ताकि यह सत्यापित किया जा सके कि दस्तावेज़ ठीक से जारी किया गया है या नहीं। यदि यह उपयोगकर्ता को पुस्तकालय के मानदंडों के अनुसार जारी नहीं किया जाता है या यह पुस्तकालय से चोरी किया जा रहा है तो एंटीना इसे महसूस करता है और तत्काल अलर्ट देता है। जब भी कोई उपयोगकर्ता मुद्दा-वापसी उद्देश्य के लिए एक दस्तावेज लाता है तो टैग से आर.एफ.आई.डी. रीडर उस पुस्तक से संबंधित जानकारी पढ़ता है और लाइब्रेरी कर्मचारियों की सहायता के बिना कुछ सेकंड में डेटा को सॉफ़्टवेयर में प्रसारित करता है और दस्तावेज़ जारी किया जाता है। इसके परिणामस्वरूप दस्तावेजों की चोरी में कमी आती है। आर.एफ.आई.डी. तकनीक का उपयोग न केवल पुस्तकालयों में परिसंचरण उद्देश्य के लिए किया जा रहा है, बल्कि इसका उपयोग स्टॉक लेने के उद्देश्य से भी किया जाता है। पुस्तकों का ध्यान रखना और उन्हें पुस्तक पाठकों के लिए उपलब्ध कराना महत्वपूर्ण कार्य है। लाइब्रेरी स्टाफ का अधिकांश समय आने वाली और जाने वाली किताबों की जानकारी दर्ज करने में ही बीतता है। सेल्फ चेक-इन/आउट सिस्टम की मदद से पुस्तकों की उधारी और वापसी को पूरी तरह से स्वचालित किया जा सकता है। इस प्रणाली में विशेष सॉफ्टवेयर की स्थापना शामिल है। पुस्तकालयों में आर.एफ. आई.डी. का उपयोग अपने कार्यों को स्वचालित करके पुस्तकालय कर्मचारियों के समय को बचाता है। आर.एफ.आई.डी. लाइब्रेरी प्रबंधन उपयोग करने वाले पाठक का कीमती समय बचाता है, जो पुस्तक उधार लेने या वापस करने के लिए कतार में प्रतीक्षा करने में खर्च हो गया होता। पुस्तकों को उधार लेने के लिए इस प्रणाली का उपयोग करने वाले व्यक्ति को कंप्यूटर स्क्रीन पर विकल्प उपलब्ध कराए जाते हैं। व्यक्ति को खुद को एक कोड के साथ पहचानना होगा जो अधिमानत: एक व्यक्तिगत पहचान संख्या है जो किसी भी प्रकार का विशिष्ट पहचान कोड है। व्यक्ति द्वारा चयनित पुस्तकों की पहचान अंतर्निहित आर.एफ.आई.डी. रीडर द्वारा की जाती है। और किताब के टैग में निगरानी बिट सिस्टम द्वारा निष्क्रिय कर दिया जाता है। जब एक पुस्तक वापस आ जाती है तो चेक-इन / आउट सिस्टम निगरानी बिट को सक्रिय करता है।

चित्र नंबर 2: आर.एफ.आई.डी. लाइब्रेरी मैनेजमेंट सिस्टम

आर.एफ.आई.डी. पुस्तकालय प्रबंधन प्रणाली में आवेदन

1. **बुक ड्राप:** बुक ड्रॉप पुस्तकालय के भीतर या बाहर कहीं भी स्थित हो सकते हैं। पुस्तकालय के बाहर संभावित दूरस्थ स्थानों में एम.आर.टी. / ट्रेन स्टेशन, शॉपिंग सेंटर, स्कूल आदि शामिल हैं। यह पुस्तकालय बंद होने पर भी दिन के किसी भी समय पुस्तकालय वस्तुओं को वापस करने का अभूतपूर्व लचीलापन और सुविधा प्रदान करता है।
2. **आर.एफ.आई.डी. ट्रांसपोंडर या टैगिंग:** यह किसी भी आर.एफ.आई.डी. प्रणाली में सबसे महत्वपूर्ण कड़ी है। इसमें उस विशिष्ट वस्तु से संबंधित जानकारी संग्रहीत करने की क्षमता है, जिससे वे संलग्न हैं, संपर्क या दृष्टि की रेखा के लिए किसी भी आवश्यकता के बिना फिर से लिखे। एक टैग के भीतर डेटा किसी आइटम के लिए पहचान, स्वामित्व का प्रमाण, मूल भंडारण स्थान, ऋण की स्थिति और इतिहास प्रदान कर सकता है। आर.एफ.आई.डी. टैग को विशष रूप से लाइब्रेरी मीडिया में चिपकाने के लिए डिज़ाइन किया गया है, जिसमें किताबें, वेब, DVDs और टेप शामिल हैं।
3. **काउंटर स्टेशन** ऋण, वापसी, टैगिंग, छँटाई और आदि सेवाओं पर कर्मचारियों की सहायता वाला स्टेशन है। इसे आर्मिंग / डिसआर्मिंग मॉड्यूल, टैगिंग मॉड्यूल और सॉर्टिंग मॉड्यूल के साथ लोड किया जाता है। आर्मिंग / डिसआर्मिंग मॉड्यूल ईएस (इलेक्ट्रॉनिक आप्टिकल सर्विलांस) को लाइब्रेरी सामग्री के टैग के अंदर थोड़ा सा सेट / रीसेट करने की अनुमति देता है ताकि ईएस गेट के अलार्म को ट्रिगर / ट्रिगर न किया जा सके।
4. **पैट्रन सेल्फ चेक आउट स्टेशन:** यह मूल रूप से एक टच स्क्रीन वाला कंप्यूटर है और व्यक्तिगत पहचान पुस्तक और अन्य मीडिया हैंडलिंग और परिसंचरण के लिए एक अंतर्निहित

आर.एफ.आई.डी. रीडर प्लस विशेष सॉफ्टवेयर है। एक पुस्तकालय आई.डी. कार्ड, एक बारकोड कार्ड, या अपने व्यक्तिगत आई.डी. नंबर (पिन) के साथ संरक्षक की पहचान करने के बाद संरक्षक अगले कार्रवाई (एक या कई पुस्तकों की जांच से बाहर) का चयन करने के लिए कहा जाता है। चेक-आउट चुनने के बाद संरक्षक आर.एफ.आई.डी. रीडर पर स्क्रीन के सामने पुस्तक (ओं) डालता है और प्रदर्शन पुस्तक शीर्षक और उसकी आई.डी. नंबर (अन्य वैकल्पिक जानकारी दिखाया जा सकता है यदि वांछित) जो बाहर की जाँच की गई है दिखाएगा।

5. **शेल्फ मैनेजमेंट:** यह समाधान अलमारियों पर वस्तुओं का पता लगाने और पहचान करने के लिए पुस्तकालयाध्यक्षों के लिए एक आसान काम करता है। इसमें मूल रूप से एक पोर्टेबल स्कैनर और एक बेस स्टेशन शामिल है।

समाधान तीन मुख्य आवश्यकताओं को कवर करने के लिए डिज़ाइन किया गया है:

(i) व्यक्तिगत पुस्तकों के लिए खोज का अनुरोध किया
(ii) पूरे पुस्तकालय स्टॉक की सूची जांच
(iii) उन पुस्तकों की खोज करें जो मिस-हेल्ड हैं

6. **चोरी का पता लगाना:** आर.एफ.आई.डी. एएस गेट्स पुस्तकालय वस्तुओं में एम्बेडेड एक ही आर.एफ.आई.डी. टैग का उपयोग कर पुस्तकालय आर.एफ.आई.डी. प्रबंधन प्रणाली के विरोधी चोरी हिस्सा है। प्रत्येक लेन लगभग 1 मीटर की वस्तुओं को ट्रैक करने में सक्षम है और अलार्म सिस्टम को ट्रिगर करेगा जब एक अन-बोर्ड आइटम उनके माध्यम से गुजरता है। अलार्म ध्वनि करेगा और गेट पर रोशनी चमक जाएगी क्योंकि संरक्षक गैर-उधारित पुस्तकालय सामग्री के साथ गुजरता है।

पुस्तकालय में आर.एफ.आई.डी. के फायदे

बारकोड तकनीक की लागत कम होने के कारण दुनिया भर के अधिकांश पुस्तकालय इसका इस्तेमाल सर्कुलेशन मैनेजमेंट के लिए कर रहे हैं। हालांकि, बारकोड तकनीक से संबंधित मुख्य बाधाएं यह हैं कि इसके लिए हमेशा लाइन-ऑफ-साइट की आवश्यकता होती है, पुस्तकालय संग्रह की सुरक्षा प्रदान नहीं करता है, संग्रह प्रबंधन के लिए कोई लाभ प्रदान नहीं करता है और उपयोगकर्ताओं की बढ़ती मांगों को पूरा करने के लिए पुस्तकालयों के लिए बहुत मुश्किल हो रहा है। इसलिए एक बेहतर तकनीक की आवश्यकता महसूस की गई जो पुस्तकालय संग्रह के संचलन प्रबंधन, सूची और सुरक्षा में सुधार कर सके। पुस्तकालयों में आर.एफ.आई.डी. के कुछ फायदों में एक समय में कई किताबें जारी करना शामिल है, (सरल स्व-चार्जिंग/डिस्चार्जिंग, परिसंचरण डेस्क / काउंटर पर कतार में कमी, सर्कुलेशन के ज्यादा घंटे, दस्तावेज़ जारी / वापसी करते समय पुस्तकालय कर्मचारियों के समय की बचत, पुस्तकालय कर्मचारियों को अन्य उपयोगकर्ताओं की केंद्रित सेवा प्रदान करने की अनुमति दें, परिसंचरण डेस्क पर कर्मचारियों की कमी, पुस्तकालय दस्तावेजों का बढ़ता मुद्दा/वापसी (पुस्तकालय संग्रह की सुरक्षा, आदि।)

आर.एफ.आई.डी. में उच्च स्तर की सुरक्षा होती है (डेटा एन्क्रिप्ट किया जा सकता है, पासवर्ड

संरक्षित या सेट किया जा सकता है)
डेटा को स्थायी रूप से हटाने के लिए 'किल' सुविधा शामिल करना।
आर.एफ.आई.डी. टैग उत्पाद रखरखाव, शिपिंग जैसे बड़े डेटा क्षमताओं को ले जाते हैं
इतिहास और समाप्ति तिथियां, जो सभी को टैग पर प्रोग्राम किया जा सकता है।
आर.एफ.आई.डी. टैग बारकोड की तुलना में अधिक दूरी से पढ़ सकते हैं।
आर.एफ.आई.डी. टैग को स्कैनर के साथ दृष्टि की एक पंक्ति में तैनात करने की आवश्यकता नहीं है।
बारकोड की तुलना में आर.एफ.आई.डी. टैग को तेजी से पढ़ा जा सकता है, लगभग 40 आर.एफ. आई.डी. टैग के रूप में साथ ही पढ़ा जा सकता है।
आर.एफ.आई.डी. टैग बहुत अधिक दूरी के भीतर काम कर सकते हैं, जानकारी एक से पढ़ा जा सकता है, 300 फीट तक टैग.
आर.एफ.आई.डी. टैग पढ़ने / लिखने के उपकरण हैं।
एक बार जब ये स्थापित हो जाते हैं; इसे न्यूनतम मानव भागीदारी के साथ चलाया जा सकता है।
आर.एफ.आई.डी. टैग अधिक पुनः प्रयोज्य और बीहड़ हैं क्योंकि वे एक प्लास्टिक कवर द्वारा संरक्षित हैं।

नुकसानः

टैग टकराव तब हो सकता है जब एक ही क्षेत्र में कई टैग उसी पर प्रतिक्रिया करते हैं
आर.एफ.आई.डी. में अभी भी दो अलग-अलग चिप्स (केवल पढ़ने योग्य / लिखने योग्य) हैं, जो नहीं हो सकते हैं।
एक ही मशीन से आर.एफ.आई.डी. में एक कम्प्यूटरीकृत चिप को इकट्ठा करना और सम्मिलित करना शामिल है; जो काम करता है।
ज्यादा महंगा. धातु या तरल से गुजरते समय आर.एफ.आई.डी. पाठक जानकारी लेने के लिए संघर्ष करते हैं।
पाठक टक्कर हो सकती है जहां विभिन्न पाठकों से दो संकेत ओवरलैप होते हैं और टैग दोनों का जवाब नहीं दे पा रहा है।

आर.एफ.आई.डी. पुस्तकालयों का भविष्य

आर.एफ.आई.डी. पुस्तकालयों की आईडिया एक ठोस आकार लेती है। यह निश्चित रूप से सबसे बड़े और प्रतिष्ठित पुस्तकालयों को आर.एफ.आई.डी. पुस्तकालयों में बदल देगा। निकट भविष्य में स्थापित पुस्तकालय में अब एक बड़ी पारी की उम्मीद की जा सकती है। बड़ी संख्या में आर.एफ. आई.डी. कॉलेज / विश्वविद्यालय ने पहले से ही इस दिशा में अपने दृष्टिकोण को मजबूत किया है और उनकी पुस्तकालय संबंधी समस्याओं का सटीक समाधान प्राप्त करने की संभावना है।

एक आर.एफ.आई.डी. पुस्तकालय में पुस्तकालयाध्यक्ष और पुस्तकालय स्टाफ की भूमिका

यह तकनीक पुस्तकालयाध्यक्ष और पुस्तकालय स्टाफ के लिए एक नैतिक सुविधा का परिचय देती है। प्रौद्योगिकी विशेष रूप से स्व-चेकआउट के क्षेत्र में संरक्षक के लिए बहुत बेहतर सेवाओं के लिए

अनुमति देता है। यह पुस्तकालय कर्मचारियों के अधिक कुशल उपयोग की अनुमति देता है और पुस्तकालय कर्मियों के लिए दोहराव वाली तनाव को कम कर सकता है। प्रौद्योगिकी गर्म लिस्टिंग और ट्रैकिंग पुस्तकालय संरक्षक के खतरे का परिचय देती है। पुस्तकालयाध्यक्ष और पुस्तकालय स्टाफ ने यह सुनिश्चित करने के लिए अतिरिक्त कदम उठाए हैं ।

निष्कर्ष:

हालांकि हर नई तकनीक एक कीमत पर आती है। पुस्तकालय आर.एफ.आई.डी. के तेजी से बढ़ते अनुप्रयोग हैं जो प्रौद्योगिकी दोहराव तनाव की चोट की गति संरक्षक स्व-चेकआउट को राहत देने और संभव व्यापक सूची बनाने का वादा करती है। यह तकनीक हमारे पुस्तकालयों को बदलने का वादा करती है। इसमें हमारे व्यक्तिगत जीवन को बनाने की क्षमता है और हमारे पुस्तकालयों का काम पुस्तकालय में अधिक सुविधाजनक रहता है। पुस्तकालयों के बीच आर.एफ.आई.डी. की लोकप्रियता बढ़ रही है। पुस्तकालय में आर.एफ.आई.डी. प्रणाली अधिक उपयोगकर्ता सेवा कार्यों को करने के लिए पुस्तक उधार और आविष्कार और कर्मचारियों को गति देती है। आपूर्ति-श्रृंखला के विपरीत आर.एफ.आई.डी. पुस्तकालय आर.एफ.आई.डी. को आइटम-स्तरीय टैगिंग की आवश्यकता होती है जिससे तत्काल संरक्षक गोपनीयता के मुद्दे उठते हैं।

References:

1. http: //www. Ananthapuri.com
2. http://www.rfid-library.com
3. http://www.rfid4u.com_libraries
4. LibBest: Library Management System: http://www.rfid.library.com
5. Vasishta, Seema (2009). Roadmap for RFID Implementation in Central library, PEC University of Technology. Paper presented in the International Conference on AcademicLibraries, Delhi. Retrieved fromhttp:// eprints.rclis.org/17693/1/ical- 49_196_ 414_1_RV.pdf
6. Syed, s., 2005 use of RFID Technology in libraries: a new approach to circulation, tracking, inventorying and security of Library materials library Philosphy and practice. 8(1), 15-21.

ऑनलाइन धोखाधड़ी

डॉ. सूर्यकान्त शर्मा
असिस्टेंट प्रोफेसर, इतिहास विभाग
चमन लाल महाविद्यालय, लण्ढौरा, हरिद्वार

आधुनिक युग में जब पूरा विश्व डिजिटलाइजेशन की ओर जा रहा है तो भारत देश के लोग भी तेजी से डिजिटल हो रहें हैं। जहां एक ओर डिजिटल दुनिया इंटरनेट यूजर के लिए एक सुलभ और सुगम साधन बन गई है वहीं दूसरी ओर जिन्हें डिजिटल जानकारियां नहीं है उनके लिए ऑनलाइन धोखाधड़ी एक बड़ी चुनौती बन गई है। समय के साथ ऑनलाइन अपराधियों ने भी धोखाधड़ी के आधुनिक तरीके अपना लिए है। वर्तमान समय में प्रतिदिन समाचार पत्रों में ऑनलाइन धोखाधड़ी की घटनाओं के समाचार अवश्य ही होते हैं। देश के प्रत्येक पुलिस थानों में प्रतिदिन ऑनलाइन धोखाधड़ी के अपराध की सूचना प्रौद्योगिकी अधिनियम 2000 की धारा 66 ग व 66 घ तथा भारतीय दंड संहिता 1860 की धारा 419 तथा 420 के अंतर्गत प्रथम सूचना रिपोर्ट दर्ज होती है। पीड़ित की मेहनत की कमाई चोरी हो जाने के कारण उसकी स्थिति बहुत ही दयनीय हो जाती है। वह कभी पुलिस थाने तो कभी बैंक के चक्कर लगाता रहता है।

पुलिस थानों में ऑनलाइन धोखाधड़ी के अपराध की एफ आई आर के बारे में किए गए सर्वे से पता चलता है कि साक्ष्य न मिलने के कारण अधिकतर मामलों में फाइनल रिपोर्ट लग जाती है या फिर अभियुक्त की गिरफ्तारी के पश्चात वह जमानत पर छूट जाता है। ऐसे अपराध की विवेचना तकनीकी ना होने कारण चार्जशीट नहीं हो पाती है। ऐसा पाया गया है कि भारत में ऑनलाइन धोखाधड़ी झारखंड राज्य के जामतारा जिले में सबसे अधिक होती है। ऑनलाइन धोखाधड़ी के अपराध में अपराध न्याय सिद्धांत की पूर्ति के लिए पुलिस को सर्वप्रथम अपनी विवेचना का तकनीकी आधार बनाना होगा। ऑनलाइन अपराध की तकनीकी विवेचना के लिए अन्वेषण अधिकारी को पहचान की चोरी से संबंधित सभी अपराधों को जानना होगा।

ऑनलाइन अपराध के प्रकार -

डेटाचोरी : ऑन लाइन धोखाधड़ी में डाटा चोरी का अर्थ है किसी अन्य व्यक्ति की गोपनीय या व्यक्तिगत जानकारी को उसकी सहमति या अधिकार के बिना चोरी करना। किसी ग्राहक की ऑनलाइन बैंकिंग सेवा या उसके ई-मेल अथवा मोबाइल नंबर से जुड़ी होती है। यह अनिवार्य रूप से ग्राहको के बैंकिंग लेन-देन को प्रमाणित करने के लिए उपयोग किया जाता है। इस प्रमाणीकरण विधि के बारे में जानकारी रखने वाले धोखाधड़ी करने वाले व्यक्ति सिम कार्ड और ई मेल का उपयोग करके धोखाधड़ी करते हैं।

पहचान की चोरी - पहचान की चोरी व्यक्तिगत जानकारी का अनधिकृत संग्रह है। इंटरनेट इन दिनों धोखाधड़ी से भरा है। आपराधिक उद्देश्य के साथ इसका दुरुपयोग क्रेडिट कार्ड और बैंक खाते से ऑनलाइन धोखाधड़ी, पुनर्निर्देशित मेल, सेलफोन सिम आदि प्राप्त करने में किया जाता है। साइबर स्पेस में पहचान की चोरी का अर्थ है वित्तीय लाभ को प्राप्त करने के लिए किसी अन्य व्यक्ति के नाम और व्यक्तिगत विवरणों का उपयोग करना। वह व्यक्ति जिसकी पहचान चोरी का विषय है, उसे नुकसान उठाना पड़ता है।

OTP **चोरी से फ्रॉड :** वर्तमान समय में पहचान की चोरी के रूप में वन टाइम पासवर्ड चोरी का एक नया रूप सामने आ रहा है और लाखों की संख्या में लोग इसके शिकार बन चुके हैं। इस पद्धति का प्रयोग करके लाखों रुपए की चोरी होने लगी है। बड़ी संख्या में ऐसे मामले सामने आए हैं जिनमें अपराधियों ने बैंक के ग्राहकों को झांसा देकर ओ.टी.पी. प्राप्त किया या स्मार्टफोन हैक कर उसे एक्सेस किया।

सिमशिंग से फ्रॉड : पहचान की चोरी के रूप में सिमसिंग एक प्रकार की धोखाधड़ी है जो पीड़ित व्यक्तियों के मोबाइल फोन टेक्स्ट संदेशों का उपयोग करके फर्जी/धोखाधड़ी वाले फोन नंबर पर कॉल करने, फर्जी/धोखाधड़ी करने वाली वेबसाइट पर विजिट करने या वेब के माध्यम से दुर्भावनापूर्ण सामग्री डाउनलोड करने के लिए आग्रह किया जाता है। अपराधी यूजर से ऑनलाइन पासवर्ड से लेकर बैंक अकाउंट डिटेल या ओटीपी/सीवीवी तक कुछ भी जानकारी मांग लेता है। एक बार डाटा सूचना जानकारी मिल जाने के बाद वह कई प्रकार से यूजर की जानकारी का उपयोग कर सकता है।

विशिंग से फ्रॉड : पहचान की चोरी के रूप में विशिंग एक ऐसा प्रयास होता है जिसमें धोखा धड़ी करने के लिए अपराधी यूजर की व्यक्तिगत जानकारी जैसे कि ग्राहक आईडी, नेट बैंकिंग पासवर्ड, एटीएम पिन, कार्ड एक्सपायरी डेट, ओटीपी, सीवीवी, आदि फोन कॉल के माध्यम से लेने का प्रयास करते हैं।

फिशिंग से फ्रॉड : पहचान की चोरी के रूप में फिशिंग एक प्रकार की साइबर धोखाधड़ी है जिसमें एक वैध स्रोत से प्रतीत होने वाले भेजे गए ईमेल के माध्यम से व्यक्तिगत जानकारी जैसे कि ग्राहक आई डी, पिन नंबर, क्रेडिट/डेबिट कार्ड नंबर, कार्ड एक्सपायरी तिथि, सीवीवी नंबर आदि की चोरी करना शामिल है। ई-मेल फिशिंग हमले में धोखाधड़ी करने के लिए अपराधी संदेश के रूप में उपयोगकर्ताओं को अपने खाते के विवरण और पासवर्ड बताने के लिए धोखा देते हैं उनके द्वारा प्राप्त विवरण का बाद में धोखाधड़ी के लिए उपयोग किया जाता है।

हैकिंग से फ्रॉड : धोखाधड़ी के उद्देश्य से किसी कंप्यूटर या संचारयुक्ति द्वारा की गई हैकिंग एक ऐसा अपराध है, जिसका अर्थ है किसी व्यक्ति द्वारा कंप्यूटर, कंप्यूटर प्रणाली या कंप्यूटर नेटवर्क को क्रैक करके या सुरक्षा तंत्र को बायपास करके बैंकिंग साइटों या ग्राहकों के खातों को हैक करना।

स्पूफिंग से फ्रॉड: स्पूफिंग साइबर सुरक्षा संबंधित है। इसके अंतर्गत जब कोई व्यक्ति कोई वस्तु धन अनुग्रह प्राप्त करने के प्रयास में किसी सिस्टम तक पहुंच प्राप्त कर डाटा चोरी करता है, पैसे चुराता है या मेलवेयर फैलाता है तो यह अपराध स्पूफिंग कहलाता हैं।

कार्ड क्लोनिंग से फ्रॉडः ऑनलाइन बैंकिंग धोखाधड़ी के बढ़ते अपराध के साथ साथ कार्ड क्लोनिंग का नाम भी बहुत लिया जाने लगा है। कार्ड क्लोनिंग एक ऐसा नाम है जो प्रतिदिन के समाचार की मुख्य हैडलाइन होती है क्योंकि कार्ड क्लोनिंग की घटनाएं लगातार तेजी से बढ़ रही हैं। भारत में प्रतिदिन हजारों लोग अपनी मेहनत की कमाई, साइबर अपराधियों के हाथों गवा देते हैं। अब तो एक देश के यूजर के कार्ड को क्लोन कर दूसरे देश में ट्रांजेक्शन करने के मामले भी सामने आ रहे हैं।

निष्कर्षः

भरत इंटरनेट का तीसरा सबसे बड़ा उपयोगकर्ता है और हाल के वर्षों में ऑनलाइन अपराध कई गुना बढ़ गए हैं। ऑनलाइन सुरक्षा उपलब्ध कराने के लिए सरकार की ओर से कई कदम उठाए गए हैं। कैशलेस अर्थव्यवस्था को अपनाने की दिशा में बढ़ने के कारण भारत में ऑनलाइन सुरक्षा सुनिश्चित करना आवश्यक है। डिजिटल भारत कार्यक्रम की सफलता भी काफी हद तक ऑनलाइन सुरक्षा पर निर्भर करेगी अतः भारत को इस क्षेत्र में तेजगति से कार्य करना होगा। वहीं दूसरी ओर सोशल मीडिया ने अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के अधिकार को नया आयाम दिया है, आज प्रत्येक व्यक्ति बिना किसी डर के सोशल मीडिया के माध्यम से अपने विचार रख सकता है और उसे हजारों लोगों तक पहुंचा सकता है।

ऑनलाइन धोखाधड़ी के बढ़ते अपराध की तेज रफ्तार को देखते हुए वर्तमान समय में एक विशिष्ट विधि की आवश्यकता है। जिसे इंटरनेट पर किसी भी प्रकार के धोखाधड़ी को वर्तमान प्रावधानों द्वारा संबोधित किया जा सके। सूचना प्रौद्योगिकी अधिनियम 2000 की धारा 74 कुछ सीमा तक इस समस्या से संबंधित है लेकिन यह इतनी व्यापक नहीं है, क्योंकि इसमें बहुत सीमित उद्देश्य हैं और इसमें ई-कॉमर्स पर ध्यान केंद्रित नहीं किया गया है। अतः ऑनलाइन अपराध के लिए सरकार को कठोर कानून बनाने की आवश्यकता है। अतः सोशल मीडिया का सावधानीपूर्वक उपयोग ही हमें ऑनलाइन ठगी तथा साइबर अपराध के गंभीर खतरों से बचा सकता है। सुरक्षा ही सावधानी है।

नोट -

ऑनलाइन अपराध की कंप्लेंट के लिए आप भारत सरकार की साइबर कंप्लेंट की मुख्य वेबसाइट cybercrime.gov.in पर जा सकते हैं और तुरंत साइबर कंप्लेंट करने के लिए 1930 इस नंबर पर कॉल कर सकते हैं।

सफलता का सूत्र : गतिशीलता

आशुतोष शर्मा
असिस्टेंट प्रोफेसर, हिन्दी विभाग
चमन लाल महाविद्यालय, लण्ढौरा, हरिद्वार

यह सृष्टि अनेकानेक पदार्थों से बनी हुई है। सभी पदार्थ छोटे एवं बड़े होते हुए भी एक सामान्य विशेषता से युक्त होते हैं और यह विशेषता है गतिशीलता या चलायमान होना। प्रकृति का प्रत्येक अपादान गतिशील है चाहे वह नदी हो या पशु हो। यहां तक कि सूरज, चांद, तारे और हमारी पृथ्वी भी निरंतर गतिशील है। जब हम नदी के प्रवाहित जल को ध्यानपूर्वक देखते हैं तो प्रतीत होता है कि वह जलधारा बड़ी तीव्रता से अपने लक्ष्य की ओर गतिशील रहती है। नदी की धारा का एकमात्र उद्देश्य अपने लक्ष्य की प्राप्ति होता है। मार्ग में अनेक बाधाएं आने पर भी जलधारा अबाध्य गति से निरंतर गतिशील रहती है। यदि नदी बीच में ही बहना छोड़ दे तो क्या होगा?... नदी की जलधारा ठहर जाएगी और परिणामस्वरुप वह कुछ समय बाद वह सूखकर नष्ट हो जाएगी।

यही दर्शन मानव जीवन के लिए भी है। यदि सफलता की कहानी लिखने की आकांक्षा है तो उसके लिए प्रथम और अनिवार्य शर्त यह है कि हमें सदैव अपने लक्ष्य की ओर गतिशील रहना होगा और यह बात विशेष रूप से युवाओं और छात्रों पर लागू होती है क्योंकि यह देश और समाज के जीवन मूल्यों का प्रतीक हैं। बलवान राष्ट्र वही होता है जिसकी तरुणाई सबल होती है जिसमें कष्टों को सहन करने की क्षमता होती है जिसमें भविष्य के सपने संजोने और उन्हें पूरा करने के लिए कुछ भी कर गुजरने का जज्बा होता है। छात्र गहन ऊर्जा और उच्च महत्वाकांक्षाओं से भरे हुए होते हैं। उनकी आंखों में भविष्य के इंद्रधनुषी स्वप्न होते हैं। समाज को बेहतर बनाने और राष्ट्र के निर्माण में सर्वाधिक योगदान युवाओं का ही होता है इसलिए तनिक भी विश्राम रूपी शैय्या पर शयन किया तो असफलता रुपी नींद से दो-चार होना पड़ेगा। अपने लक्ष्य को प्राप्त करना सरल नहीं होता। यदि लक्ष्य प्राप्ति इतनी सरल होती तो संभवत: आज संसार का प्रत्येक प्राणी सफल होता। इन तमाम रूकावटों के बाद भी, असफलताओं के उपरांत भी प्रयास का दामन नहीं छोड़ना चाहिए। निरंतर कर्म करते हुए गतिशील रहना ही सफलता प्राप्ति का एकमात्र सूत्र है।

असफलता एक चुनौती है,
इसे स्वीकार करो, क्या कमी रह गई,
देखो और सुधार करो।
जब तक न सफल हो, नींद चैन को त्यागो तुम,
संघर्षों का मैदान छोड़कर, मत भागो तुम।
कुछ किए बिना ही जय जयकार नहीं होगी।

समय हमेशा गतिशील है शायद यही कारण है कि संसार का प्रत्येक प्राणी समय का दास है। समय की गाड़ी सदैव गतिशील है। यह कभी रुकती नहीं है। अखिल ब्रह्मांड में सभी ग्रह, नक्षत्र, तारे-सितारे सभी गतिशील हैं। चांद, सूर्य, तारे अपने कर्म में, गति चक्र में कभी कोई बाधा नहीं मानते। उनके कदम किसी भी प्रकार के व्यवधान से रुका नहीं करते। अपने अवसान में और फिर उदय में ही उनके अस्तित्व का बोध और सार्थकता है। ठीक उसी प्रकार छात्र का परम कर्तव्य है कि सारी बाधाओं से पार पाकर अपने छात्र कर्म से न्याय करें और छात्र कर्म है। अनवरत गति से विद्या अध्ययन करते हुए गतिशील रहना और राष्ट्र और समाज के निर्माण और उत्थान में अपना सहयोग प्रदान करना। व्यावहारिक जीवन का अनुभव यही बताता और सिखाता है। जब यह एक सर्वमान्य और सुस्पष्ट तथ्य है तो हम अकर्मण्यता की स्थिति क्यों धारण करें। तब क्यों न हम कमर कसकर समय की गति से कदमताल करते हुए कर्म के प्रति गतिशील हो जाएं। सभी तरह की सुख समृद्धि स्वत: ही खिंची चली आएंगी। याद रहे सफलताएं हाथों में मालाएं लिए गतिशील एवं कर्मठ व्यक्तियों की हमेशा बाट जोहा करती हैं। जड़ता मृत्यु का परिचायक है तो वहीं गतिशीलता सजीवता की द्योतक है। तालाब का जल सड़ जाता है क्योंकि वह एक जगह रुका होता है और नदी का जल निरंतर गतिशील होने के कारण ताजगी और स्वच्छता से परिपूर्ण होता है। हमारे शरीर में प्रवाहित रक्त हमेशा गतिशील रहता है। यह भी हमें सदैव चलते रहने और प्रयास करते रहने का संदेश देता है। स्वामी विवेकानंद ने भी कठोपनिषद के मंत्र

"उत्तिष्ठत जाग्रत प्राप्य वरान्निबोधत।" से प्रेरित हो युवाओं का आह्वान करते हुए उन्हें निरंतर कर्मशील रहने का उपदेश दिया था।

पंचायती राज व्यवस्था में महिलाओं की स्थिति

नवीन कुमार
असिस्टेंट प्रोफेसर, समाजशास्त्र विभाग
चमन लाल महाविद्यालय, लंढौरा, हरिद्वार

सूचना समाज में महिलाओं की स्थिति एवं भूमिका में हुए क्रांतिकारी परिवर्तन को देखकर कुछ व्यक्ति हताश हुए हैं तो कुछ व्यक्ति उनकी स्थिति में बदलाव को देखकर प्रसन्न भी हुए हैं। प्रश्न यह है कि क्या स्त्रियों को राजनीतिक गतिविधियों एवं प्रशासनिक सेवा में भाग लेना चाहिए या नहीं अर्थात उनका राजनीतिक गतिविधि में प्रवेश वांछनीय है या नहीं इस अंतर में दो विचारधाराएं देखने को मिलती हैं। पहली विचारधारा के समर्थकों का मानना है कि नारी का कार्यक्षेत्र परिवार घर पति की सेवा बच्चों का लालन पालन करना है क्योंकि स्वस्थ परिवार ही खुशहाल समाज का आधार है। यदि महिला का इन कार्यों को असहमति जताती हो तो समाज में अनैतिकता फैलेगी दूसरी विचारधारा का मानना है कि स्त्रियों का लोक जीवन एवं राजनीतिक गतिविधियों में भाग लेना एक सकारात्मक कार्य है अर्थात उनका राजनीतिक गतिविधियों में प्रवेश वांछनीय है क्योंकि यदि उनको सौंपे गए कार्यों का मूल्यांकन करें तो उन्होंने अपनी भूमिका एवं परिस्थिति के आधार पर सफल प्रदर्शन किया। वह कई क्षेत्रों में पुरुषों से आगे दिखाई देती हैं यह विचारधारा यह नहीं मानती कि उनका राजनैतिक गतिविधियों में भाग लेना उनके परिवार को विघटित कर देगा। आज के सूचना समाज में राजनैतिक, लोकतांत्रिक, प्रजातांत्रिक विचारों की मांग है कि स्त्री को पुरुष के समान अधिकार प्राप्त हों। वास्तव में महिलाओं की भूमिका एवं परिस्थिति को देखते हुए उनका लोक जीवन एवं राजनैतिक गतिविधियों में प्रवेश करना ही अपने आप को सशक्त बनाना उनका मौलिक अधिकार भी है। भारतीय समाज को जब हम देखते हैं प्राचीन समाज से लेकर उत्तर आधुनिक समाज तक विषमता ही दिखाई पड़ती है। भारतीय ग्रामीण समाज में महिलाएं आज भी उपेक्षित और अधीनता का जीवन निर्वाह कर रही हैं। यह बात अलग है कि आज अधिकांश महिलाएं आर्थिक प्रशासनिक और राजनीतिक क्रियाकलापों में प्रतिभाग कर रही हैं, पर वास्तव में सामाजिक दृष्टि से न तो वे इन से लाभान्वित हो रही हैं और ना ही अपनी आकांक्षाओं को पूरा करने में सक्षम हो पा रही हैं। भारतीय समाज में महिलाओं को आर्थिक सामाजिक एवं राजनैतिक रूप से मजबूत बनाने के लिए भारतीय संविधान की प्रस्तावना मौलिक अधिकार एवं नीति निर्देशक तत्व में अनेक नियमों का उल्लेख किया गया है। वहीं 73वें व 74वें वे संविधान संशोधनों के माध्यम से स्थानीय स्वशासन में भी प्रतिभाग करने हेतु महिलाओं की 33% सीटें आरक्षित की गई है देखा यह जाता है कि निर्वाचित महिला ग्राम समाज में प्रत्यक्ष रूप से अपने आप को इतनी सक्षम नहीं कर पाती कि वह अपने व्यक्तित्व के आधार पर जीत हासिल कर सकें। जो महिला प्रतिनिधि निर्वाचित होती है उसमें उसके परिवार जनों का महत्वपूर्ण योगदान होता है जो एक विडंबना की बात है। अनेक प्रयासों के बाद भी महिला स्थानीय स्वशासन में अपने आपको एक अच्छे ग्राम पंचायत प्रतिनिधि के रूप में प्रस्तुत नहीं कर पाती।

भारतीय ग्रामीण समाज में यदि महिलाओं की परिस्थिति को देखा जाए तो उनके साथ लिंग के आधार पर भेदभाव किया जाता है। समाज में उन्हें पुरुषों के समकक्ष नहीं माना जाता है जो स्वतंत्र एवं विकसित भारत के लिए अभिशाप है। यह बात अलग है कि वर्तमान में महिलाओं ने पढ़ लिखकर समाज में अपनी स्थिति को ऊंचा उठाया है। लेकिन यह एक असफलता ही है क्योंकि उनका मूल्य इतना ही है कि उन्हें बार-बार समाज में अपमानित होना पड़ता है। धार्मिक दृष्टि से देखा जाए तो समाज में नारी को अनेक उच्च पद प्राप्त हैं। यहां तक कि स्त्रियों को लक्ष्मी, सरस्वती, दुर्गा आदि का प्रतिनिधि माना जाता है। ईश्वर ने मानव के दो रूप बनाए स्त्री और पुरुष। भगवान ने स्त्री को इस तरह से बनाया है कि वह संसार के भविष्य को स्वयं ही निर्मात्री हो गई। दूसरे शब्दों में संसार को जन्म देने वाली ही स्त्री है। यह कह सकते हैं कि संसार की पूर्ण तरक्की में नारी की महत्वपूर्ण भूमिका है जिस कारण उन्हें हर क्षेत्र में बढ़ावा देना संपूर्ण समाज का उत्तरदायित्व है ना कि उसे अपमानित और उपेक्षित करने का। आज के सूचना समाज में महिलाएं अनेक सम्मानित पदों पर इंजीनियर पायलट खिलाड़ी, डॉक्टर, मंत्री, प्रोफेसर, जज जैसे अनेक पदों को संभाल ही नहीं रहा बल्कि अपनी सफल भूमिका का निर्वाह भी कर रही हैं। वे देश की आंतरिक एवं बाह्य रूप से विश्व में अपनी सफलता का प्रदर्शन कर रही हैं। विदेश मंत्री सुषमा स्वराज, वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण और भारत की प्रथम महिला प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी एवं अनेक महिलाएं देश का गौरव बनी है।

अधिकांश देशों में महिलाओं की स्थिति को लेकर सिद्धांत और व्यवहार के बीच बड़ा अंतर देखने को मिलता है। इस संदर्भ में भारत अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। एक ओर सभी धर्म तथा सामाजिक कारण स्त्रियों को सम्मान एवं प्रतिष्ठा का प्रतीक मानते हैं। दूसरी ओर समाज में स्त्रियों को उनके सामाजिक आर्थिक एवं राजनैतिक अधिकारों से वंचित कर दिया है। भारतीय धार्मिक ग्रंथों में जहां स्त्रियों को संपत्ति ज्ञान एवं शक्ति का प्रतीक मानकर उन्हें सम्मान दिया। वहीं स्मृति कालीन धर्म शास्त्रों में उसे दासी, वस्तु आदि के नाम से संबोधित किया गया है। उनकी तुलना दासी और वस्तु के रूप में की गई है। 1919 तक स्त्रियों को वोट देने का अधिकार नहीं था। 1935 में उनके पति की स्थितियों संपत्ति के आधार पर उनके मताधिकार एवं शिक्षा के मानदंड तय किए गए। महिलाओं को किसी भी राजनीतिक गतिविधि में भाग लेने की अनुमति नहीं थी। अत: स्त्रियों की सामाजिक स्थिति दयनीय थी। 1937 में महिलाओं के लिए 41 पद आरक्षित थे। आश्चर्य की बात है कि 10 महिलाओं ने ही चुनाव में प्रतिभाग किया। स्त्री को पुरुष के बराबरी का अधिकार सन 1950 में दिए गया। पार्लियामेंट तथा विधान मंडलों में स्त्री प्रतिनिधियों की संख्या, उनकी सहभागिता राज्यपाल यहां तक कि मंत्रियों और मुख्यमंत्रियों तक उनकी भूमिका स्पष्ट है। 16 मई 2014 को 16वीं लोकसभा के आम चुनाव के परिणाम सामने आए जिनमें 62 स्थानों पर महिलाओं ने जीत हासिल की मोदी सरकार में 23 सदस्यों की कैबिनेट में 6 महिलाओं को केंद्रीय मंत्रिमंडल में स्थान प्राप्त है। 67 वर्षों में स्त्रियों की राजनैतिक चेतना में बढ़ोतरी हुई एवं भूमिका स्थिति में सुधार हुआ है।

मोटे अनाज : एक बेहतर स्वास्थ्य की ओर

डॉ. नीतू गुप्ता
असिस्टेंट प्रोफेसर, गृहविज्ञान विभाग
चमन लाल महाविद्यालय, लंढौरा, हरिद्वार

वर्तमान समय में तेजी से बढ़ रही जीवन शैली से जुड़ी बिमारियों की भरमार है। हमारे जीने का ढंग हमारे स्वास्थ्य को प्रभावित करता है और इसमें सबसे मुख्य भूमिका हमारे भोजन की होती है। हम किस प्रकार का भोजन ग्रहण करते हैं, यही हमारे अच्छे स्वास्थ्य को बताता है। अत: इस समय तेजी से बढ़ रही जीवन शैली से जुड़ी बिमारियों की रोक थाम में मोटे अनाजों की अहम भूमिका होती है, यह मोटे अनाज जिन्हें मिलेट्स के नाम से जाना जाता है। पोषक तत्वों से भरपूर होते हैं और साथ ही स्वास्थ्य वर्धक भी होते हैं और हमें विभिन्न प्रकार की बिमारियों से बचाने में मुख्य भूमिका निभाते हैं। आज वर्तमान समय में हर व्यक्ति आधुनिकता की दौड़ में शामिल हो रहा है और इसकी वजह से ना सिर्फ हमारी जीवन शैली बदली है बल्कि हमारा खान-पान भी पूरी तरह से दूसरा रूप ले रहा है। अगर हम आज से पहले देखें तो हमारे दादी, दादा, परदादा, हमारे मां-बाप उनकी खाने की आदतें आज के समय से बिल्कुल अलग थी। मोटे अनाज आहार का मुख्य हिस्सा माना जाते थे। हरित क्रांति के दौरान गेहूं और धान की खेती को बहुत ज्यादा महत्व दिया जाने लगा और जिसका परिणाम यह हुआ कि हमारे भोजन की थाली में गेहूं और चावल मुख्य भोजन के रूप में जाना जाने लगा और जो मोटे अनाज थे उन्हें थाली से बाहर कर दिया गया। जिन अनाजों को हमारी पीढ़ियां खाती आ रही थी हमने उन्हें अपने से दूर कर दिया। मोटे अनाज पोषक तत्वों का भंडार है इनमें सभी पोषक तत्व जैसे विटामिन बी 6, जस्ता, खनिज लवण आदि बहुलमात्रा में पाए जाते हैं। स्वास्थ्य की दृष्टि से लाभकारी रेशे भी इनमें भरपूर मात्रा में पाए जाते हैं।

मोटे अनाजों को सुपर फूड के नाम से भी जाना जाता है यह अनाज रक्तचाप को कम करने, कोलेस्ट्रॉल को कम करने, वजन कम करने, कैंसर जैसे रोगों को कम करने के साथ-साथ कब्ज जैसी बीमारियों से भी आराम दिलाते हैं।

मुख्य अनाज

1. बाजरा, ज्वार, रागी व मक्का

ये लौह लवण से भरपूर होते हैं और खून की कमी को दूर करने में सहायक सिद्ध होते हैं। ज्वार हड्डियों के लिए अच्छी मात्रा में कैल्शियम, खून के लिए फॉलिक एसिड व अन्य उत्तम पोषक तत्व प्रदान करता है। इसी प्रकार से रागी एक मात्र ऐसा अनाज है जिससे कैल्शियम भरपूर मिलता है और जो लोग दूध नहीं पी पाते या उसका सेवन नहीं करते हैं उनमें कैल्शियम की कमी नहीं होती।

मक्का में विटामिन ए भरपूर मात्रा में पाया जाता है और यह विटामिन त्वचा और आंखों के अच्छे स्वास्थ्य के लिए लाभकारी होता है तथा शरीर में बीमारियों से लड़ने की ताकत देता है।

2. जौ

इसमें बहुत से सूक्ष्म पोषक तत्व पाए जाते हैं जैसे मैग्नीशियम, सेलेनियम आदि। ये तत्व त्वचा को स्वस्थ रखने में तथा ब्लडशुगर को नियंत्रित करने में मददगार साबित होते हैं। जौ में क्रोमियम, फॉस्फोरस, मैग्नीशियम, विटामिन बी 1 पाया जाता है।

3. राई

राई दुनिया का सबसे महत्वपूर्ण अनाजों में से एक अनाज है। यह गेहूं की तरह ही होता है लेकिन इसमें गेहूं की अपेक्षा ग्लाइसेमिकइंडेक्स कम होता है इसमें विटामिन और खनिज बहुत मात्रा में पाए जाते हैं। इससे कार्बोहाइड्रेट और फाइबर के अलावा प्रोटीन, पोटैशियम और विटामिन बी प्राप्त होते हैं। राई के आटे से ब्रेड, चॉकलेट, कुकीज आदि बनाए जाते हैं। इसका उपयोग करने से कब्ज में आराम मिलता है और कैंसर का जोखिम भी कम रहता है। यह सेहत के लिए भी बहुत लाभकारी होता है।

4. ब्राउनराइस

सफेद चावल की तुलना में भूरे चावल अधिक फायदेमंद होते हैं। इनमें फाइबर और प्रोटीन बहुत अच्छी मात्रा में पाया जाता है इसे खाने से शरीर को पर्याप्त मात्रा में कैलोरी मिलती है और व्यक्ति फुर्तीला बना रहता है। ये खनिज लवण के भी अच्छे स्रोत माने जाते हैं। इनका सेवन करने से वजन कम होता है, कोलेस्ट्रॉल को कम करने में भी यह मदद करते हैं साथ ही साथ हड्डियों को मजबूत बनाने व एनर्जी प्रदान करने में भी यह लाभकारी होते हैं।

5. ओट्स

अगर दिन की शुरुआत हेल्दी नाश्ते से करनी हो तो ओट्स से बढ़िया नाश्ता कोई नहीं हो सकता। यह दिन भर शरीर को एनर्जी प्रदान करता है इसमें कई तरह के पोषक तत्व पाए जाते हैं तथा यह ग्लूटेन फ्री होता है। इसमें प्रोटीन, कैल्शियम, आयरन, विटामिन बी 1 और नियासिन की अच्छी मात्रा पाई जाती है। यह कोलेस्ट्रॉल के स्तर को कम करने में मदद करता है। पानी में आसानी से घुल जाता है। इसे खाने से जल्दी भूख नहीं लगती तथा कैंसर, डायबिटीज और ब्लड प्रेशर आदि बीमारियों को दूर करने में भी मदद करता है।

मोटे अनाजों से होने वाले स्वास्थ्य लाभ को देखते हुए इस बात की आवश्यकता है कि लोगों को इनके प्रति जागरूक किया जाए। जिससे लोग इन्हें अपने भोजन में शामिल करें। यदि बाजार में मोटे अनाजों की मांग बढ़ेगी तो इससे किसानों को भी लाभ की प्राप्ति होगी। किसानों को मोटे अनाजों का अच्छा मूल्य मिलेगा तो इनकी खेती से फायदा होने के साथ-साथ जनमानस का स्वास्थ्य लाभ भी हो सकेगा।

पर्यावरण और माँ : सिक्के के दो पहलू

डॉ. पुनीता शर्मा
असिस्टेंट प्रोफेसर, पुस्तकालय विज्ञान विभाग
चमन लाल महाविद्यालय, लंढौरा, हरिद्वार

माँ और प्रकृति दोनों एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। जिस प्रकार माँ अपने बच्चे का लालन-पालन करती है और उसकी हर ज़रूरत को पूरा करने की कोशिश करती है और अपने बच्चे के ऊपर आए संकट से उसकी रक्षा करती है, ठीक उसी प्रकार प्रकृति भी अन्न से लेकर हमारी हर ज़रूरत को पूरा करने में सहयोग करती है और हमें संरक्षण प्रदान करती है। माँ शब्द एक ऐसा शब्द है जिसमें समस्त संसार का बोध होता है। जिसके उच्चारण मात्र से ही हर दु:ख दर्द का अंत हो जाता है। माँ की ममता और उसके आँचल की महिमा को शब्दों में बयान नहीं किया जा सकता है, उसे सिर्फ महसूस किया जा सकता है। रामायण में भगवान श्री राम जी ने कहा है कि, 'जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी।' अर्थात् जननी और जन्मभूमि स्वर्ग से भी बढ़कर हैं। कहा जाए तो जननी और जन्मभूमि के बिना स्वर्ग भी बेकार है क्योंकि माँ की ममता की छाया ही स्वर्ग का एहसास कराती है। जिस घर में माँ का सम्मान नहीं किया जाता है वो घर नरक से भी बदतर होता है। भगवान श्री राम माँ को स्वर्ग से भी बढ़कर मानते थे क्योंकि संसार में माँ नहीं होगी तो संतान भी नहीं होगी और संसार भी आगे नहीं बढ़ पाएगा। संसार में माँ के समान कोई सहारा नहीं है। संसार में माँ के समान कोई रक्षक नहीं है और माँ के समान कोई प्रिय चीज़ नहीं है। एक माँ अपने बच्चों के लिए छाया, सहारा, रक्षक का काम करती है। माँ के रहते कोई भी बुरी शक्ति उसकी संतान को छू नहीं सकती। इसलिए एक माँ ही अपनी संतान की सबसे बड़ी रक्षक है। दुनिया में अगर कहीं स्वर्ग मिलता है तो माँ के चरणों में मिलता है। जिस घर में माँ का अनादर किया जाता है वहाँ कभी देवता वास नहीं करते। एक माँ ही होती है जो बच्चे की हर गलती को माफ कर गले से लगा लेती है। यदि माँ नहीं होती तो सृष्टि की रचना नहीं हो सकती थी। स्वयं ब्रह्मा, विष्णु और महेश तक सृष्टि की रचना करने में असमर्थ बैठे थे। जब ब्रह्मा जी ने नारी की रचना की तभी से सृष्टि की शुरुआत हुई।

जिस प्रकार प्रकृति समय-समय पर वातावरण के अनुकूल बदल रही है जिससे हम हर परिस्थिति में जीवन को जीने की कला सीख सकें। वैसे ही माँ भी हमें कभी ममता की छाँव देती है तो कभी सिखाती है जिससे हम हर परिस्थिति का सामना कर सकें। माँ और प्रकृति हमेशा हमें देती ही रहती है। क्या माँ और प्रकृति के प्रति हमारा कोई कर्त्तव्य नहीं है। अब वक्त आ गया है अपने में बदलाव लाने का। हमें ठीक उसी प्रकार से ख्याल रखना होगा जैसे माँ हमारी परवाह करती है हमें अपनी माँ और प्रकृति दोनों की देखभाल की ज़रूरत है। हमें प्राकृतिक संसाधनों का दुरुपयोग नहीं करना है। हमें अपनी आवश्यकताओं का दायरा सीमित रखना होगा, नहीं तो वह दिन दूर नहीं जब प्राकृतिक सम्पदाएं समाप्त हो जाएंगी।

मनुष्य की नियति पृथ्वी से जुड़ी है। स्वच्छ पर्यावरण के बिना पृथ्वी और मनुष्य की कल्पना की ही नहीं जा सकती। हमारे चारों ओर के पेड़-पौधे, पशु-पक्षी, जीव-जन्तु, माटी, वायु, जल और लोग, हम सब मिलकर पर्यावरण बनाते हैं और उसको बिगाड़ते हैं। विचार कर देखें तो मनुष्य ही इसके केन्द्र में दिखाई देता है। वही आज पेड़-पौधों का सफाया कर रहा है। धरती का चेहरा बदल रहा है, पशुओं को मार रहा है, जल और वायु को दूषित कर रहा है। इसके जो परिणाम हो रहे हैं, क्या आपने कभी सोचा है इसका ज़िम्मेदार कौन है? मनुष्य ही न? मनुष्य निर्माणात्मक क्रिया-कलाप अब धरती पर ही नहीं समुद्र के अन्दर और आकाश के ऊपर भी हावी होते जा रहे हैं। इसमें यह ध्यान देना ज़रूरी है कि हम कहीं अपने अहंकार में पृथ्वी के प्रति अपने तब के सम्बन्धों को न भूल जाएं जब हम यह कहते थे कि, 'माता भूमि: पुत्रोऽहं पृथ्व्या:'।

किसी भी जीवन का जन्म लेना स्वयं में एक चमत्कारिक घटना है। प्रकृति उस जीव के लिए पहले से ही वे समस्त साधन उपलब्ध करा देती है जिसकी उसे वर्तमान और भविष्य में आवश्यकता होती है और होगी। जैविक तथा अजैविक पदार्थ परस्पर अनकहे ही उसके पूरक बनकर सहायक की भूमिका निभाते हैं। इसके अतिरिक्त मानव चूँकि एक सामाजिक तथा बुद्धि सम्पन्न प्राणी है, अत: वह स्वयं की आवश्यकता की पूर्ति प्रकृति के सहयोग से करता है, साथ ही पारस्परिक सहायता से भी अपने उद्देश्यों को प्राप्त करता है। कहने का आशय यह है कि प्रत्येक प्राणी अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति विभिन्न माध्यमों से करता है। यहाँ प्रकृति अपनी सम्पूर्ण शक्तियों के साथ उसकी सहायिका बनकर आती रहती है जिससे अनादि काल से चली आ रही जीवन-शृंखला निरंतर गतिशील बनी रहती है।

समय के साथ ही मनुष्य की समझ विकसित हुई। बुद्धि के विकसित होने के साथ उसने अवलोकन पद्धति से देखा व समझा कि उसका शरीर एक ठोस आधार पर स्थित है। जिस पर जीवन को धारण करने के लिए सभी तत्व पर्याप्त मात्रा में उपस्थित हैं। इस ठोस आधार भूमि में धारण क्षमता समस्त जैविक आवश्यकताओं को पूरा करने की क्षमता और आकार में विशाल है। इसी विचार को ध्यान में रखते हुए इसे पृथ्वी, धारयति, धरणी, वसुंधरा (पृथनात्र, पृथ्वी, धारयती, धारणी, वसुंधरायती इति वसुंधरा-विभिन्न सम्पत्तियों सोना, कोयला, वन सम्पदा) आदि नामों से अभिहीत किया गया। वस्तुत: इस धरती पर यदि स्थूल भूमि है तो उस भूमि पर उतुंग विशालकाय पर्वत, जीवों को जीवन देने वाली वायु और गंभीर जल वाले अनेक प्रकार के जल स्रोत भी हैं। इन पर्यावरणीय मूल आधारों के सहारे अनेक प्रकार के जीव जीवन धारण कर रहे हैं। अपनी आवश्यकताओं को संतोषजनक रूप से पूरा करते हुए इस पृथ्वी पर जीव जल के बिना शरीर तक को सुचारू रूप से संचालित नहीं कर सकता। यहाँ तक कि जल के अभाव में प्राण संकट में पड़ जाते हैं, शरीर सूख जाता है और मस्तिष्क काम करना बंद कर देता है। जल का महत्व प्रत्येक जीव वर्ग के लिए मात्रा, अनुपात और आवश्यकता में भिन्न होता है। जीव को आधार के रूप में पृथ्वी प्राप्त है जो अन्य (पोषण) से लेकर संरक्षण तक सभी कुछ देती है। जीव की अन्य आवश्यकता है जीवन धारण करने के लिए हवा। हवा न चलने पर उसकी श्वास प्रक्रिया बाधित होती है और जब हवा का प्रवाह प्राप्त होता है तो उसे श्वास के साथ ही जीवन भी उपहार में प्राप्त हो जाता है। अत: जैविक जीवन की प्राथमिक आवश्यकता वायु का जीवों और अजीवों पर पड़ने वाला प्रभाव व दुष्प्रभाव प्राप्ति और

अभाव का आकलन पर्यावरण के अवयव वायु मण्डल के अन्तर्गत किया जाता है। समस्त पर्यावरण के अन्तर्गत स्थल, जल, वायु इन तीन मण्डलों को किसी भी जीव के जीवन के प्रमुख आधार के रूप में स्वीकार किया गया है। जीवन धारण करने के लिए जितनी महत्वपूर्ण प्राण वायु है उससे किसी भी प्रकार जल का महत्व कम नहीं है। जल वैसे तो पर्यावरण का एक अजैविक तत्व है, फिर भी वह जीवन दाता के कर्तव्य का पालन करता है, तृप्ति दाता है और सर्वोपयोगी भी है।

"जीवान्स्थवरजंगमाश्च सकलान्न संजीव्य भूण्डलं भूय:पश्य तदैव कोटिगुणितं गच्छन्तमम्भेनिधिम्"

(सागर का खारा पानी मेघ के मुख में मीठा हो जाता है और पृथ्वी पर चराचर जीवों को जीवन प्रदान करते हुए करोड़ों गुणा अधिक होते हुए समुद्र में चला जाता है।)

अर्थात् सूर्य की किरणों के द्वारा वाष्पीकृत किया गया सामुद्रिक जल मेघ में जाकर अपने लवणत्व को त्यागकर मधुर हो जाता है। इसके पश्चात् समय आने पर यह पृथ्वी पर बरसकर सभी चर और अचर जीवों को जीवन-दान देते हुए विभिन्न माध्यमों के माध्यम से पुन: सागर में मिल जाता है। इस प्रकार की प्रक्रिया से जल चक्र का निर्माण होता है। जल के विभिन्न स्त्रोतों के माध्यम से यह पुन: सागर में मिल जाता है और फिर वही प्रक्रिया आरम्भ हो जाती है। प्राचीन सभ्यताओं को हम पाषाण सम्भ्यता, नदी घाटी सभ्यता आदि नामों से क्यों जानते हैं? किसी और नाम से क्यों नहीं? क्योंकि मानव समाज की प्राथमिक आवश्यकताओं (जल, जंगल, ज़मीन, अधिवास, रोटी) इत्यादि की पूर्ति इन्हीं संघटकों के द्वारा होती थी। आदिम युग में पर्यावरण में भूमि, वायु, जल तथा जैविक समुदाय शामिल हुआ करते थे और यही पर्यावरण के घटक मानव शरीर का ढाँचा भी प्रदान करते हैं। पर्यावरण एक संपोषणीय विकास का आधार है, परन्तु दुर्भाग्य है कि पर्यावरण पर सुखवादी विचारधारा की नंगी तलवार लटक रही है। बढ़ती जनसंख्या व बढ़ती आकांक्षाओं की पूर्ति के लिए पर्यावरण को बलि की वेदी का भोग बनाने में किसी प्रकार का संकोच नहीं रहा, जो प्रकृति की मर्यादा का घोर उल्लंघन है। ऐसा प्रतीत होता है मानो आधुनिक मानव ने अपनी विलासिता को पूर्ण करने के लिए प्रकृति (पर्यावरण) के विरुद्ध शंखनाद कर दिया है। वस्तुत: इस महासंग्राम में प्रकृति भी पीछे नहीं है, आए दिन बाढ़, सूखा, भू-स्खलन, महामारी इत्यादि के द्वारा वह भी मानव के इन सभी कुकृत्यों का जवाब दे रही है। परन्तु यह समस्या का समाधान नहीं है। मानव को प्रकृति के घटकों को पुन: खोजना होगा, जिससे पर्यावरण संतुलन को पुन: वापस लाकर पर्यावरण और समाज के सम्बन्ध को मधुर बनाया जा सके।

संदर्भ ग्रंथ-

संस्कृत साहित्य में पर्यावरण - डॉ. रत्ना शुक्ला, डॉ. कुसुम भूरिया दत्ता।
पर्यावरण एवं समाज - डॉ. अजय सिंह, डॉ. सुरेन्द्र सिंह
पर्यावरण शिक्षा - डॉ. सुजाता बिष्ट

भारतीय समाज में नारी की समानता का लक्ष्य

डॉ. हिमांशु कुमार
असिस्टेंट प्रोफेसर, समाज शास्त्र विभाग
चमन लाल महाविद्यालय, लंढौरा, हरिद्वार

नारी का सृष्टि के सृजन में महत्वपूर्ण स्थान है। बिना नारी के समाज तथा संसार की कल्पना भी नहीं की जा सकती। नारी हर एक रूप में पूजनीय है। कभी माँ तो कभी बेटी के रूप में वह सम्मानित होती है। कवि जयशंकर प्रसाद ने नारी के विषय में बहुत ही सुंदर पंक्तियां लिखी हैं-

नारी तुम केवल श्रद्धा हो,
विश्वास-रजत नग पगतल में।
पीयूष-स्रोत सी बहा करो,
जीवन के सुंदर समतल में।

भारतीय संस्कृति में भी नारी के विषय में कुछ इस प्रकार कहा गया है-

'यत्र नार्यस्तु पूजयन्ते, रमन्ते तत्र देवता:' अर्थात् जहां नारी की पूजा की जाती है, उसे आदर सम्मान दिया जाता है, वहां देवताओं का वास होता है। नारी नर का आधार है। बिना नारी के पुरुष के अस्तित्व की कल्पना भी नहीं की जा सकती। परन्तु एक सियाह सच यह भी है कि प्राचीन समय से ही नारी जाति के साथ भेदभावपूर्ण व्यवहार होता रहा है, जिसके कारण समाज में विषम परिस्थितियों में वह अपनी पहचान बनाने के लिए संघर्ष कर रही है। परन्तु इस पुरुष प्रधान समाज में अपनी पहचान बनाना नारी के लिए अत्यधिक कठिन हो गया है।

समाज में उन्हें पुरुषों के समान न तो अवसर मिलते हैं और न ही वह प्रोत्साहन उन्हें प्राप्त होता है। इसी कारण प्रतिभा सम्पन्न महिलाएं भी आगे नहीं बढ़ पातीं। वे केवल कहने के लिए ही सशक्त हैं। वह अपने अधिकारों का उपयोग करने के स्वतंत्र निर्णय लेने में भी असमर्थ है। यह है एक नारी की स्थिति।

स्त्रियों की समानता की समस्या केवल हमारे देश या अन्य एशियाई देशों की ही नहीं है, अपितु यह एक विश्वव्यापी समस्या है। समस्त विश्व पुरुष प्रधान समाज है। अत: स्वाभाविक ही है कि स्त्रियों की स्थिति गौण है। वे पुरुषों के व्यक्तित्व की पूरक मात्र हैं। स्त्रियों का स्वयं का समाज में न तो कोई व्यक्तित्व है और न ही अस्तित्व यही इस समाज की धारणा है।

यदि हम यूरोप की स्त्रियों की स्थिति पर विचार करें तो पाएंगे कि वहां भी स्त्रियों को पूरी तरह बराबरी का दर्जा नहीं मिला है। स्वीडन जैसे प्रगतिशील विचारों वाले देश की स्त्री भी यही महसूस करती है कि 'औरत होने का मतलब ही है गया गुजरा होना' लगभग दो दशक पूर्व यूरोप में नारी स्वतंत्रता आंदोलन शुरू हुआ था। इन बीस वर्षों में इस आंदोलन की उपयोगिता भी साबित हुई और

कुछ स्तर तक इसकी अतिवादिता की आलोचना भी हुई। किंतु यह स्पष्ट हो गया कि अभी स्त्रियों को बराबरी का दर्जा पाने के लिए एक लंबी लड़ाई लड़नी होगी।

आने वाले समय में शायद परिस्थितियां कुछ बदल जाएं। यह वास्तविकता है कि पुरुषों की अपेक्षा स्त्रियों के मार्ग में बाधाएं अधिक हैं। वास्तव में सम्पूर्ण यूरोप में ही स्त्रियों के सामने बहुत बड़ी-बड़ी समस्याएं हैं जिनसे उन्हें जूझना पड़ता है। अपनी महत्वकांक्षाओं और पारंपरिक सामाजिक दायित्वों व बंधनों के बीच संतुलन बनाना महिलाओं के लिए एक चुनौतीपूर्ण कार्य है। पश्चिमी जर्मनी जैसे विकसित देश में हाल ही में किए गए सर्वेक्षणों से यह नतीजा निकला कि अधिकतर स्त्रियों और पुरुषों का विचार है कि स्त्री को कैरियर और घर दोनों में से एक चुनना होगा। यद्यपि नारी स्वतंत्रता आंदोलन शुरू में काफी हद तक सफल रहा था। सामाजिक धारणा में काफी अंतर आ चुका है।

मोटे अनाज का अन्तरराष्ट्रीय वर्षः एक विश्लेषण

सुनील शर्मा
असिस्टेंट प्रोफेसर, कृषि विज्ञान विभाग
चमन लाल महाविद्यालय, लंढौरा, हरिद्वार

संयुक्त राष्ट्र ने वर्ष 2023 को 'मोटे अनाज का अन्तरराष्ट्रीय वर्ष' घोषित किया है। मोटे अनाज के प्रति विश्व भर में जागरूकता बढ़ाने के उद्देश्य से भारत सरकार ने संयुक्त राष्ट्र महासभा मे प्रस्ताव रखकर 2023 को अंतरराष्ट्रीय मोटे अनाज के वर्ष के रूप में घोषित करने का अनुरोध किया था। 70 देशों के समर्थन से इस प्रस्ताव को संयुक्त राष्ट्र महासभा के सभी 193 देशों ने अप्रैल 2021 में सर्वसम्मति से पारित कर दिया। कुल विश्व उत्पादन में लगभग 41% की हिस्सेदारी के साथ भारत बाजरा के उत्पादन में विश्व में अग्रणी स्थान रखता है। बाजरा भारत में बड़े पैमाने पर खरीफ की फसल है और बाजरा आजीविका उत्पन्न करने, किसानों की आय बढ़ाने और पूरे विश्व में खाद्य व पोषण सुरक्षा सुनिश्चित करने में बेहद महत्वपूर्ण फसल है। बाजरा उत्पादन में राजस्थान, उत्तर प्रदेश और हरियाणा जैसे तीन राज्यों की हिस्सेदारी 81% से अधिक है। भारत के कुल बाजरा उत्पादन में राजस्थान का कुल 50% योगदान है। राजस्थान बाजरा उत्पादन कि दृष्टि से प्रथम स्थान रखता है। राजस्थान में बाड़मेर, जैसलमेर, जालोर में बाजरे का उत्पादन सर्वाधिक होता है। मोटे अनाज की खेती करने से अनेक लाभ प्राप्त होते हैं क्योंकि इनमें सूखा सहन करने की क्षमता, फसल पकने की कम अवधि, रोग से लड़ने की क्षमता अधिक होती है। इन फसलों की एक महत्वपूर्ण विशेषता यह भी है कि उन्हें चावल तथा गेहूं की अपेक्षा बहुत कम पानी की आवश्यकता होती है। दुनिया के 130 देशों से ज्यादा देशों में मोटे अनाज को उगाया जाता है। मोटे अनाज में गेहूं और चावल की अपेक्षा अधिक प्रोटीन, आयरन, जिकं तथा फास्फोरस होते हैं। मोटे अनाजों जैसे कोदो, सांवा, मडिया, कांग आदि में प्रोटीन, वसा, फाइबर, कार्बोहाइड्रेट, ऊर्जा कैलोरी, कैल्शियम, एसिड की तुलना गेहूं और चावल जैसे अनाजों के साथ की जाए तो किसी भी प्रकार से इन्हें कम नहीं आंका जा सकता। बच्चों और महिलाओं में पोषण की कमी को दूर करने के लिए यह काफी उपयोगी होते हैं। मोटे अनाजों की फसलों जैसे ज्वार, बाजरा, रागी, कांगनी, चना आदि की पहचान कर भारत सरकार ने वर्ष 2018 को मोटे अनाज के वर्ष के रूप में मनाया था।

रागी खाने की सलाह मधुमेह के रोगियों को दी जाती है। बाजरे का इस्तेमाल औद्योगिक उत्पादों में किया जाता है। बाजरे के 100 ग्राम खाद्य हिस्से में लगभग 11.6 ग्राम प्रोटीन 67.5 ग्राम कार्बोहाइड्रेट तथा 8 मिलीग्राम लौह तत्व मौजूद होते हैं, जोकि हमारी आंखों की सुरक्षा करते हैं। आईसीएआर का हैदराबाद स्थित "भारतीय मिलेट अनुसंधान संस्थान" मोटे अनाज की उत्पादकता बढ़ाने की दिशा में भारत सरकार की ओर से अनुसंधान और विकास कार्य चला रहा है। अधिक

उपज देने वाली किस्म विकसित करने के साथ ही यह संस्थान खेती के तौर तरीके सुधारने पर भी ध्यान दे रहा है। "वोकल फोर लोकल" यानी स्थानीय उत्पादों के इस्तेमाल पर जोर देने से मोटे अनाज की खेती में लगे लाखों सीमांत किसानों का भाग्य सुधारने में मदद मिलेगी।

योग का स्वरूप

डॉ. अंकित कुमार
सहायक आचार्य, योग विज्ञान विभाग
चमन लाल महाविद्यालय, लंढौरा, हरिद्वार

भारतीय संस्कृति का कोष अनेकानेक रत्नों से भरा पड़ा है। उनमें से एक योग है। योग एक प्राचीन अनुशासन है। यह प्राचीन भारत की संपत्ति रही है। यह ऋषि-मुनियों द्वारा संग्रहित सबसे बहुमूल्य खजाना है। योग शब्द संस्कृत के 'युज' धातु से मिलकर बना है जिसका अर्थ है जोड़ना। इस एकीकरण का अर्थ जीवात्मा और परमात्मा के एकीकरण से लिया जाता है। याज्ञवल्क्य स्मृति में कहा गया है कि जीवात्मा व परमात्मा का मिलन योग है और महर्षि व्यास ने (योगसमाधि:) योग को समाधि कहा है। यह हमारे नैतिक, सामाजिक तथा आध्यात्मिक पक्षों में संतुलन लाकर हमें जीवन जीने की कला सिखाता है। योग साधना के पश्चात साधक अपने आप को बहुत हल्का महसूस करता है। उसका शरीर निरोगी हो जाता है। किसी भी प्रकार की व्याधि उसको परेशान नहीं करती और उसकी चंचलता नष्ट हो जाती है। यह मानव शरीर को स्वस्थ और निरोगी बनाता है। उपनिषदों में कहा गया है कि योग की सिद्धि हो जाने पर व्यक्ति को किसी भी प्रकार का रोग नहीं सताता व बुढ़ापा और मृत्यु उसको नहीं आते। योग के अभ्यास से साधक का शरीर पूर्ण आरोग्यता को प्राप्त कर लेता है उसको किसी भी तरह की व्याधि नहीं होती सभी इंद्रियां सुचारू रूप से कार्य करती है। उसका मन शुद्ध होता है, बुद्धि विकसित होती है, आत्मा प्रसन्न चित्त रहती है, योगी जितेंद्रिय हो जाता है और उसकी सभी इंद्रियां उसके वश में होती हैं। योग सिद्धि हो जाने पर साधक की सभी नाड़ियां स्वच्छ निर्मल हो जाती है। भगवान श्री कृष्ण गीता में कहते हैं योगी तपस्वियों से श्रेष्ठ है इसलिए हे अर्जुन! तू योगी बन। योग विद्या ही एक ऐसा ज्ञान है जिसे मानव अपने जीवन में उतार कर अनेकानेक उपलब्धियों को प्राप्त कर सकता है। योग के द्वारा हमारे जीवन का सर्वांगीण विकास होता है। योग का मुख्य उद्देश्य चित्त की वृत्तियों का निरोध कर आत्मिक, मानसिक तथा बौद्धिक शक्तियों का विकास करना है। श्री कृष्ण भगवान कहते हैं कि मैंने इस अविनाशी योग को सूर्य से कहा, सूर्य ने अपने पुत्र मनु से कहा और मनु ने अपने पुत्र राजा इक्ष्वाकु से कहा। इसके बाद इस परंपरा से ही यह योग ऋषि मुनियों के द्वारा पूरे जगत में फैला। योग की सिद्धि होने से किसी प्रकार के भी द्वंद्व साधक की साधना में बाधा नहीं पहुंचाते। उपनिषद में कहा गया है शरीर ही सारे कर्तव्यों को पूरा करने का एक मात्र साधन है इसलिए शरीर को स्वस्थ रखना मानव के लिए बेहद जरूरी है क्योंकि सारे कर्तव्य और कार्यों की सिद्धि इसी शरीर के द्वारा होती है। शरीर की रक्षा करना और उसे निरोगी रखना मनुष्य का मुख्य कर्तव्य है। जब साधक का शरीर स्वस्थ और निरोगी होगा तो वही साधक अपने मुख्य लक्ष्य को प्राप्त कर सकता है।

युवा पीढ़ी और नैतिकता

डॉ. मधु मेहरा
असिस्टेंट प्रोफेसर, जंतु विज्ञान विभाग
चमन लाल महाविद्यालय, लंढौरा, हरिद्वार

हर व्यक्ति का समाज,परिवार, मित्रों व अपने काम के प्रति कुछ न कुछ दायित्व होता है। इसे निभाने के लिए हमें गंभीर भी होना चाहिए। हमें अपने दायित्व को निभाने के लिए कड़ी मेहनत करनी चाहिए। इन सभी दायित्वों में देश के प्रति कुछ करना हमारा प्रमुख दायित्व है। हमें किसी न किसी रूप में इसे पूरा भी करना चाहिए। जरूरतमंदों की मदद, भ्रष्टाचार के खिलाफ आवाज उठाने के लिए हमें हमेशा आगे आना चाहिए। युवा पीढ़ी को संस्कारवान बनाकर व उसे अच्छे बुरे की समझ करवाकर ही हम अच्छे समाज का निर्माण कर सकते हैं। आज की युवा पीढ़ी आधुनिकता के रंग में अपने संस्कारों, नैतिकता और बड़ों का आदर करना भूल रही है। हमारा दायित्व है कि युवा पीढ़ी को सही मार्ग दिखाएं, ताकि आने वाला कल अच्छा हो। जहां पर बच्चा गलत करता है उसे टोकना चाहिए। आज की युवा पीढ़ी को चरित्रवान बनाना तथा पौराणिक ज्ञान से अनुग्रहित होकर आधुनिक तकनीक और विज्ञान में भी किसी से पीछे ना रहने की पद्धति का अनोखा संगम बच्चों के भविष्य को एक स्वर्णिम राह की ओर ले जाएगा। अगर सभी अच्छे बन जाएंगे तो निश्चित रूप से पूरा समाज भी अच्छा हो जाएगा। शिक्षक के रूप में हमारा मुख्य उद्देश्य शिष्यों को सभ्य व शिक्षित बनाना है, ना केवल साक्षर। शिक्षक होने के नाते हमारा दायित्व हो जाता है कि बच्चों में नैतिक मूल्यों को भी भरें और संस्कारों को लेकर उनके साथ रोजाना बातचीत की जाए।

संसार में मानव परमात्मा की प्रमुख व खूबसूरत कलाकृति है। मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। मानव होने के नाते हम कुछ ऐसी मानवीय संवेदनाओं, आवश्यकताओं, अपेक्षाओं व धारणाओं के सूत्र में बंधे हुए हैं, जिनका कोई कानूनी, शास्त्रीय, धार्मिक या जातीय प्रतिबंध ना होते हुए भी हमारे निजी, सामाजिक, पारिवारिक और राष्ट्रीय जीवन से सीधा सरोकार है। इनका निर्वाह हमारे नैतिक दायित्व के अंतर्गत प्रमुख है। किसी लाभ, स्वार्थ या प्रतिफल की इच्छा के बिना दूसरों की मंगल कामना, लोक कल्याण, सबके हित में योगदान करना भी हमारे दायित्व में आता है।

रोजाना अगर संस्कार की बात होगी तो बच्चे स्वयं ही नैतिक मूल्य व संस्कारों के प्रति सजग रहेंगे जिससे हमारा दायित्व भी पूरा हो जाएगा। अंधेरे की ओर बढ़ती इस पीढ़ी को संवेदनशील बनाने के लिए प्रत्येक व्यक्ति को यह दायित्व निभाना होगा कि वह नई पीढ़ी को सही मार्ग दिखाए। यही हम सब के जीवन का लक्ष्य होना चाहिए। समाज में रह रहे सभी लोगों को समय-समय पर दायित्व के प्रति प्रेरित करते रहना चाहिए। कुछ प्राणी ऐसे हो सकते हैं जिनको दायित्वों से कुछ लेना देना नहीं है। अपनी जिम्मेदारियों को सही ढंग से निभाना ही दायित्व है। एक शिक्षक होने के नाते मैं यह कहना

चाहती हूँ कि आज के शिष्यों में वह सहनशीलता नहीं रही है जो प्राचीन काल में हुआ करती थी। उनके अंदर के अवगुणों को निकाल अच्छे गुणों को भरा जाए। शिष्यों को नैतिकता, शिष्टाचार, अच्छे विचार, आदर, विनम्रता व सहनशीलता की शिक्षा देनी चाहिए। युवाओं को प्राचीन ग्रंथ पढ़ाए जाएं ताकि वे समझ सकें कि बड़ों के साथ कैसा व्यवहार किया जाना चाहिए और हमारे सामाजिक, सांसारिक व राष्ट्रीय दायित्व क्या है? इसके साथ ही माता-पिता, गुरु, व बड़ों का आदर करना व छोटो से स्नेह भी हमारा दायित्व होना चाहिए तथा बच्चों में शुरुआत से ही देश के प्रति प्रेम की भावना भरना हमारा उत्तरदायित्व होना चाहिए।

दक्षिण व राजस्थानी भित्ति चित्रकला शैली

डॉ. आंचल शर्मा
असिस्टेंट प्रोफेसर, चित्रकला विभाग
चमन लाल महाविद्यालय, लंढौरा, हरिद्वार

प्राचीन साहित्य में चित्रों के साथ-साथ चित्र सामग्री तथा चित्र निर्माण से संबंधित विस्तृत ज्ञान की सूचना देने वाले अनेक ग्रंथ उपलब्ध है। छठी शताब्दी में रचित विष्णुधर्मोतर पुराण का चित्रसूत्र प्रामाणिक माना जाता है। प्रजापति शिल्प, सरस्वती शिल्प, नारद शिल्प, शिव तत्व रत्नाकर, शिवरतन आदि ग्रंथों में चित्रों की सामग्री तथा चित्र निर्माण प्रविधि के विस्तृत विवरण उपलब्ध है। उसकी प्राप्त सामग्री आज जैसी वैज्ञानिकता लिए तो नहीं है, पर अधिकांश व्यक्तिगत प्रयोगों पर ही अधिक निर्भर थी। भारतीय चित्र में वर्णिका भंग नामक अंतिम विभिन्न वर्ण एवं तूलिका को सिद्ध करने के महत्व पर अधिक बल देता है।

साहित्य तथा शिल्प ग्रंथों में चित्रण के लिए अधिकांश भित्ति का ही उल्लेख उपलब्ध होता है, चित्रों के संदर्भ में कागज तथा पट का विवरण बहुत ही कम उपलब्ध होता है। 12 वीं शताब्दी में चालुक्य राजा सोमेश्वर द्वारा रचित अभिलाषीतार्थ चिंतामणि में नाट्य मंडप की सजावट में भित्ति चित्रण के विधान का उल्लेख है भित्ति संस्कार, वर्ण विधान, तूलिका आदि। नाद शिल्प में चित्रों को तीन भागों में विभाजित किया गया है।

1. भौतिक भूमि पर
2. दीवार पर
3. छत पर बने

चित्रों की सामग्री एवं संविधान के दृष्टिकोण से चित्रण तकनीक में भित्ति चित्र एक पृथक विधा है, जो अपने अधिकांश रूप में चित्र तथा कपड़ों पर बने चित्र से सर्वदा अलग है। विशाल अंतराल, मजबूत चित्रभूमि की तैयारी, रंगों का चुनाव रंगों की दशा तथा प्रकृति और उनके प्रयोग करने का अनुभव आदि जितना भित्ति चित्रण में आवश्यक है, दूसरे चित्रों (पुस्तक चित्र, पट चित्र) में नहीं है। नियंत्रण क्रिया द्वारा ही दीवार तथा कागज पर चित्र का निर्माण संभव हो पाया।

भित्ति चित्रण में रंग तथा दीवार एक दूसरे से मिलकर एक ही अंग बन जाते हैं। दीवार चित्रण में चित्र बनाने से पहले सतह का निर्माण भी चित्रकार के द्वारा स्वयं किया जाना चाहिए। तकनीक तथा रंगों का ज्ञान चित्रकार के लिए परम आवश्यक है। चित्रण में अधिकांश स्थानीय सामग्री का प्रयोग किया जाता है। इसी कारण दक्षिण में प्राप्त होने वाले दीवार के चित्रों में उनकी भूमि तथा रंगों में संभवत: सामग्री के अवयव में अंतर दिखाई देता है। दीवार की तैयारी कार्यविधि और माध्यम इन

तीनों आधार पर ही चित्रण विधान की तीन प्रणालियां मुख्यत: प्रचलित रही हैं।

चूने के प्लास्टर से बनी चित्र सतह पर पानी और चूने के पानी को रंगों में मिलाकर प्रयोग किया गया है। इस चित्रण में जो तकनीक प्रयोग की गई है, उसको फ्रेस्को बूनो कहा जाता है गीले प्लास्टर में किए गए चित्रण को शुद्ध फ्रेस्को तथा प्लास्टर सूखने के बाद चूने की सामान्य दीवार पर किए गए चित्रों का माध्यम टेम्परा रंग लेकर किया गया चित्रण टेम्परा नाम से जाना जाता है। भित्ति चित्रण के प्रधान केंद्र जयपुर तथा राजस्थान भर में एक ही प्रणाली का विकास हुआ जिसे मोराकसी और आरायश नाम से प्रसिद्धि मिली।

शुद्ध फ्रेस्को बूनो तकनीक

फ्रेस्को शब्द इटली के 'फ्रेश' शब्द से बना है। जिसका तात्पर्य है ताजा प्लास्टर होता है। यह नाम इसे चौथी शताब्दी के पूर्वार्द्ध में केंपो द वीटो के भित्ति चित्रों के निर्माण से मिला। फ्रेस्को विधि में गीले चुने के प्लास्टर पर पानी अथवा चूने के पानी के माध्यम से रंगों को मिलाकर चित्रण किया जाता है। गीले प्लास्टर पर से धीरे-धीरे नमी उठ जाती है, तथा चूना हवा से रसायनिक क्रिया करके हवा से कार्बोलिक एसिड गैस सोख लेता है, और पानी में कैल्शियम कार्बोनेट बच जाता है। कैल्शियम कार्बोनेट की यह पतली चमकदार परत रंग की ऊपरी सतह पर बन जाती है, जिससे रंग स्थाई हो जाता है। प्लास्टर की गीली अवस्था में लगाए जाने के कारण रंग प्लास्टर द्वारा सोखे जाने के कारण अंदर समा जाता है और प्लास्टर का अविभाज्य अंग बन जाता है।

इस चित्रण तकनीक में चूना एक महत्वपूर्ण अंग है। अत: रंगों का सावधानी से प्रयोग किया जाता है, जो रंग चूने के साथ रसायनिक क्रिया करते हैं उनका प्रयोग नहीं किया जाता। तकनीकी निश्चितता, रंगों की सीमा, समय का बंधन, चित्रकार को अत्यंत आवश्यक चुनाव के लिए सतत बाध्य करते रहते हैं।

परम्परागत चित्रण विधि से कार्य करने वाले चित्रकार उसी तकनीक में काम करते हैं, तकनीकी दृष्टि से देखा जाए तो इसमें विशेष अंतर नहीं है। सामान्यत: एक सतह के कागज पर रेखांकन किया जाता है, उस पर हल्की सी खड़िया की परत चिपका दी जाती है। यहीं से कला के स्वरूप को निखारने का कार्य प्रारंभ होता है। इसके बाद रंग भरा जाता है, रंग भरने के लिए अलग-अलग विधि कलाकारों द्वारा अपनाई जाती है। कुछ पहले एक भाग को पूरा करते हैं, फिर दूसरे में रंग लगाते हैं। इस तरह टुकड़े-टुकड़े में चित्र को पूरा किया जाता है। कुछ कलाकार एक ही साथ सारे रंग को लगाने के बाद फिर रेखांकन करने के बाद बाहर निकले रंग को दबाकर एक भाग पूरा करते हैं। चित्रकला करने का प्रत्येक कलाकार का पंरपरागत तरीका होता है।

चित्र को पूरा करने के बाद संगमरमर को पॉलिश की हुई शिला पर चित्र को उल्टा रख देते हैं, और पीछे से पत्थर की छोटी सी घोटनी से घोट देते हैं। यदि जो चित्र को घुटने से पूर्व थोड़ी देर पहले गीले कपड़े से हल्का सा गीला कर दिया जाए, तो घुटाई और अच्छी हो जाती है। दक्षिण भित्ति

शैली और अन्य शैलियों में तकनीक का अंतर समय-समय पर दृष्टिगोचर होता है। भारतीय व अन्य देशों की इस चित्रण तकनीक में विभिन्नता रही है, जैसे के इटली में गीले प्लास्टर पर चूने के पानी तथा पानी के माध्यम से रंग लगाने की विधि।

भारतीय व अन्य देशों की इस कार्यविधि में विभिन्नता है। भारतवर्ष में सूखी चित्र भूमि पर कार्य किया जाता था। इटली में चूने की रासायनिक क्रिया से बनी कार्बोनेट की परत पर ही रंगों को स्थाई करने के लिए पर्याप्त मानी जाती थी। राजस्थान में ठुकाई पिसाई और पॉलिश करके रंगों को प्लास्टर में गहराई में पहुंचाया जाता था, और चूने की क्रिया भी स्थाईकरण में सहायक होती है। राजस्थानी विधि में तथा दक्षिण विधि में चूने को शोधित करने की विधि में दही छाज या गुड़ की चास दी जाती है। इटली में इस प्रकार का शोधन कार्य नहीं किया जाता। दक्षिण भित्ति में चित्रण के नियम इस प्रकार हैं-

1. जमीन से टिकाऊपन की पहचान
2. रंगों के प्रयोग की जानकारी
3. कार्य करने की ताब-दीवार की नमी मसाले की परत की मोटाई और परतों के बीच दिए जाने वाले समय का ज्ञान
4. मसाला बनाने की विधि एवं अनुपात का ज्ञान
5. धैर्य

नागौर की लघु चित्रों में तथा दक्षिण में भी राजस्थान के प्राचीन चित्रों की भांति खनिज रंगों का प्रयोग अधिक मिलता है। इस प्रदेश में पाई जाने वाली मिट्टी के कण-कण में रंग विद्यमान हैं। जिसमें लाल, काली, पीली, सफेद, रामराज आदि मिट्टियां तथा विभिन्न रंगों के पत्थरों में हरा, भाटा, हिंगुल आदि को चूर्ण बनाकर आवश्यकतानुसार गोंद एवं पानी के साथ घोटकर काम में लेने की स्थानीय पद्धति रही है। इससे अलग प्राकृतिक खनिज रंगों में भी विभिन्न प्रकार के बहुमूल्य धातुओं सोना, चांदी, रांगा जस्ता आदि तथा भूमि से प्राप्त विभिन्न रंगों का विधिवत निर्माण तथा प्रयोग चित्रकार करते रहे हैं। इन तत्वों से निर्मित रंग कीमती और अधिक टिकाऊ होते थे। सफेद हकीक तथा स्वर्ण रंजित पत्रों के बारीक कणों को घोट कर रंगों को तैयार किया जाता था।

काले रंग के लिए कायेले के काजल का प्रयोग होता था। यहां तिलली के तेल से बनाए गए काजल के रंग को प्रयोग में लाने की विधि उजागर होती है। काला रंग रसायनिक विधि से भी तैयार किया जाता था। सफेद रंग के लिए शैल, सीप, शंख व उनकी भस्म तैयार करने की पद्धति स्थानीय चित्रकारों ने अपनी चित्रकारी में अपनाई और इस प्रकार की कला की प्राचीन प्रतिष्ठा परंपरा से चित्र बनाने से पृथक कागज पर भी चित्रण कार्य होता था। इसके लिए मुख्यत: ईरानी और स्थानीय कागज काम में लाए जाते थे। जहांगीर के समय में भारत में कागज के बहुत से कारखाने बन चुके थे। भारतीय इतिहास में दौलताबादी कागज, गुजराती कागज, आपसानी कागज और सवाई जयपुरी कागजों का उल्लेख मिलता है।

सांगानेर और कश्मीर के अतिरिक्त आज पुणे में ही नहीं अन्य कई स्थानों पर अच्छा कागज बनने लगा है। जहांगीर के समय में कागज उद्योग दानापुर, जूनापुर, मथुरा, कालपी, सियालकोट, अहमदाबाद और दौलताबाद में पनप चुका था। इसके अतिरिक्त वर्णा में भी कागज बन रहा था। समय की मांग के अनुसार सांगानेर में बन रहे कागज की किस्मत बदल चुकी थी, लेकिन मांग के अनुसार आज भी वहां कुछ ऐसे बुजुर्ग हैं, जो जैसा चाहे वैसा कागज बनाकर दे सकते हैं।

इन कागजों पर चित्रकारी करने के लिए पहले कागज की दो या तीन परतों को चिपका कर कागजों की वसली बनाई जाती थी। इसे बनने के बाद इस पर लेई चढ़ाई जाती थी। अखरोट या मैदा से तैयार की गई लेई और कई स्थानों पर सिंघाड़े के मैदे से भी लेई बनाने का उल्लेख मिलता है। पहले मोटा गेहूं साबूत या थोड़ा कूटकर पानी में चार-पांच दिन के लिए भिगो दिया जाता था। भीगने के बाद इसको मथ कर छान लिया जाता था, जिससे छिलके अलग हो जाते थे, फिर इसे उबलते पानी में डालकर हिलाते रहते थे। इसे सीधी आग पर कभी गर्म नहीं किया जाता था। अखरोट की लई को सीधे आग पर नहीं रखी जाती है, ऐसा करने से बदली कड़क हो जाती है। इस प्रकार प्रत्येक शैली एवं चित्रकार की विशेष प्रविधि होता है, और निर्माण की सीमा होती है। प्राय: देखने को मिलता है कि प्रत्येक शैली के चित्रकारों द्वारा कुछ विशिष्ट प्रकार के रंगों से ही चित्रण किया गया है, इसी आधार पर दक्षिण के चित्रकारों ने जिन रंगों का प्रयोग किया वे वनस्पति और खनिज तथा ऑक्साइड रंग थे।

चित्रकार लघु चित्रों में काम में ली जाने वाली तूलिका भी स्वयं बनाते थे। स्थानीय भाषा में इसको तूलिका ही कहा जाता है। इसके लिए मुलायम बालों की आवश्यकता होती है। तूलिका को बकरी के बच्चे के कान व पूंछ आदि के बालों से बनाते थे इन बालों को मोर पंखों में फसाया जाता था, जिसके पीछे बांस की खोखली डंडी लगा दी जाती थी।

चित्रण के लिए गिलहरी के बालों की बनी तूलिका को अच्छा माना जाता था। ध्यान रखा जाता था, कि बाल की नोक ठीक हो और आगे का हिस्सा काला हो, क्योंकि इन बालों में कुछ बल होता है। फिर बाल को बाएं हाथ के अंगूठे के नाखून और उसी हाथ की पहली उंगली के अंदर के भाग से फालतू बालों को पकड़ कर निकाल दिया जाता है। अगर बाल ज्यादा ही अव्यवस्थित हो तो उसमें से एक मोटी लट खींचकर वापिस लट में नोक बराबर मिलाकर लगाकर लगा दी जाती है।

अब चित्र परंपरा को आगे बढ़ाने के लिए एक ऐसी दीवार का चयन किया जाता है, जहां हवा का आगमन होता है। दीवार में कोई भी किसी भी प्रकार की दरार या गढ्ढा ना हो, अगर उस पर प्लास्टर है, तो उसे खरोच पर उतार दिया जाता है। नहीं तो वह पूरी दीवार को लगभग 1 वर्षों खुला छोड़ देते हैं, जिससे उस पर हर मौसम का प्रभाव पड़ सके और वह मौसम के लिए प्रभावहीन हो जाए। ईटों की दीवार की दरारों को गहरा कर दिया जाता है। अगर उस पर सीमेंट से चिकनाई की गई है, तो प्लास्टर करने से पूर्व दीवार को छैनी द्वारा खुरदुरा करते हैं। दीवार को कई बार कड़े ब्रश से रगड़ कर पानी से धोया जाता है और उसे पानी से इतना तर कर दिया जाता है, कि उस पर प्लास्टर

किया जा सके। ईट की दीवारें अधिक पानी सोखती हैं, जबकि पत्थर की दीवार में पानी सोखने की शक्ति बहुत कम होती है। जितनी अधिक तराई होगी उतनी ही अच्छी दीवार से प्लास्टर की पकड़ होगी।

जमीन तैयार करने के बाद सबसे पहले दीवार पर 1:3 के अनुपात में चूने और बजरी की पहली परत लगाई जाती है, जिसे सरेसी करना कहते हैं। मसालों को समतल करने हेतु समतल और ठुकाई करने में लकड़ी के गिरमाले का प्रयोग किया जाता है। दूसरी परत के लिए चूने के साथ संगमरमर का चूर्ण जिसे स्थानीय भाषा में जीकी कहते हैं, प्रयोग में लाते हैं। प्लास्टर को लकड़ी की थपकी से ठोकर स्थाई बनाते हैं। प्लास्टर में कभी-कभी धान की भूसी और नारियल की रेशे मिलाए जाते हैं। प्लास्टर को अधिक जकड़ा हुआ बनाने के लिए बालू, भूसा और सन के रेशे आदि का प्रयोग यूरोप में भी किया जाता है। लकड़ी की थपकी से परत को खड़ा किया जाता है। इसके लिए चूने को विशेष रूप से तैयार किया जाता है। भिगोए चूने में दही, मट्ठा और गुड़ भी मिलाया जाता है। चूने का लगभग 200 बार पानी बदला जाता है। गुड़ की चास भी आवश्यक है, इनकी चास से उसमें इमल्शन जैसा प्रभाव आ जाता है। यह चित्रण सूखने पर घना ठोस और चमकदार हो जाता है। इस चूने को संगमरमर के पाउडर के साथ 1: 3 के अनुपात में लगाया जाता है। लग जाने के पश्चात इस लेप को पतला करके मिट्टी पर नरम बालों वाले ब्रश से तीन चार बार लगाते हैं, इसके पश्चात हकीक पत्थर के बड़े टुकड़े से इसकी घुटाई करते हैं, जिससे दीवार के अंदर एक चमक आनी प्रारंभ हो जाती है। इस चमकदार गीली सतह पर चित्रण बनाया जाता है।

चित्र का रेखांकन लाल खड़िया या चारकोल से किया जाता है। रेखांकन के अनुसार रंगों को कुछ मात्रा में प्लास्टर के लेप में मिलाकर दीवार पर लगाया जाता है, यह लेप साम्रगी को जोड़ने के साथ-साथ रंग को फैलाने में सहायक होता है। अब जितना जल्दी हो सके रंगों को लगाने का कार्य पूरा कर दिया जाना चाहिए। छाया प्रकाश का कार्य साथ-साथ ही धरातल पर कर लेना चाहिए, अन्यथा परत उखड़ जाती है लाल रंग के रूप में हिंगुल, पीले रंग के रूप में रामराज और हरा, भाटा, नील चूना एवं सफेद रंगों का प्रयोग होता है। इस विधि में काले रंग के लिए काजल अथवा चारकोल का प्रयोग होता है किंतु फ्रेस्को बूनो तकनीक में काले रंग का प्रयोग बहुत कठिन होता है, क्योंकि यह चूने के साथ मिलने पर सलेटी रंग में बदल जाता है। इस पर चित्र तल पर रंगों के प्रयोग के बाद दीवार को चकमक पत्थर से धीरे-धीरे सावधानी से घिसकर चित्र को चमकीला बना दिया जाता है। इसके बाद साफ कपड़े से चित्र को साफ किया जाता है, इसके बाद पिगमेंट पत्थर के रूप में प्राप्त होता है, जिसे पीसकर पाउडर बनाकर किसी छोटे घड़े में कुछ दिन के लिए पानी में भिगो कर रख दिया जाता है। जिससे उसके नीचे के भाग में मिट्टी के कण तथा अवसाद भाग जाता है। इस प्रकार से साफ किए पिगमेंट को कपड़े में छानकर इस को शुद्ध एवं कॉमन बना दिया जाता है टेंपरेरी के चित्रों में सामग्री को बांधने के लिए गुड व सर इसका प्रयोग किया जाता है यह विधि सूखी दीवार पर की जाती है इस विधि में अंडे की जर्दी का प्रयोग होता है। कैमरा तकनीक के रंग सूखने के

पश्चात पर्याप्त अघुलनशील हो जाते हैं। इस विधि में रंग की परतें अपारदर्शी बनी रहती हैं भिन्न-भिन्न रंगों की योजना प्रस्तुत करना इस तकनीक में संभव है।

इस प्रकार राजा महाराजाओं के निवास स्थान और अन्य गलियारों को सजाने संवारने में चित्रकारों ने इस प्रकार बहुत मेहनत के साथ चित्रों का चित्रण किया, स्वयं सतह तैयार की, रंगों को बनाया, ब्रश बनाएं और एक सुंदर स्वरूप को गढ़कर हमारे सामने प्रस्तुत किया। यह चित्र आज भी अपनी सुंदरता और रंगों के साथ ऐसे ही बने हुए हैं और इनके चित्र आज भी पहले की समान चमकदार हैं।

सहायक पुस्तकें

1. शिवराम- मूर्ति साउथ इंडियन पेंटिंग
2. डॉक्टर बद्रीनारायण वर्मा- कोटा भित्ति चित्रांकन
3. आर्टिस्ट बैनर ऑफ यूजिंग द ब्रश एंड कलर
4. शिल्प के षडंग सम्मेलन पत्रिका
5. बीएन शुक्ला- वास्तु कला
6. विलियम ऑर्फन- द स्टोरी ऑफ आर्ट
7. डॉ सोमेंद्र- राजस्थानी राग माला चित्र परंपरा
8. डॉक्टर आरके वशिष्ठ- (शोध पत्र) प्राचीन पश्चिम भारतीय चित्रकला के केंद्र नागौर

स्वस्थ रहने के तरीके

रीना गुप्ता
प्रयोगशाला सहायक, गृह विज्ञान विभाग
चमन लाल महाविद्यालय, लंढौरा, हरिद्वार

- हमेशा से ही कहा जाता रहा है कि सेहत इंसान की असली दौलत होती है। हमारे शरीर की फिटनेस और स्वास्थ्य ही हमें अपने जीवन में हर समय ऊर्जावान बनाए रखने में मदद करते है। इन दिनों हम देख रहे हैं कि हम में से कई लोग स्वास्थ्य सम्बन्धी किसी न किसी समस्या से ग्रसित हैं। यह सब हमारे स्वास्थ्य के प्रति हमारी लापरवाही और खानपान के कारण होती है। अपने शरीर को स्वस्थ रखने और अच्छे जीवन को पाने के लिए हमें कुछ चीज़ों के पालन करने की आवश्यकता है।
- अच्छे स्वास्थ्य को बनाए रखने की और पहला कदम विभिन्न सूक्ष्म पोषक तत्वों से समृद्ध आहार लेना है। आपके आहार में विशेष रूप से ताज़े फल और हरी पत्तेदार सब्ज़ियाँ शामिल होनी चाहिए। इसके अलावा दालें, अंडे और डेयरी उत्पाद भी हों जो आपके समग्र विकास में मदद करते हैं तथा पूरे दिन चलने के लिए ऊर्जा प्रदान करते हैं।
- अपने शरीर को स्वस्थ रखने के लिए पर्याप्त ऊर्जा पैदा करने और काम करने के लिए ऊर्जा बनाए रखना आवश्यक है। इसके लिए आठ घंटों की नींद लेना ज़रूरी है। किसी भी मामले में आपको अपनी नीद से समझौता नहीं करना चाहिए। नींद की कमी आपको सुस्त बना देती है और आपको शारीरिक और मानसिक रूप से परेशान करती है।
- सकारात्मक लोगों के साथ रहना आवश्यक है। उन लोगों के साथ रहें जिनके साथ आप स्वस्थ और सार्थक चर्चाओं में शामिल हो सकते हैं तथा जो आपको निराश करने के बजाय आपको बेहतर करने के लिए प्रोत्साहित कर सकते हैं। यह आपके भावात्मक और सामाजिक स्वास्थ्य के लिए अच्छा है।
- वार्षिक स्वास्थ्य जाँच कराना एक अच्छा विचार है। सावधानी हमेशा इलाज से बेहतर होती है। इसलिए यदि आप अपनी वार्षिक स्वास्थ्य जाँच रिपोर्ट में किसी भी तरह की कमी या किसी भी तरह के मुद्दे को देखते हैं तो आपको तुरंत मेडिकल सहायता प्राप्त करनी चाहिए और इससे पहले कि यह बढ़े इसे ठीक कर लेना चाहिए।
- आज के समय में लोग इतने व्यस्त हैं कि वे अपने स्वास्थ्य की देखभाल करना भूल जाते हैं। स्वास्थ्य को अनुकूलित करने और सेहतमंद रहने के लिए उपर्युक्त बिन्दुओं का पालन करना चाहिए।

सोशल मीडिया

गौरव अग्रवाल
प्रयोगशाला सहायक, भौतिक विज्ञान विभाग
चमन लाल महाविद्यालय, लंढौरा, हरिद्वार

सोशल मीडिया का तात्पर्य ऐसी सूचनाओं अथवा संचार से है, जो विभिन्न कम्प्यूटरों, स्मार्टफोन या अन्य डिवाइस के जरिये संचालित किया जाता है।

सोशल मीडिया इंटरनेट की ऐसी मीडिया है, जहाँ हर प्रकार की जानकारी मौजूद है। दुनिया भर में अरबों लोग सोशल मीडिया का उपयोग करते हैं। इसके किसी भी प्लेटफॉर्म का उपयोग करने वाला व्यक्ति इंटरनेट की सहायता से एक वर्चुअल वर्ल्ड से जुड़ जाता है। शिक्षा, व्यवसाय, मनोरंजन, संस्कृति और देश दुनिया की खबरें इत्यादि से जुड़े कई सारे विविधता से भरे विकल्प यहाँ मिल जाते हैं।

सोशल मीडिया का महत्व-

- डिजिटल युग का महत्व समझते हुए भारत सरकार ने भी डिजिटल इंडिया के निर्माण पर ध्यान दिया है और इस क्षेत्र में युवाओं को कुछ अद्भुत करने के लिए भी प्रेरित किया है।
- सूचना, डॉक्यूमेन्ट्स, फोटो, वीडियो इत्यादि से जुड़ी हर खबर के संचार के लिए सोशल मीडिया सबसे बेहतरीन उपाय है।
- हर एक इंसान जो कुछ सीखना चाहता है, उनके लिए शिक्षा ग्रहण करने का सबसे असरदार विकल्प है।
- सोशल मीडिया की सहायता से ही देश की सरकारें तमाम युवाओं या नौजवानों के लिए रोज़गार के अवसरों को प्रस्तुत करती है।

सोशल मीडिया का समाज पर प्रभाव-

सोशल मीडिया की ताकत का अंदाज़ा इस बात से लगाया जा सकता है कि वह किसी भी समाज की दशा को सुधार भी सकती है और बिगाड़ भी सकती है। यह उपयोगकर्ता पर निर्भर करता है कि सोशल मीडिया का उपयोग किस तरह कर रहा है। यदि कुछ जानने और सीखने के उद्देश्य से इसका उपयोग किया जाए, तो एक उच्च और आदर्श जीवन की कल्पना की जा सकती है। लेकिन वहीं अगर केवल मनोरंजन और टाइम पास करने के लिए इसका उपयोग किया जाए तो आप अपने कीमती समय को गँवा बैठेंगे और कुछ भी नहीं सीख पाएंगे।

सोशल मीडिया के फायदे-

- ऐसे लोग जो अपने टैलेंट को दुनिया के सामने प्रस्तुत करके अपनी आवाज़ को और भी मुखर करना चाहते हैं, उनके लिए सोशल मीडिया सबसे मददगार प्लेटफॉर्म है।
- दुनिया में हर इंसान को कुछ अच्छा करने के लिए मोटिवेशन की ज़रूरत होती ही है। सोशल मीडिया की मदद से हर कोई स्वयं को सकारात्मकता से भर सकता है।
- वर्तमान में अधिकतर देश-विदेश की कम्पनियाँ अपने यहाँ खाली वैकेंसीज़ के लिए सोशल मीडिया पर ही पोस्ट करते हैं, जिससे के अन्य लोगों को इसके विषय में पता चले और उन्हें रोज़गार मिल सके।
- जो लोग किसी कारणवश अपने परिवार से दूर रहकर नौकरी, पढ़ाई-लिखाई या कामकाज इत्यादि करते हैं, तो वे सोशल मीडिया की सहायता से अपने परिवार और परिचितों के साथ संवाद कर सकते हैं।

सोशल मीडिया के नुकसान-

- सोशल मीडिया के ज़रिए साइबर बुलिंग जैसे गम्भीर अपराधों को भी अंजाम दिया जाता है। इसके अलावा मादक पदार्थों के सेवन, अपराधिक गतिविधियों जैसे संवेदनशील कृत्य भी हमारे के जीवन को प्रभावित करते हैं। खासतौर पर बच्चे साइबर बुलिंग का अधिक शिकार होते हैं।
- जिसने सोशल मीडिया के इस विशाल दुनिया में रहना सीख लिया, उसके लिए यह किसी वरदान से कम नहीं। लेकिन जो इसके जंजाल में फँस गया, वह कोई भी लाभ लेने के बजाय केवल अपना समय व्यर्थ करता है।
- कई बार समाज में अशांति फैलाने के लिए झूठी अफवाहें फैला दी जाती हैं, जिसके कारण माहौल बहुत बिगड़ जाता है। ऐसी अफवाहें कई बार आक्रामकता और दंगे का स्वरूप भी ले लेती हैं।
- विद्यार्थियों के हाथ में पुस्तकों से ज़्यादा मोबाइल फोन देखने को मिलता है, जिससे यह साबित होता है कि सोशल मीडिया किस तरह से विद्यार्थियों की शिक्षा को प्रभावित कर रही है।

कोरोना महामारी का समाज पर सामाजिक एवं आर्थिक प्रभाव

डॉ. विपिन कुमार
कनिष्ठ सहायक
चमन लाल महाविद्यालय, लंढौरा, हरिद्वार

हम सबको ज्ञात है कि आज कोरोना वायरस के कारण अपने अस्तित्व को बचाने के लिए पूरी दुनिया दहशत में है। इस महामारी के प्रकोप के कारण सभी को अपने घरों में रहने की हिदायत दी जा रही थी यानि कि लॉकडाउन की स्थिति उत्पन्न हो गई थी। स्थानीय मीडिया के अनुसार कोरोना वायरस के खौफ के चलते लोग अब ज्यादातर वक्त घर पर रहने को मजबूर हो रहे थे। मीडिया के अनुसार वायरस के खौफ चलते कुछ इस प्रकार की घटनाएं समने आ रही थी, छत्तीसगढ़ के बिलासपुर क्षेत्र में कोरोना वायरस के संक्रमण के डर से भाभी ने मायके आई नन्द को ताना मारा कि रोज-रोज यहाँ न आया करो। नन्द के यह कहने पर कि यह उसका मायका है वह तो आएगी तब भाभी ने उसकी पिटाई कर उसे लहूलुहान कर दिया। दिल्ली के एक सरकारी स्कूल की शिक्षिका ने अपनी सोसाइटी की 15 वीं मंजिल से कूद कर आत्महत्या कर ली। वह महिला लॉकडाउन को लेकर तनाव में थी। नोएडा में टिक-टॉक वीडियो पे कुछ दिनों से लाइक न मिलने से परेशान एक 18-19 वर्षीय युवा ने पंखे से लटक कर आत्महत्या कर ली। वडोदरा में ऑनलाइन लूडो खेल में 24-25 वर्षीय पत्नी द्वारा पति को 5-6 बार हरा देने पर उसने अपनी पत्नी को इतना पीटा कि उसकी रीढ़ की हड्डी में चोट आ गई। उसे लगा कि उसकी पत्नी खुद को ज्यादा बुद्धिमान और स्मार्ट समझती है। ये कुछ ऐसी घटनाएं हैं जो सोचने पर मजबूर करती हैं कि क्या यह छोटी-छोटी बातें भी हत्या/आत्महत्या या झगड़े का कारण हो सकती हैं? आखिर हम इतने असहनशील क्यों और कैसे हो गए?

केवल इतना ही नहीं बल्कि न्यूयॉर्क टाइम्स की रिपोर्ट के अनुसार अमेरिका में लॉकडाउन में बच्चे माता-पिता से परेशान होकर चिढ़-चिढ़े हो रहे हैं और कहना भी नहीं मानते, कहीं भाग जाना चाहते हैं। 24 घंटे साथ रहने पर मजबूर परिवारों में तनाव और अवसाद बढ़ रहा है। अधिकांश लोगों के लिए लॉकडाउन केबिन फीवर (एक ही जगह पर फंस जाने से होने वाला तनाव) में बदल गया। महिलाएं घर के काम में थक रही हैं और उनमें डिप्रेशन (तनाव) बढ़ रहा है। अधिकांश परिवारों में घर के कामों में पति भी मदद नहीं कर रहे और घर के सारे काम अकेले करने पड़ रहे हैं इससे तनाव कभी-कभी बहुत बढ़ जाता है और नकारात्मक विचार आने लगते हैं। जो विद्यार्थी कॉलेज, हॉस्टल या बाहर से अपने घर लौटे हैं वे घर के वातावरण में एडजस्ट नहीं कर पा रहे इससे घर में बहस और

झगड़े बढ़ रहे हैं।

वहीं भारत में राष्ट्रीय महिला आयोग को 18 दिनों में घरेलू हिंसा की 123 शिकायतें मिली हैं, जिसमें पैनल ने कहा है कि लॉकडाउन के दौरान ऐसे मामलों में वृद्धि देखी गई। एनसीडब्ल्यू द्वारा हाल ही में साझा किए गए आंकड़ों के अनुसार, 23 मार्च से 10 अप्रैल तक, महिलाओं की समस्याओं से सम्बन्धित कुल 370 शिकायतें प्राप्त हुईं जिनमे से सबसे ज्यादा यानी 123 घरेलू हिंसा की थीं। इसलिए वर्तमान स्थिति में स्वास्थ्य समस्याओं पर चिंतन के साथ-साथ इन घटनाओं पर भी चिंतन की आवश्यकता है। जैसे यह कथन सच है कि ***'जान है तो जहान है'*** वैसे ही यह भी उतना ही सच है कि ***'सामाजिक सम्बन्ध बचेंगे तो समाज बचेगा'***।

ऐसा माना जाता है कि समाज/परिवार में साथ रहने से प्यार और भावनात्मक निकटता बढ़ती है परन्तु यह घटनाएं तो कुछ और ही सिद्ध कर रही हैं। मनुष्य इतना एकाकी और अलगावित हो गया है कि अब वह किसी के साथ भी नहीं रहना चाहता। उसकी निर्भरता मशीनों पर इतनी बढ़ गई है कि अब उसे मानव की जरुरत नहीं। मनुष्य में सहनशीलता, भावनात्मक निकटता, एक दूसरे के प्रति प्रेम, सम्बन्धों का महत्त्व, उनके प्रति जिम्मेदारी का भाव सब कुछ समाप्त हो गया है। आप उसे अकेले एक कमरे में रख दीजिए शायद तब वह परेशान नहीं होगा जितना वह परिवार के साथ बंद होने से परेशान है। सवाल बनता है कि क्या आज भी यह तर्क दिया जा सकता है कि मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है?

दूसरी तरफ यह भी एक तथ्य है कि कोरोना के प्रहार से अर्थव्यवस्था भी अछूती नहीं रह सकी। अंतर्राष्ट्रीय श्रम संगठन (आईएलओ) की एक रिपोर्ट के अनुसार भारत के असंगठित क्षेत्र के लगभग 40 करोड़ से अधिक श्रमिकों पर इस लॉकडाउन का प्रभाव पड़ सकता है, रिपोर्ट के अनुसार भारत भी नाइजीरिया और ब्राजील के साथ उन देशों में शामिल हो सकता है, जो इस महामारी से उत्पन्न होने वाली स्थितियों से निपटने के लिए अपेक्षाकृत सबसे कम तैयार थे। ऐसे में इन देशों में बेरोजगारी और गरीबी के आंकड़ों में व्यापक वृद्धि होने की सम्भावना से इंकार किया जा सकता। ऐसे भी कई उदाहरण सामने आये हैं कि लॉकडाउन के बाद उभरने वाली महामंदी के दौर को ध्यान में रखते हुए कई पश्चिमी देशों ने अपने यहाँ काम करने वाले भारतियों/एशियाई लोगों को नौकरी से हटाने के प्रयास शुरू कर दिए हैं। संयुक्त राष्ट्र ने भी हाल ही में कहा था कि दुनियाभर में ढाई करोड़ से अधिक नौकरियां जा सकती हैं। एक मीडिया रिपोर्ट के अनुसार दिल्ली में एक अंतरराष्ट्रीय ट्रेवल कंपनी ने कोरोना के कहर के चलते तीन सौ से अधिक कर्मचारियों को टर्मिनेशन नोटिस भेजा है। कोरोना संकट से निपटने के बाद अभी पारिवारिक, सामाजिक और आर्थिक संकट से निपटने के लिए भी तैयार होने की आवश्यकता है।

जब कोई बीमारी महामारी बन कर वैश्विक आपदा के रूप में आई हो तो पूरी दुनिया में चिंता बढ़ना वाजिब है। कोविड-19 की भयावहता ने विश्व समुदाय के माथे पर चिंता की लकीरें खींच

दी है। दुनिया इस समस्या से बचने या निकलने की पूरी तरह कोशिश में लगी है। लोगो को घरों में कैद होने की लिये मजबूर कर दिया है। कुछ लोग हिम्मत करके मिलना भी चाहते हैं तो अचानक कोरोना बम फूटने के खौफ़ से सहम जाते हैं। ऐसी घटनाएं समाज में दहशत फैलाने का काम कर रही हैं जिनमें लोगों के मिलने-जुलने से कोरोना का ग्राफ बढ़ा। अत: लोगों का मानसिक स्वास्थ्य लगातार बिगड़ता हुआ देखा जा रहा है जिससे समाज और सरकार की चिंता और बढ़ रही है।

महामारी का संकट शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य की चिंता का बड़ा कारण है कि यह वैश्विक आबादी के लिए कई तरह की शारीरिक और मानसिक चुनौतियां उत्पन्न कर रहा है। सामाजिक तौर पर इसका प्रभाव देखा जा सकता है। संयुक्त राष्ट्र के महासचिव एंटोनियो गुटेरेस ने कहा है कि 'मानसिक स्वास्थ्य सेवाओं की दशकों से उपेक्षा और कमजोरी के बाद, कोविड-19 महामारी अब परिवारों और समुदायों में अतिरिक्त मानसिक तनाव पैदा करके उनको खतरे में डाल रही है।' उनका मानना है कि महामारी नियंत्रण में आने के बाद भी दु:ख, चिंता और अवसाद लोगों को प्रभावित करेंगे।

विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ) ने दुनिया को आगाह किया था कि कोरोना संकट से उत्पन्न हुए लॉकडाउन, आइसोलेशन, सोशल डिस्टेंसिंग जैसे शब्द भय और चिंता बढ़ा सकते हैं जिससे मानसिक स्वास्थ्य संबंधी समस्याएं बढ़ने का खतरा है। कोविड काल की अनेक घटनाएं मानसिक स्वास्थ्य से संबंधित समस्याओं के प्रति सचेत कर रही हैं। बिगड़ता मानसिक स्वास्थ्य आत्महत्या का अहम् कारण बन रहा है। कोरोना संकट के दौरान आत्महत्या के मामलों में तेजी से उछाल आया है। कुछ आर्थिक तंगी और भविष्य के संकट को लेकर आत्महत्या कर रहे हैं तो कुछ महामारी के भय से मृत्यु को गले लगा रहे हैं। विशेषज्ञों की मानें तो 93 प्रतिशत आत्महत्याएं मानसिक स्वास्थ्य के बिगड़ने से ही होती हैं। सामाजिक ताने-बाने में हम उसे कोई भी नाम क्यों न दे दें, समस्या का मूल कारण मानसिक स्वास्थ्य का बिगड़ना ही होता है।

किसी भी वैश्विक महामारी का इतिहास इस बात की तस्दीक करता है कि महामारी केवल मानव के स्वास्थ्य को ही प्रभावित नहीं करती अपितु उसका खामियाजा सामाजिक ताने-बाने को भी भुगतना पड़ता है। यदि समाजार्थिक बदलाव होंगे तो निश्चित तौर पर लोगों के शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य पर बुरा प्रभाव पड़ेगा। कोविड-19 के दौरान भी दुनिया भर में ऐसे संकेत देखे जा सकते हैं। लोगों में इस सवाल को ले कर दहशत है कि आखिर इस महामारी से दुनिया कब निज़ात पाएगी।

नि:संदेह कोरोना महामारी 21वीं सदी में अब तक की सबसे बड़ी चुनौती है लेकिन वैश्विक इतिहास में ऐसी कई महामारियां दर्ज हैं जिन्होंने मानव जाति के शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य पर बड़े संकट पैदा किए हैं। हैजा, प्लेग, चिकनपॉक्स, स्पेनिश इनफ्लुएंजा आदि इतिहास की ऐसी महामारियां हैं जिनका असर अब तक देखा जा सकता है। सन 541 में फैले जस्टीनियन प्लेग को

इतिहास की सबसे भयावह महामारी के रूप में याद किया जाता है। मिस्र में जन्मी इस महामारी ने देखते-देखते भूमध्य सागर से लेकर यूनानी साम्राज्य तक अपना कहर बरसाया था। इससे लगभग पांच करोड़ लोगों ने अपनी जान गँवाई थी। कहा जाता है कि आगामी दो सदियां इस बीमारी के आते-जाते प्रभाव की गवाह बनीं और लोगों के मानसिक स्वास्थ्य पर गहरा प्रभाव पड़ा।

2003 में सार्स के प्रकोप का अध्ययन करते हुए शोधकर्ताओं ने बीमारी के कारण आने वाली मानसिक स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं को रेखांकित किया जिसमें तनाव, अवसाद, मनोविकृति, पैनिक अटैक आदि को बढ़ते हुए देखा गया था। दुनिया भर में कोरोना महामारी के मानसिक स्वास्थ्य पर पड़ रहे प्रभावों पर लगातार शोध हो रहे हैं।

राष्ट्रीय मानसिक स्वास्थ्य और स्नायु विज्ञान संस्थान बेंगलुरु द्वारा कुछ वर्षों पूर्व किए गए एक सर्वेक्षण के अनुसार, भारत में कम से कम 13.7 प्रतिशत जनसंख्या किसी न किसी मानसिक विकार से ग्रसित है। इनमें से 10.6 प्रतिशत लोगों को तत्काल किसी स्वास्थ्य सुविधा की आवश्यकता है। सर्वेक्षण के अनुसार, भारत में हर 20 में से एक व्यक्ति डिप्रेशन का शिकार है। इनमें से 10 प्रतिशत लोगों की समस्या सामान्य है, लेकिन 1.9 प्रतिशत लोगों में गंभीर मानसिक विकार है। ज्यादातर मामले शहरी क्षेत्रों में हैं, ग्रामीण इलाकों में इसका ज्यादा विकराल रूप सामने नहीं आया है।

ऐसे में हम सभी को अपने आप से ये महत्वपूर्ण प्रश्न पूछना चाहिए कि एक सब्जी विक्रेता घर पर कैसे काम करता है या क्या एक दिहाड़ी मजदूर घर पर बैठ सकता है और अपने अस्तित्व के साधनों से समझौता किए बिना खुद को सामाजिक रूप से अलग-अलग कर सकता है? कोरोना के समय में वर्गों के बीच की असमानता ने खुद को और ज्यादा बढ़ा दिया है और हमें एक ऐसी वास्तविकता को दिखाया है, जिसे हम पहले प्राथमिकता के तौर देखने से संकोच करते थे।

भारत एक विकासशील देश है, जहां वायरस को फैलने से रोकने में काफी चुनौतियां हैं। भारत को अपने सार्वजनिक स्वास्थ्य के बुनियादी ढाँचे को मजबूत करना है, वर्ग-आधारित सामाजिक संरचना से लड़ना है और इन विषम परिस्थितियों से सफलतापूर्वक निपटने के लिए सामूहिक कार्रवाई को प्रोत्साहित करना है। चूंकि राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय एजेंसियां इन चुनौतियों से लड़ने के लिए तैयार हैं, इसलिए हम अपनी सामाजिक संरचना में व्याप्त असमानता को अनदेखा नहीं कर सकते हैं, जिससे हमारी प्रतिक्रिया खंडित हो जाती है। इसमें एकमात्र तथ्य ये भी है कि समाज के उत्कृष्ट वर्ग के लिए आइसोलेशन में रहने या निवारक उपायों का पालन करने, या यहां तक कि गलत सूचना का शिकार होने से बचने के विकल्प हैं और इनके लिए ये संभव भी है, लेकिन यह उन लोगों के लिए ये स्वाभाविक रूप से चुनौतीपूर्ण है, जिनकी दिनचर्या रोजाना रोजी-रोटी कमाने के इर्द-गिर्द घूमती रहती है।

भारत में मानसिक स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता न होने के कारण अधिकांश लोग अपना इलाज ही नहीं करा पाते। भारतीय समाज में मानसिक रोगों के प्रति लापरवाही इस कारण भी ज्यादा है कि

समाज ज्यादातर मानसिक रोगियों को पागल ही समझता है। इसका सीधा परिणाम रोगी को भुगतना पड़ता है। उसका मानसिक स्वास्थ्य बिगड़ता चला जाता है। कई मामलों में ठीक होने पर भी ऐसे व्यक्तियों का आत्मविश्वास पूर्व की भांति नहीं लौटता। बिगड़ते मानसिक स्वास्थ्य में सामाजिक अवहेलना अहम् रोल निभाती है डब्ल्यू.एच.ओ. की मानें तो विश्व में सबसे ज्यादा मानसिक रोगी भारत में पहले से ही हैं। ऐसे में महामारी से उपजे संकट का अनुमान लगाना मुश्किल है। मानसिक रोगियों की बढ़ती संख्या के कारण ही भारत को 'वर्ल्ड मोस्ट डिप्रेस्ड कंट्री' की संज्ञा भी दी जाती है। दूसरी ओर, भारत में मानसिक स्वास्थ्य की देखभाल करने के लिए जितने मनोचिकित्सक होने चाहिए, उतने नहीं हैं। आंकड़ों की मानें तो प्रति लाख जनसंख्या पर देश में मात्र एक मनोचिकित्सक मौजूद है जबकि डब्ल्यूएचओ के मानदंडों के अनुसार, प्रति लाख लोगों पर कम से कम तीन मनोचिकित्सक होने चाहिए।

यह ध्यान देने का विषय है कि प्रकृति की एक चुनौती ने मानव समाज के सामने संकटों की झड़ी लगा दी है। अब सोचना यह है कि मानव समस्यों से कैसे उबरता है साथ ही कोविड के बाद का समाज कैसा होगा, लोगों के व्यवहार या व्यक्तित्व में क्या बदलाव आएगा, अर्थव्यवस्था पर क्या असर पड़ रहा है पड़ेगा। यह अत्यंत चिंता का विषय है।

सन्दर्भ सूची:

1. pravakta.com/author/drjyotisidana
2. महामारी के प्रकोप के कारण सभी को अपने घरों में रहने की हिदायत
   https;//hindi.indiawaterportal.org/content/kamajaora-varaga-para-mahaamaarai-kaa-adhaika-parabhaava/content-type-page/1319335581
3. कमजोर वर्ग पर महामारी
   https;//hindi.indiawaterportal.org/content/kamajaora-varaga-para-mahaamaarai-kaa-adhaika-parabhaava/content-type-page/1319335581
4. सामाजिक तौर पर इंसान के जीवन को कैसे प्रभावित करेगा कोरोना वायरस
   https://www.youthkiawaaz.com/2020/03/how-the-corona-virus-will-socially-affect-human-life-hindi-article.
5. https://www.dhyeyaias.in/

भौतिक विज्ञान का प्रगति क्षेत्र

शुभम जुरीवाल
प्रोजेक्ट असिस्टेन्ट, भौतिक विज्ञान विभाग
चमन लाल महाविद्यालय, लंढौरा, हरिद्वार

भौतिक शास्त्र या भौतिकी प्राकृतिक विज्ञान का एक मूल विषय है, जो पदार्थ व उसके मूलभूत घटकों, उसकी गति और व्यवहार, देशकाल के माध्यम से ऊर्जा और बल की सम्बन्धित अवस्थाओं का अध्ययन करता है। भौतिकी सबसे मौलिक वैज्ञानिक विषयों में से एक है जिसका मुख्य लक्ष्य यह समझाना है कि ब्रह्माण्ड कैसे व्यवहार करता है। एक वैज्ञानिक जो भौतिकी के क्षेत्र में विशेषज्ञता रखता है, भौतिक शास्त्री कहलाता है।

भौतिक विज्ञान ने हमारे जीवन-दर्शन को प्रभावित करके उसे नवीन दिशा प्रदान की है। आज एक सुसंस्कृत व्यक्ति से सामान्य घटनाओं में निहित वैज्ञानिक विश्लेषण करने की क्षमता अपेक्षित है। व्यक्ति का रहन-सहन भौतिक विज्ञान से प्रभावित है।

सामान्य अनुभव की गति, बलों और ऊर्जा का वर्णन करने के लिए भौतिकी आपके रोज़मर्रा के जीवन का विस्तार करती है। चलने, कार चलाने या फोन का उपयोग करने जैसे कार्यों में भौतिकी हर काम में है। भौतिकी का ज्ञान रोज़मर्रा की परिस्थितियों के साथ-साथ गैर-वैज्ञानिक कार्यों में भी उपयोगी है।

उदाहरण के लिए- भौतिकी आपको यह समझाने में मदद करती है कि माइक्रोवेव ओवन में खाना कैसे बनाया जाता है? क्यों एक रेडिएटर कार के इंजन की गर्मी को दूर करने में मदद करता है? क्यों एक सफेद छत एक घर के अन्दर ठण्डा रखने में मदद करती है? और ऐसे हज़ारों सवालों को भौतिकी के माध्यम से समझा जा सकता है।

भौतिकी कई महत्वपूर्ण वैज्ञानिक विषयों की नींव है, जैसे कि रसायन विज्ञान क्वांटम भौतिकी में निहित है, जो परमाणु और अणुओं के गहन अध्ययन का वर्णन करता है। इन्जीनियरिंग की अधिकांश शाखाओं में भौतिकी भी लागू होती है। वास्तुकला में भौतिकी इमारतों के लिए संरचनात्मक स्थिरता, ध्वनिकी, गर्म करने की व्यवस्था, प्रकाश की व्यवस्था और ठण्डा करने की व्यवस्था के निर्धारण के केन्द्रों में होती है।

भू-विज्ञान में पृथ्वी के नगण्य हिस्सों का अध्ययन, जलमण्डल का अध्ययन, भूकम्प के तूफ़ान का अध्ययन, ज्वालामुखी और अन्य प्राकृतिक आपदाओं जैसे बाढ़, सूखा पड़ना और पृथ्वी की सतह पर अत्यधिक गर्मी का होने का अध्ययन किया जाता है।

वास्तव में कुछ विषयों जैसे कि रासायनिक बिजली का गतिविज्ञान, प्रकाशिकी, ऊष्मप्रवैगिकी और आधुनिक भौतिकी प्राकृतिक घटनाओं का अध्ययन करने के लिए भौतिकी की महत्वपूर्ण शाखाएँ हैं। भौतिक विज्ञान जैव भौतिकी के माध्यम से मानव शरीर में रासायनिक प्रक्रियाओं का भी वर्णन करता है। भौतिकी चिकित्सा निदान में निहित है जैसे कि एक्स-रे, चुंबकीय अनुनाद इमेजिंग (एम.आर.आई.) और अल्ट्रासॉनिक रक्त प्रवाह माप। भौतिकी यह भी समझा सकती है कि हम अपनी इन्द्रियों के साथ क्या अनुभव करते हैं। जैसे- ध्वनि का पता कैसे लगाते हैं या आँखे रंग का पता कैसे लगाती है इत्यादि। इन्हीं उदाहरणों में एक वायरलेस एनर्जी ट्रांसमिशन है जो फैराडे के नियमों तथा लेंज के नियम पर आधारित है, जिसमें बिना तारों को जोड़े हम विद्युत ऊर्जा को एक जगह से दूसरी जगह पहुँचा सकते हैं।

सकारात्मक बदलाव का पाठ्यक्रम

आयुष शर्मा
एम.एस.सी. जंतु विज्ञान, प्रथम वर्ष
चमन लाल महाविद्यालय, लंढौरा, हरिद्वार

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद (एन.सी.ई.आर.टी.) के पाठ्यक्रमों में हुए परिवर्तनों पर इन दिनों विवाद खड़ा हुआ है। पहले भी कई बार एन.सी.ई.आर.टी. के पाठ्यक्रमों में बदलाव हुए हैं। शिक्षा का मूल उद्देश्य विद्यार्थियों में दक्षता और जीवन मूल्यों का निवेश होता है। इन दोनों में से किसी एक का कम होना या ना होना शिक्षा की पूरी अवधारणा को ही समकालीन और भविष्यमुखी बनने से रोकते हैं, लेकिन दुखद है कि शिक्षा के ढांचे में किसी परिवर्तन को आसानी से स्वीकार्यता नहीं मिलती है। यदि नई पाठ्य सामग्री जोड़नी है, तो पुरानी पाठ्य सामग्री में से कुछ हटाना तो पड़ेगा ही। ऐसा नहीं होने पर पाठ्यक्रम सुरसा के मुंह की तरह होता जाएगा और बोझिल बनकर अप्रासंगिक हो जाएगा।

नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति के साथ अध्ययन-अध्यापन में बहुत सी नई बातें भी जुड़ी हैं। अब सारा बल पाठ्यक्रमों को विद्यार्थी केंद्रित बनाने पर है। विद्यार्थी की रुचि अब सर्वाधिक महत्वपूर्ण है। वह कोर पाठ्यक्रम के साथ अब अपनी रूचि का माइनर पाठ्यक्रम चुन सकता है। ऐसे में आज के युवाओं के अनुकूल पाठ्यक्रम बनाना समय की मांग है। यह अकारण नहीं है कि राष्ट्रीय पाठ्यक्रम ढांचे में व्यवसायिक प्रशिक्षण के लिए मिडिल क्लास पर सप्ताह में ढाई घंटे और सेकेंड्री स्तर पर 3 घंटे का समय रखने को कहा गया है। मूल्यांकन में भी 75% प्रैक्टिकल का वेटेज (मान) होगा। अब छठी कक्षा से ही पेशेवर प्रशिक्षण की शुरुआत हो जाएगी वैश्विक महंगाई और बेरोजगारी के कठिन समय में हमें विद्यालय शिक्षा के ढांचे में आवश्यक परिवर्तन-परिवर्धन करने ही होंगे। यह स्वीकृत तथ्य है कि विज्ञान, कंप्यूटर विज्ञान, वाणिज्य और समाज विज्ञान के कई विषय सतत परिवर्धन और परिवर्तन के बिना अप्रासंगिक ज्ञान का कुंड बन जाएंगे। नए शोध हमेशा अग्रगामी होते हैं, उन्हें शामिल किए बिना विषय विशेष न पुनर्नवा हो सकेगा और ना ही ज्ञान की गरिमा से युक्त। विशेषज्ञ समितियाँ ही तय करें कि उन्हें विद्यार्थियों और देश के हित में क्या रखना है और क्या छोड़ना है। आज कंप्यूटर विज्ञान, जीव विज्ञान, भौतिक विज्ञान और विज्ञान की अन्य शाखाओं में 30-40 या 50 वर्ष पहले की सामग्री नहीं पढ़ाई जा रही है, क्योंकि विज्ञान पढ़ने-पढ़ाने वालों ने ज्ञान को महत्व दिया। इसका मतलब यह भी नहीं कि उन्होंने अपने आरंभिक वैज्ञानिकों को विस्मित कर दिया। उन सभी के बारे में स्कूली छात्रों को नहीं, बल्कि उच्च शिक्षा अर्जित करने वालों को पढ़ाया जाना चाहिए।

ऐसे समय में जब प्रतिस्पर्धा वैश्विक है, शिक्षा को गतिशील बनाना ही होगा। पाठ्यपुस्तकों के पाठ्यपुस्तकों के पेजों को और 12वीं तक के छात्रों की ग्रहण क्षमता पर भी विचार जरूरी है। वह

शोधार्थी नहीं है कि उन्हें उस विषय से संबंधित हर एक की जानकारी दे दी जाए। वे तनाव से भरे समकालीन विश्व में जीवन मूल्यों के साथ ही कैरियर की समस्या से भी जूझ रहे हैं। उन्हें पाठ्यक्रमों में ऐसे प्रसंगों को नहीं पढ़ाया जाना चाहिए, जो किसी नकारात्मकता को जन्म देते हो।

जैसे राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की हत्या के संदर्भ में नाथूराम गोडसे का जिक्र आता है उसमें यह बताया जाना कि वह किस जाति से था, अलग किस्म का भाव पैदा करता है। पाठ्यक्रम की यह बनावट स्कूली विद्यार्थी के मन पर क्या असर डालेगी? इतिहास, राजनीति शास्त्र, और साहित्य के पाठ्यक्रमों में हुए बदलाव अक्सर विवाद का विषय बनते रहे हैं। विवाद के बीच बहुत थोड़े से लोग यह देख समझ पाते हैं कि संबंधित विवाद में कोई तथ्य है भी या नहीं।

भारत को स्वतंत्र हुए 75 वर्ष हो चुके हैं। इतनी लंबी कालावधि में बहुत सारा नया इतिहास बना है। बहुत सी ऐसी घटनाएं हुई हैं, जिन्हें आरंभिक कक्षाओं में पढ़ाया जाना चाहिए। जाहिर है, नया जोड़ने के लिए पुराने में से कुछ को हटाना पड़ेगा। तभी तो स्वतंत्र भारत का जरूरी इतिहास विद्यार्थी पढ़ पाएंगे। यह सर्वथा समीचीन है कि संपूर्णता के लिए सुदूर अतीत के साथ निकट अतीत का भी ज्ञान छात्रों को हो। पराजय और षड्यंत्र के इतिहास से अधिक जरूरी है संघर्ष और विजय का इतिहास। यह भी विचारणीय है कि इतिहास के जो प्रसंग एक कक्षा में पढ़ा दिए गए, वही प्रसंग अगली कक्षा में क्यों पढ़ाए जाने चाहिए? दोहराव से ज्ञान बढ़ता नहीं, अरुचिकर हो जाता है। यदि किसी विद्यार्थी को भविष्य में उसी विषय में उच्च शिक्षा अर्जित करनी होगी, तो वह वांछित सामग्री का अध्ययन कर लेगा। तब वहां अध्ययन की कोई सीमा उसके समक्ष नहीं होगी। साहित्य के पाठ्यक्रमों में भी विद्यालय स्तरीय शिक्षा में यह देखा जाना चाहिए कि प्रत्येक स्तर पर लेखकों का दोहराव ना हो। विद्यार्थियों ने जिन लेखकों-कवियों को कक्षा 7 में पढ़ा है, यदि वे ही लेखक कवि उन्हें कक्षा 9 में भी पढ़ाई जाएंगे तो उन विद्यार्थियों में नया क्या जुड़ेगा? बस कहानियां और कविताएं बदल जाएंगे। निश्चित रूप से भिन्न-भिन्न लेखक कवि पढ़ाए जाने पर उनकी रूचि और ज्ञान का विस्तार होगा। विद्यार्थी अपने स्कूली जीवन में अधिक लेखकों कवियों को पढगा तो भविष्य में साहित्य का विद्यार्थी ना होने पर भी वह साहित्यिक-कलात्मक अभिरुचि से संपन्न व्यक्ति के रूप में अपनी पहचान कायम कर सकेगा।

राजनीति शास्त्र के पाठ्यक्रम में भी यह जरूरी है कि छात्रों को वे राजनीति दर्शन भी पढ़ाया जाए, जो स्वतंत्रता आंदोलन के साथ और बाद में देश में विकसित हुए हैं, ऐसे सभी प्रकार के राजनीतिक दर्शनों ने भारतीय जन-मन को प्रभावित किया है। यह कैसे संभव है कि सिर्फ स्वतंत्रता के बाद के आरंभिक वर्षों का चुना हुआ राजनीति इतिहास पढ़ाया जाए, बाकी छोड़ दिया जाए? पाठ्यक्रम निर्धारण में किसी भी विचार की अपेक्षा देश को केंद्र में रखना आवश्यक है।

अभी हम लोगों ने आजादी का अमृत महोत्सव मनाया है। कहने की आवश्यकता नहीं है कि राष्ट्रीय-विकास की प्रक्रिया का आधार तभी तैयार होता है, जब लोग यथास्थिति-वाद का मार्ग छोड़ पाते हैं।

नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति

साक्षी
बी.ए. प्रथम वर्ष
चमन लाल महाविद्यालय, लंढौरा, हरिद्वार

मानव संसाधन विकास मन्त्रालय (MHRD) ने नई शिक्षा नीति (NEP) को मंजूरी दे दी है। इस नई एजुकेशन पॉलिसी से स्कूल व कॉलेज स्तर तक शिक्षा प्रणाली में कई बदलाव आएंगे। MHRD की इस नई नीति में स्कूल एजुकेशन से लेकर हायर एजुकेशन तक कई बड़े बदलाव किए गए हैं। उच्च शिक्षा के लिए सिंगल रेगुलेटर रहेगा (लॉ और मेडिकल एजुकेशन को छोड़कर)। साथ ही उच्च शिक्षा में 2035 तक 50 फीसदी GER पहुँचने का लक्ष्य है। ई-पाठ्यक्रम क्षेत्रीय भाषाओं में विकसित किया जाएगा। वर्चुअल लैब विकसित की जा रही हैं और एक राष्ट्रीय शैक्षिक टैक्नोलॉजी फोरम (NETE) बनाया जा रहा है। देश में उच्च शिक्षा के लिए एक ही नियामक (Regulator) होगा, इससे अप्रूवल और वित्त के लिए अलग-अलग वर्टिकल होंगे। वो नियामक Online, Self-disclosure Based Transparent System पर काम करेगा। पढ़ाई की रूपरेखा 5 + 3 + 3 + 4 के आधार पर तैयारी की जाएगी।

इसके अन्तिम 4 वर्ष नौवीं से बारहवीं शामिल है। नया कौशल विकास पाठ्यक्रम (जैसे कोडिंग) शुरू किया जाएगा। एक्स्ट्रा कैरिकुलर एक्टिविटीज़ को मेन कैरिकुलम में शामिल किया जाएगा।

NEP- नई शिक्षा नीति के कुछ अन्य महत्वपूर्ण पहलू-

- वर्ष 2030 तक हर जिले में या उसके पास कम-से कम एक बड़ा मल्टी सब्जेक्ट हाई इंस्टीट्यूशन होगा।
- 2040 तक सभी उच्च शिक्षा संस्थानों को Multi-Subject Institution बनाना होगा, जिसमें 3,000 से अधिक छात्र होंगे।
- संस्थानों का पाठ्यक्रम ऐसा होगा कि सार्वनजिक संस्थानों के विकास पर उसमें ज़ोर दिया जाए।
- साथ ही संस्थानों के पास Open Distance Learning और ऑनलाइन कार्यक्रम चलाने का विकल्प होगा।
- हायर एजुकेशन (उच्च शिक्षा) के लिए बनाए गए सभी तरह के डीम्ड और संबंधित विश्वविद्यालय को सिर्फ अब विश्वविद्यालय के रूप में ही जाना जाएगा।
- मानव के बौद्धिक, सामाजिक, शारीरिक, भावनात्मक और नैतिक (Intellectual, Social, Physical, Emotional & Moral) सभी क्षमताओं को एकीकृत तौर पर विकसित करने का लक्ष्य है।

5 + 3 + 3 + 4 का स्कूली पाठ्यक्रम– इस घटक के तहत् शिक्षा की रूपरेखा को 5 + 3 + 3 + 4 के स्कूली पाठ्यक्रम में विकसित किया जाएगा जिसमें 3 से लेकर 8, 8 से लेकर 11, 11 से लेकर 14 एवं 14 से लेकर 18 वर्ष की आयु तक के बच्चे शिक्षा की प्राप्ति कर सकेंगे। शिक्षा की इस नई रूपरेखा के तहत् पहले भाग में प्री-स्कूल के 3 साल एवं प्राथमिक स्कूल की पहली और दूसरी कक्षा, कक्षा 3 से 5, कक्षा 6 से 8 और कक्षा 9 से 12 को शामिल किया गया है। विद्यार्थियों का समग्र विकास करने के लिए यह रूपरेखा तैयार की गई है।

उच्च शिक्षा में गुणात्मक सुधार की आवश्यकता

रीटा सैनी

एम. लिब.

peu yky egkfo|ky;] yakSj] gfj}kj

प्राचीन भारत के तक्षशिला, नालन्दा, विक्रमशिला जैसे विश्वविद्यालय इस बात के सशक्त प्रमाण हैं कि प्राचीन समय से ही भारतवर्ष में उच्च शिक्षा को प्राथमिकता प्रदान की जाती रही है। इसी प्रकार आधुनिक युग में भी उच्च शिक्षा किसी भी राष्ट्र अथवा समाज में व्यक्तिगत सामाजिक, आर्थिक एवं राजनैतिक प्रगति का मापदण्ड मानी जाती है।

स्वतंत्रता प्राप्ति से पूर्व विदेशी शासकों ने भी उच्च शिक्षा की आवश्यकता की कभी अनदेखी नही की व स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् भारत की प्रथम प्रजातान्त्रिक सरकार ने उच्च शिक्षा को महत्व देते हुए सन् 1948 में 'राधाकृष्णन आयोग' का गठन किया गया जिसने विश्वविद्यालय अनुदान आयोग की स्थापना तकनीकी शिक्षा के महत्व जैसे महत्वपूर्ण विषयों पर अपना प्रतिवेदन 1949 में प्रस्तुत किया।

इसके पश्चात् 1964-66 में कोठारी आयोग की स्थापना के साथ ही भारतीय उच्च शिक्षा को नीति के रूप में वैश्विक स्तर पर प्रस्तुत किया। सन् 1968 में देश की प्रथम उच्च शिक्षा नीति का निर्माण कर इसे और अधिक विकसित करने का प्रयास किया।

सन् 1986 में दूसरी उच्च शिक्षा नीति का निर्माण किया गया। परन्तु 1968 में 1986 में तथा 1992 में शिक्षा नीति में कुछ महत्वपूर्ण संशोधन करते हुए उच्च शिक्षा को वैश्विक परिदृश्य के अन्तर्गत मात्रात्मक रूप से विकसित करने का प्रयास किया गया। परन्तु वर्तमान में आवश्यकता इस बात की है कि उच्च शिक्षा में मात्रात्मक विकास एवं विस्तार के साथ इसमें गुणात्मक पक्ष को भी विकसित किया जाए।

वर्तमान में आवश्यकता इस बात की है कि सरकार द्वारा नई उच्च शिक्षा नीति को निर्मित करते समय कुछ अत्यधिक व्यवहारिक एवं आवश्यक बिन्दुओं पर भी ध्यान दिया जाए ताकि उच्च शिक्षा देश के सर्वांगीण विकास में महत्वपूर्ण योगदान दे सके। अतः सुझाव स्वरूप कुछ मुख्य बिन्दुओं पर विचार करना उपयोगी हो सकता है।

- उच्च शिक्षा की गुणवत्ता हेतु सम्बद्धता प्रणाली में सुधार की आवश्यकता है। जैसे विश्वविद्यालयों की कार्य परिषद्, विद्या परिषद् तथा वित्त परिषद् के गठन और अनेक निर्णयों को लागू करने के मामले में सर्वोच्च अधिकार विश्वविद्यालयों के पास ही होने चाहिए। साथ ही विश्वविद्यालय अनुदान आयोग तथा राज्य शासन दोनों के द्वारा निर्धारित मानकों की अवहेलना कर महाविद्यालय

स्थापित अथवा सम्बद्ध नहीं किए जाने चाहिए। यहाँ न्यूनतम के स्थान पर आदर्श मानदण्ड अपनाए जाने चाहिए।

- केन्द्रीय विश्वविद्यालय को शोध सम्बन्धी उच्च लक्ष्य दिए जाने चाहिए तथा केन्द्रीय विश्वविद्यालय के अनुदान को उनकी उपलब्धियों के साथ जोड़ा जाना चाहिए। प्रत्येक केन्द्रीय विश्वविद्यालय को कम से कम एक क्षेत्र में 'सेन्टर ऑफ एक्सीलेंस' के तौर पर विकसित किया जाना भी अनिवार्य होना चाहिए।
- भारत को रैंकिंग हेतु अपनी पद्धति तैयार करनी चाहिए, क्योंकि विश्व रैंकिंग बड़ी हद तक यूरोप और अमेरिका के संस्थानों के अनुरूप है। इसके लिए राष्ट्रीय आयोग गठित किया जा सकता है। स्ववित्त पोषित एवं निजी संस्थाओं को भी प्रत्यायन के दायरे में लाया जाना चाहिए।
- विश्वविद्यालयों को सांस्कृतिक-साम्प्रदायिक एकीकरण पर आधारित पाठ्यक्रम शुरू किये जाने चाहिए और इन्हें सभी उपाधियों में अनिवार्य तौर पर पढ़ाया जाना चाहिए। राष्ट्रीय एवं सांस्कृतिक एकीकरण के लिए स्नातक एवं स्नातकोत्तर के छात्र-छात्राओं को अपनी उपाधि का एक हिस्सा देश के किसी दूसरे हिस्से के विश्वविद्यालय में पूरी करने की सुविधा प्रदान की जानी चाहिए।
- रोज़गार बढ़ाने के लिए उच्च शिक्षा को सर्वोच्च प्राथमिकता पर रखना चाहिए। विश्वविद्यालयों को ऐसे पाठ्यक्रम शुरू करने चाहिएं जो सीधे तौर पर कौशल आधारित रोज़गार से जुड़े हों। स्नातक स्तर के अध्ययन कार्यक्रमों को स्थानीय आयोगों और पेशों की ज़रूरत के अनुरूप परिवर्तित किया जाना चाहिए ताकि स्नातक उपाधि का रोज़गार से सीधा संबंध बन सके।
- प्राचीन एवं लुप्त प्राय भाषाओं के संरक्षण हेतु कुछ विश्वविद्यालयों को क्षेत्रीय उपभाषा को लिपिबद्ध किया जाना चाहिए एवं इनके शब्दकोष भी तैयार किए जाने चाहिएं।
- विश्वविद्यालयों में परिणाम आधारित अनुसंधान के लिए वित्त उपलब्ध कराया जाना चाहिए। परन्तु वित्त किसी एक व्यक्ति के बजाय पूरी टीम को उपलब्ध कराना चाहिए। इसमें अन्तर्विषयी शोध को बढ़ावा दिया जाना चाहिए।
- उच्च शिक्षा में नीति क्षेत्र की भागीदारी को सीमित रखा जाना चाहिए। निजी क्षेत्र का ज़ोर लाभ कमाने पर होता है जबकि उच्च शिक्षा का क्षेत्र लाभ कमाने के लिए नहीं है। रख-रखाव के सभी कार्य निजी क्षेत्रों को दिए जा सकते हैं। किन्तु इसके लिए इन्हें नीति निर्माण में हस्तक्षेप का अधिकार नहीं दिया जाना चाहिए।

ग्रुप ऑफ ट्वेंटी (जी-20)

नीलू
बी.कॉम. द्वितीय वर्ष
चमन लाल महाविद्यालय, लण्ढौरा, हरिद्वार

ग्रुप ऑफ ट्वेंटी (जी-20) अंतर्राष्ट्रीय आर्थिक सहयोग का प्रमुख मंच है। यह सभी प्रमुख अंतर्राष्ट्रीय आर्थिक मुद्दों पर वैश्विक संरचना और अधिशासन निर्धारित करने तथा उसे मजबूत करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। भारत 1 दिसम्बर 2022 से 30 नवम्बर 2023 तक जी-20 की अध्यक्षता करेगा।

1- जी-20 की स्थापना- जी-20 की स्थापना 1999 में एशियाई वित्तीय संकट के बाद वित्त मन्त्रियों और केन्द्रीय बैंक के गवर्नरों के लिए वैश्विक आर्थिक और वित्तीय मुद्दों पर चर्चा करने के लिए एक मंच के रूप में की गई थी।

2- नेता-स्तरीय समुन्नयन- 2007 के वैश्विक आर्थिक और वित्तीय संकट के मद्देनज़र जी-20 को राष्ट्राध्यक्षों/शासनाध्यक्षों के स्तर तक उन्नत किया गया था और 2009 में इसे "अंतर्राष्ट्रीय आर्थिक सहयोग हेतु प्रमुख मंच" के रूप में नामित किया गया था।

जी-20 शिखर सम्मेलन प्रतिवर्ष एक क्रमिक अध्यक्षता में आयोजित किया जाता है। शुरुआत में जी-20 व्यापक आर्थिक मुद्दों पर केन्द्रित था, परन्तु बाद में इसके एजेंडे में विस्तार करते हुए इसमें अन्य बातों के साथ व्यापार, जलवायु परिवर्तन, सतत् विकास, स्वास्थ्य, कृषि, ऊर्जा, पर्यावरण और भ्रष्टाचार-विरोध को शामिल किया गया। जी-20 की अध्यक्षता कर रहा राष्ट्र अन्य सदस्यों के परामर्श से और वैश्विक अर्थव्यवस्था में विकास के जवाब में जी-20 एजेंडा को साथ लाने के लिए ज़िम्मेदार है।

3- जी-20 के सदस्य- ग्रुप ऑफ ट्वेंटी (जी-20) में 19 देश (अर्जेंटीना, ऑस्ट्रेलिया, ब्राज़ील, कनाडा, चीन, फ्रांस, जर्मनी, भारत, इंडोनेशिया, इटली, जापान, कोरिया गणराज्य, मैक्सिको, रूस, सऊदी अरब, दक्षिण अफ्रीका, तुर्किये, युनाइटेड किंग्डम और संयुक्त राज्य अमेरिका) और यूरोपीय संघ शामिल हैं। जी-20 सदस्य देशों में वैश्विक सकल घरेलू उत्पाद का लगभग 85% वैश्विक व्यापार का 75% से अधिक और विश्व की लगभग दो-तिहाई आबादी है।

जी-20 प्रेज़ीडेंसी-

इंडोनेशिया	भारत	ब्राज़ील
2022	2023	2024

- जी-20 अध्यक्षता के तहत् एक वर्ष के लिए जी-20 एजेन्डा का संचालन किया जाता है और शिखर सम्मेलन का आयोजन किया जाता है। जी-20 में दो समानांतर ट्रैक होते हैं- वित्त ट्रैक और शेरपा ट्रैक वित्त मंत्री और सेन्ट्रल बैंक के गवर्नर वित्त ट्रैक का नेतृत्व शेरपा करते हैं।
- शेरपा पक्ष की ओर से जी-20 प्रक्रिया का समन्वय सदस्य देशों के शेरपाओं द्वारा किया जाता है जो नेताओं के निजी प्रतिनिधि होते हैं।
- इसके अलावा ऐसे सम्पर्क समूह हैं जो जी-20 देशों के नागरिक समाजों, सांसदों, विचार मंचों, महिलाओं, युवाओं, श्रमिकों, व्यवसायों और शोधकर्त्ताओं को एक साथ लाते हैं।

जी-20

तनु सिंह
एम.ए. इतिहास, द्वितीय वर्ष
चमन लाल महाविद्यालय, लण्ढौरा, हरिद्वार

बीस वित्त मन्त्रियों और सेन्ट्रल बैंक के गवर्नर्स का समूह जो कि विश्व की 20 प्रमुख अर्थव्यवस्थाओं के वित्त मन्त्रियों और केन्द्रीय बैंकों के गवर्नर्स का एक संगठन है, जिसमें 19 देश और यूरोपीय संघ शामिल है। जिसका प्रतिनिधित्व यूरोपीय परिषद के अध्यक्ष और यूरोपीय केन्द्रीय बैंक द्वारा किया जाता है। 17वें जी-20 शिखर सम्मेलन का आयोजन 9-10 सितम्बर 2023 को दिल्ली (भारत) में प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी की अध्यक्षता में सम्पन्न होगा।

जी-20 अंतर्राष्ट्रीय आर्थिक सहयोग का प्रमुख मंच है। यह सभी प्रमुख अंतर्राष्ट्रीय आर्थिक मुद्दों पर वैश्विक संरचना और अधिशासन निर्धारित करने तथा उसे मजबूत करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। जी-20 की स्थापना साल 1999 में इन्हीं मुद्दो के निवारण हेतु हुई थी। इसका प्रतिनिधित्व करने वाले देशों का विश्व के सकल घरेलू उत्पाद का लगभग 25% और इसकी जनसंख्या का दो तिहाई हिस्सा है। इस बार जी-20 का आदर्श वाक्य बहुत ही उपयोगी है जो वसुधैव कुटुंबकम के बुनियादी नज़रिए के साथ आगे बढ़ेगा। 'एक धरती, एक परिवार, एक भविष्य' का आदर्श वाक्य इसे बेहतरीन रूप से दर्शाता है। भारत में बड़े स्तर पर इस कार्यक्रम को प्रोत्साहित बनाने के लिए सरकार द्वारा महाविद्यालयों, विश्वविद्यालयों में इससे जुड़े कार्यक्रमों पर ज़ोर दिया जा रहा है ताकि इस कार्यक्रम से जी-20 के महत्व को सभी जान सकें।

बालश्रम अपराध

दिव्या
एम.ए. समाजशास्त्र, प्रथम वर्ष
चमन लाल महाविद्यालय, लंढौरा, हरिद्वार

बालश्रम का अर्थ- बालश्रम एक अपराध है जो बच्चों के द्वारा उनके बाल्यकाल में करवाया गया श्रम का काम है। बालश्रम को बाल मज़दूरी भी कहा जाता है। बालश्रम कराना भारत के साथ कई देशों में गैर कानूनी है। बालश्रम एक कठोर अपराध है जिसे बच्चों को खेलने-कूदने के उम्र में उनसे काम करवाया जाता है।

बालश्रम एक अभिशाप है जिसने अपना ऐसा जाल पूरे देश में बिछा दिया है कि प्रशासन की लाख कोशिशों के बाद भी यह अपना प्रचंड रूप लेने में सफलता प्राप्त कर रहा है।

बालश्रम एक अवैध श्रम- बालश्रम पूर्ण रूप से अवैध है। जब किसी बच्चे को उसके बाल्यकाल से वंचित कर उन्हें मजदूरी करने के लिए विवश किया जाता है उसे बालश्रम अथवा बाल मज़दूरी कहते हैं। बच्चों को उनके परिवार से दूर रखकर उन्हें गुलामों की तरह पेश किया जाता है। अगर सामान्य शब्दों में समझा जाए तो 14 वर्ष से कम आयु के बच्चों से मज़दूरी कराने को बाल मज़दूरी कहते हैं। उनसे उनका बचपन, खेलकूद, शिक्षा का अधिकार छीनकर उन्हें काम में लगाकर शारीरिक, मानसिक और सामाजिक रूप से प्रताड़ित करना ही बालश्रम कहलाता है। बालश्रम हमारे समाज के लिए एक गम्भीर समस्या बन चुका है।

भारत में बालश्रम के कारण- आज बालश्रम की कुप्रथा पूरे देश में फैल चुकी है। हमारे समाज के लिए बालश्रम एक अभिशाप बन चुका है। सरकार द्वारा चलाए गए कई अभियान, नियम कानून के बाद भी भारत में बालश्रम बंद नहीं हुआ। भारत देश की ज्यादातर आबादी गरीबी से पीड़ित है। कुछ परिवारों के लिए भरपेट खाना भी एक सपना-सा लगता है। गरीबी से पीड़ित लोग बहुत बार अपनों को खोने के गम से अवगत हो चुके हैं। गरीबी की वजह से गरीब माता-पिता अपने बच्चों को घर-घर और दुकानों में काम करने के लिए भेजते हैं। यह निर्णय बेशक अपने परिवार का पेट पालने के उद्देश्य से लिया जाता है परन्तु ऐसे निर्णय बच्चों की शारीरिक और मानसिक अवस्था को झंझोर कर रख देते हैं।

कम मूल्य पर काम करवाना - अधिकतर दुकान और छोटे व्यापारी बच्चों से अधिक काम करवाते हैं लेकिन उन्हें कीमत आधी देते हैं क्योंकि वो बच्चे होते हैं। व्यापार में उत्पादन लागत कम हो जाने की वजह से भी कुछ व्यापारी बच्चों की ज़िन्दगी बर्बाद कर देते हैं। हमारे देश की आज़ादी के बाद भी बहुत इलाके ऐसे हैं जहाँ के बच्चे आज तक शिक्षा जैसे मौलिक अधिकार से वंचित हैं। हमारे देश

में हज़ारों गाँव हैं जहाँ पर पढ़ाई की कोई अच्छी व्यवस्था नहीं है। इससे सबसे ज़्यादा पीड़ित गरीब परिवार होते हैं क्योंकि अपने बच्चों को उचित शिक्षा देना एक सपना रह जाता है। किफायती स्कूलों की कमी होना बच्चों को अशिक्षित और बेबस रहने पर मजबूर कर देता है। यह बच्चों को पढ़ाई के बिना जीवन जीने के लिए मजबूर कर देता है और कभी-कभी ये मजबूरियाँ उन्हें बालश्रम की खाई में धकेल देती हैं जिससे आज तक किसी का भी भला नहीं हुआ न ही कभी होगा। बहुत से परिवारों में बालश्रम को परम्परा और रीति का नाम देकर बच्चों से बाल मज़दूरी करवाई जाती है।

बालश्रम के परिणाम- बच्चों को कुछ रुपए देकर मज़दूरी करवाने से कई बुरे परिणाम होते हैं जैसे कि बच्चा अशिक्षित रह जाता है, अज्ञानी बन जाता है। बालश्रम कराने से देश का आने वाला कल अंधकार की ओर जाने लगता है। इसके साथ ही बेरोज़गारी और गरीबी और अधिक बढ़ने लगी है। जिस उम्र में बच्चों को सही शिक्षा मिलनी चाहिए, खेलकूद के माध्यम से अपने मस्तिष्क का विकास करना चाहिए, उस उम्र में बच्चों से काम करवाकर बच्चों का शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक और सामाजिक विकास रोक देते हैं।

शिक्षा का अधिकार- शिक्षा का अधिकार एक मूल अधिकार है। शिक्षा से किसी भी बच्चे को वंचित रखना बड़ा अपराध माना जाता है। बच्चों का कारखाने में काम कराकर उनकी ज़िन्दगी से खिलवाड़ कराने वाले व्यापारी को कड़ी सज़ा दी जानी चाहिए। किसी भी बच्चे के लिए बालश्रम बहुत अधिक खतरनाक होता है।

बालश्रम रोकने के उपाय- बालश्रम हमारे समाज के लिए एक अभिशाप है जो हमारे देश की विकास को आगे बढ़ने से रोक देता है। बालश्रम रोकने के कई उपाय हैं जैसे बालश्रम का अंत करने के लिए सबसे पहले अपने घरों या दफ्तरों में किसी भी बच्चे को काम पर नहीं रखना चाहिए। हमें हमेशा इस बात को ध्यान में रखना चाहिए कि बच्चे से काम करवाने के बदले उसे पैसे देकर या खाना देकर हम उन पर कोई एहसान या मदद नहीं करते हैं बल्कि हम उनके भविष्य के साथ खिलवाड़ करते हैं। बालश्रम को रोकने के लिए मजबूत और कड़े कानून बनाने चाहिए जिससे कोई बाल मज़दूरी न करवाए। गरीब माता-पिता को अपने बच्चों की शिक्षा की ओर पूरा ध्यान देना चाहिए तभी भारत देश एक बाल मज़दूरी मुक्त देश कहलाएगा।

उपसंहार- बालश्रम एक अपराध है जो बच्चों के द्वारा अपने बाल्यकाल में करवाया गया श्रम या काम है। बालश्रम को बाल मज़दूरी भी कहा जाता है। बालश्रम को खत्म करना केवल सरकार का ही कर्त्तव्य नहीं है बल्कि हम इस अभियान में सरकार का पूरा साथ दें। सरकार इस अभियान को सफल बनाने के लिए बहुत प्रयास कर रही है। बालश्रम एक बहुत बड़ी सामाजिक समस्या है। इस समस्या को जल्द से जल्द खत्म करने की ज़रूरत है।

महिला सशक्तिकरण

डॉली
एम.ए. समाजशास्त्र, प्रथम वर्ष
चमन लाल महाविद्यालय, लंढौरा, हरिद्वार

महिलाएँ हैं देश की तरक्की का आधार
उनके प्रति बदलो अपने विचार।

प्रस्तावना- प्राचीन युग से हमारे समाज में नारी का विशेष स्थान रहा है। पौराणिक ग्रंथों में नारी को पूजनीय एवं देवी तुल्य माना गया है। हमारी धारणा यह रही है कि जहाँ समस्त नारी जाति को प्रतिष्ठा व सम्मान की दृष्टि से देखा जाता है वहीं पर देवता निवास करते हैं।

नारी का स्थान- जिस समाज में नारी का स्थान सम्मानजनक होता है, वह उतना ही प्रगतिशील और विकसित होता है। परिवार और समाज के निर्माण में नारी का स्थान सदैव ही महत्वपूर्ण रहा है। सीता, सावित्री, अनुसूया, गायत्री आदि अनगिनत भारतीय नारियों ने अपना विशिष्ट स्थान सिद्ध किया है।

प्राचीनकाल में नारी की स्थिति- भारतीय समाज में वैदिक काल से ही नारी का स्थान बहुत ही सम्मानजनक था और हमारा अखण्ड भारत विदुषी नारियों के लिए जाना ही जाता है। किन्तु कालान्तर में नारी की स्थिति का ह्रास हुआ। मध्यकाल आते-आते यह स्थिति अपनी चरम सीमा पर पहुँच गई क्योंकि अंग्रेज़ों का मक़सद भारत पर शासन करना था न कि भारत के रीति-रिवाज़ों, मान्यताओं और समाज सुधार करना था। इसलिए ब्रिटिश शासन काल में भारतीय नारियों की स्थिति में कोई विशेष सुधार नहीं हुआ। अपवाद के रूप में कुछ छोटी-मोटी पहल ज़रूर हुई पर इसका कोई विशेष प्रभाव नारी की स्थिति में नहीं हुआ।

मध्यकाल में नारी की स्थिति- कालांतर में देश पर हुए अनेकों आक्रमण के पश्चात् भी भारतीय नारियों की दशा में भी परिवर्तन आने लगा। नारी के स्वयं की विशिष्टता एवं समाज में स्थान छीन-हीन होता चला गया। अंग्रेज़ी शासन काल के आते-आते भारतीय नारियों की स्थिति बहुत ही खराब हो गई। उसे अबला की संज्ञा दी जाने लगी तथा दिन-प्रतिदिन उसे उपेक्षा और तिरस्कार का

सामना करना पड़ता। आज़ादी के बाद ऐसा सोचा गया था कि भारतीय नारी एक नई हवा में सांस लेंगी और शोषण और उत्पीड़न से मुक्त होगी किन्तु ऐसा आज़ादी के बाद कानूनी स्तर पर नारी की स्थिति को सुधारने के लिए प्रयास तो खूब हुए किन्तु सामाजिक स्तर पर जो सुधार आना चाहिए वह परिलक्षित नहीं हुआ।

आज़ादी के बाद भारत में नारी की स्थिति- भारतीय नारी के साथ विरोधाभास की स्थिति सदैव रही है। पहले भी थी, आज भी है। हमारी प्रार्थना, धर्मग्रंथों में 'यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता: सूत्र वाक्य द्वारा यह स्पष्ट करने का प्रयास किया गया है।

भारत में महिलाओं के सशक्तिकरण के लिए राष्ट्रीय, राज्य और स्थानीय स्तर पर बहुत से कानून, कार्यक्रम, संगठन मौजूद हैं जो महिलाओं को जागरूक करते हैं। उन्हें इस काबिल बना रहे हैं कि वह अपने अधिकारों के लिए लड़ सके और अपने ऊपर हो रही हिंसा पर रोक लगा सके।

उपसंहार- महिला सशक्तिकरण आज के समय की ज़रूरत है क्योंकि इसी सशक्तिकरण की वजह से महिलाओं में हो रही प्रगति भी देश के विकास के लिए बहुत ज़्यादा ज़रूरी है इसलिए देश के सभी छोटे-बड़े क्षेत्रों में महिला सशक्तिकरण की जागरुकता फैलाना बहुत ज़रूरी है।

तीन तलाक

सोनिया
बी.ए. प्रथम वर्ष
चमन लाल महाविद्यालय, लण्ढौरा, हरिद्वार

तीन तलाक़ का मुद्दा- मुस्लिम समाज में बिना निकाह के किसी पुरुष का किसी महिला के साथ अपनी इच्छा से एक-दूसरे के साथ जीवन व्यतीत करना बहुत बड़ा अपराध माना गया है। मुस्लिम समाज में कोई पुरुष किसी भी महिला के साथ तभी रह सकता है जब वह पुरुष मुस्लिम समाज के सामने अपने वैवाहिक जीवन की ज़िम्मेदारियों को उठाने की कसम खाता है।
साथ ही साथ दोनों परिवारों की आपसी सहमति से तय की गई रकम को मेहर के रूप में महिला को देकर उससे निकाह अर्थात् विवाह करता है।

तीन तलाक़ क्या है?- यदि आपसी वैचारिक मतभेद या फिर किसी भी कारणवश वह पुरुष अपनी पत्नी को किसी भी माध्यम से चाहे वो मोबाइल पर मैसेज भेजकर या फिर स्वयं तीन बार तलाक़ बोलकर या लिखकर अपनी पत्नी को और स्वयं को उस वैवाहिक संबंध से किसी भी समय अलग कर सकता है इसे ही तीन तलाक़ कहा जाता है।

तीन तलाक़ की समस्या- पहले के समय में महिलाएँ अपने घर के काम में ही हमेशा व्यस्त रहती थीं इसलिए आर्थिक रूप से अपने पति के ऊपर निर्भर रहती थीं। अगर ऐसी स्थिति में उसका पति उसको तलाक़ दे देता था तो उन्हें अपना जीवन चलाना अपने बच्चों की देखभाल करना तथा अपने जीवन-यापन के लिए पैसे अर्जित करने में बहुत सारी परेशानियों का सामना करना पड़ता था। और अकेले ही अपने जीवन का निर्वाह करना पड़ता था।

तीन तलाक़ कानून क्या है?- पहले तीन तलाक़ के तहत् कोई पति-पत्नी को तीन बार तलाक़ बोलकर छोड़ देता था लेकिन यह अब गैर-कानूनी है। तीन तलाक़ कानून के अंतर्गत अगर कोई पति अपनी पत्नी को तीन बार तलाक़ बोलकर छोड़ देता है तो उसे कानूनन तीन साल की सज़ा हो सकती है और पुलिस बिना वारंट के गिरफ्तार कर सकती है।

जल संरक्षण : आज की आवश्यकता

पूजा धनकर
एम. लिब.
चमन लाल महाविद्यालय, लण्ढौरा, हरिद्वार

कहाँ गई वह मधुर कोयल की कुहू-कुहू?
बंद कर दिया है पपीहे ने कहना पीहू-पीहू।
सबसे कहता है ये मौसम का बदलता मिजाज़,
दस्तक दे रही है बिगड़ती जलवायु की गूँज,
इस गूँज ने दी है अब जीवन के दरवाज़े पर दस्तक,
देखते रहे, आसमान की ओर टकटकी लगाए कब तक?
बारिश की फुहारों से भीगेगा घर आँगन और उपवन,
या सूख कर बन जाएंगे, बड़े-बड़े वृक्षों के ठूँठ
धरती बंजर हो जाएगी, बादल नहीं बरसेंगे,
और हम सभी पानी की एक-एक बूँद को तरसेंगे।
धरती का गर्भ भी कर दिया है खाली-खाली,
खींचकर निकाल लिया पम्प से पेट्रोल और पानी,
सूख गई है सरस्वती, सिमट गई है गंगा,
पानी की कमी से न होगी बिजली न चलेगा पंखा,
पानी के बिना जीवन की कल्पना करे यदि मानव,
कितनी भयंकर होगी यह बात सूर्य देवता बने दानव।
सिर पर कड़ी धूप और नीचे धरती जलती,
नहीं मिलेंगी पानी की कुछ बूँदें जो हलक को तर करती,
अब भी सचेत हो मानव यदि पर्यावरण को बचा ले,
निज स्वार्थ छोड़कर प्रकृति को मित्र बना ले,
पर्यावरण बचाने के लिए हरे-भरे जंगलों को बचाना होगा,
जीवन को बचाने के लिए कुछ भौतिक सुख तो गँवाना होगा।

नमामि गंगे परियोजना : सुधर रही है गंगा की सेहत

अनुराधा
बी.ए. प्रथम वर्ष
चमन लाल महाविद्यालय, लण्ढौरा, हरिद्वार

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की सर्वोच्च प्राथमिकता वाली नमामे गंगे परियोजना की प्रशंसा संयुक्त राष्ट्र के पर्यावरण कार्यक्रम सी.ओ.पी. 15 के दौरान एक रिपोर्ट में की गई। यह सम्मेलन कनाडा में संयुक्त राष्ट्र का पन्द्रहवाँ जैव विविधता सम्मेलन है। यह एक बड़ी उपलब्धि है क्योंकि गंगा केवल एक पानी की नदी भर नहीं है, बल्कि उसके किनारों पर 52 करोड़ लोग रहते हैं। भारत की कुल जी.डी.पी. का 40 प्रतिशत हिस्सा इसी गंगा के पानी से उपजने वाली फसल और पर्यटन से मिलता है, क्योंकि गंगा के किनारे बसे प्रत्येक प्रमुख शहर से भारतीय संस्कृति की एक ऐसी कहानी जुड़ी हुई है जो सनातन संस्कृति और धर्म को मूल्यवान बनाती है। वाराणसी का अभूतपूर्व कायाकल्प हो जाने से इस धर्मनगरी का महत्व पर्यावरण के क्षेत्र में स्वीकार हुआ है। फलत: यहाँ देश के साथ-साथ दुनिया से आने वाले पर्यटकों की उम्मीद से कहीं ज़्यादा संख्या बढ़ी है। जैव विविधता की दृष्टि से भी इस जीवनदायी नदी की सफाई ज़रूरी थी, जिससे 52 करोड़ लोग निरोगी रहते हुए जीवनयापन कर सकें।

संयुक्त राष्ट्र जैव विविधता सम्मेलन में जारी हुई रिपोर्ट में स्वीकार किया गया है कि हिमालय से बंगाल की खाड़ी तक 2,525 किलोमीटर की लम्बाई में बहने वाली इस नदी को जलवायु परिवर्तन, जनसंख्या वृद्धि, प्रदूषण और औद्योगिकीकरण से बड़ा नुकसान हुआ है। लेकिन प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी द्वारा नमामि गंगे परियोजना ने नदी के 1,500 किलोमीटर हिस्से को प्रदूषण मुक्त कर इसे पुनर्जीवित किया है। इस क्षेत्र में नदी के जल ग्रहण क्षेत्र की सफाई के साथ-साथ इसके किनारों पर तीस (30) हज़ार एकड़ में नए वन लगाने के साथ, पुराने जंगल का भी उचित संरक्षण किया गया। ऐसा यू.एन. का अनुमान है कि यदि इस जंगल की बहाली नहीं हो तो तो 2023 तक 25 करोड़ टन कार्बन उत्सर्जन की मात्रा बढ़ती जो इस क्षेत्र की आबादी, जल जीवों और पशु-पक्षियों के लिए बड़े संकट का सबब बन सकती थी, लेकिन कार्बन उत्सर्जन की मात्रा घट रही है। इस परियोजना के लक्ष्यों में वन्यजीव प्रजातियाँ का संरक्षण एवं उन्हें पुनर्जीवित करना भी था। इनमें डॉल्फिन, घड़ियाल, कछुए, ऊदबिलाव और हिल्सा मछली शामिल हैं।

पर्यावरण सुधरेगा तो अन्य पशु-पक्षियों को भी जीवनदान मिलेगा- इस अत्यंत महत्वपूर्ण योजना के अन्तर्गत गंगा में गिरने वाले जल को रोकने के साथ-साथ इसके दोनों किनारों पर वन क्षेत्र विकसित करने का अभियान अभी भी चल रहा है। हालाँकि यह परियोजना करीब 35

वर्ष पहले गंगा कार्य योजना के रूप में शुरू हुई थी, तबसे इस पर हजारों करोड़ रुपए खर्च कर दिए गए। नरेन्द्र मोदी ने गंगा की चिन्ता वाराणसी से 2014 में लोकसभा का प्रत्याशी बनने के साथ जताई थी इसलिए उन्होंने सत्तारूढ़ होने के बाद इस परियोजना को नमामि गंगे नाम देते हुए उसकी सफाई के लिए एक अलग मन्त्रालय भी बना दिया। इसके बाद से इसके कारगर परिणाम देखने में आए हैं। इसके किनारों पर जो हरित पट्टी विकसित की गई है, उससे न केवल इन इलाकों के खेतों की सेहत सुधरेगी बल्कि मनुष्य और पशुओं की भी सेहत सुधरेगी तथा लोगों को पीने के लिए भी स्वच्छ जल मिलेगा।

केन्द्रीय वित्त पोषण से शुरू हुई इस योजना से भारतीय सभ्यता, संस्कृति और आजीविका की जीवन रेखा कहलाने वाली गंगा का न केवल कायाकल्प इसका साक्षात् उदाहरण है- अब तक गंगोत्री से गंगा सागर तक के सफर में गंगा जल को औद्योगिक हितों के लिए निचोड़कर प्रदूषित करने में चमड़ा, चीनी, रसायन, शराब और जल विद्युत परियोजनाएँ सहभागी बन रही थीं। इनमें से अनेक को या तो बंद कर दिया गया है, या फिर दूषित जल के शुद्धिकरण के संयंत्र स्थापित करा दिए गए हैं। गंगा सफाई की पहली बड़ी पहल राजीव गाँधी के प्रधानमंत्रित्व कार्यकाल में हुई थी, लेकिन गंगा नाममात्र भी शुद्ध नहीं हुई। इसके बाद गंगा को प्रदूषण के अभिशाप से मुक्ति के लिए संप्रग सरकार ने इसे राष्ट्रीय नदी घोषित करते हुए, गंगा बेसिन प्राधिकरण का गठन किया। भाजपा ने गंगा को 2014 में आम चुनाव में चुनावी मुद्दा तो बना ही, वाराणसी घोषणा पत्र में भी इसकी अहमियत को रेखांकित किया सरकार बनने पर कद्दावर, तेज़तर्रार और संकल्प की धनी उमा भारती को गंगा मन्त्रालय का प्रभार देकर इसके जीर्णोद्धार का भागीरथ दायित्व सौंपा गया। जापान के नदी संरक्षण से जुड़े विशेषज्ञों का भी सहयोग लिया गया।

'नमामि गंगे' की शुरूआत गंगा किनारे वाले 5 राज्यों में 231 परियोजनाओं की आधारशिला सरकार ने 1,500 करोड़ के बजट प्रावधान के साथ 104 स्थानों पर 2016 में रखी थी। इतनी बड़ी परियोजना इससे पहले देश या दुनिया में कहीं शुरू हुई हो, इसकी जानकारी मिलना असम्भव है।

इनमें उत्तराखण्ड में 97, उत्तर प्रदेश में 112, बिहार में 26, झारखण्ड में 19 और पश्चिम बंगाल में 20 परियोजनाएँ आरम्भ हुई जिनके परिणाम संयुक्त राष्ट्र की रिपोर्ट में सामने आए हैं। हरियाणा व दिल्ली में भी 7 (सात) योजनाएँ गंगा की सहायक नदियों पर भी शुरू हुई हैं।

अभियान में शामिल परियोजनाओं को सरसरी निगाह से दो भागों में बाँट सकते हैं, पहली गंगा को प्रदूषण मुक्त करने व बचाने की, दूसरी गंगा से जुड़े विकास कार्यों की। गंगा को प्रदूषित करने के कारणों में मुख्य रूप से जल, मल और औद्योगिकी ठोस व तरल अपशिष्टों को गिराया जाना था। अब जल, मल से छुटकारे के लिए जगह-जगह अधिकतम क्षमता वाले सीवेज संयत्र लगाए गए हैं। गंगा के किनारे अबाद 400 ग्रामों में गंगा ग्राम नाम से उत्तम प्रबंधन योजनाएँ शुरू हुई हैं।

इन सभी गाँवों में गड्ढे युक्त शौचालय बनाए गए हैं। सभी ग्रामों के शमशान घाटों पर ऐसी व्यवस्था को अंजाम दिया गया है जिससे जले या अधजले शवों को गंगा में बहाने से छुटकारा मिले।

शमशान घाटों की मरम्मत के साथ उनका आधुनिकीकरण हुआ है। अनेक विद्युत शवदाह गृह बनाए गए हैं, जिससे लकड़ी-कंडों का उपयोग न्यूनतम हो गया है। साफ है, ये उपाय संभव होने से ही गंगा सफाई अभियान को यू.एन. ने सराहा है।

विकास कार्यों की दृष्टि से ग्रामों में 30,000 हेक्टेयर भूमि पर पेड़ पौधे लगाए जाने हैं जिससे उद्योगों से उत्सर्जित होने वाले कार्बन का शोषण कर वायु शुद्ध होती रहे। ये पेड़ गंगा किनारे की भूमि की नमी बनाए रखने का काम भी कर रहे हैं। गंगा किनारे आठ (8) जैव विविधता संरक्षण केन्द्र भी विकसित किए गए हैं। वाराणसी से हल्दिया के बीच 1,620 किलोमीटर के गंगा जल मार्ग में बड़े-छोटे सवारी व मालवाहक जहाज़ चलाने की असम्भव परिकल्पना की गई थी, जिस पर अमल हो गया है और अब इस बीच मालवाहक जहाज़ चलने लगे हैं। यदि इस नज़र से देखें तो इस हेतु गंगा के तटों पर बंदरगाह भी बनाए गए हैं। वास्तव में नमामि गंगे परियोजना केवल प्रदूषण मुक्ति का अभियान मात्र न होकर विकास व रोज़गार का भी एक बड़ा पर्याय बना है।

पर्यावरण संरक्षण

शाहरुख
बी.एससी. प्रथम वर्ष, कृषि विज्ञान
चमन लाल महाविद्यालय, लण्ढौरा, हरिद्वार

पर्यावरण– पर्यावरण शब्द दो शब्दों के परि + आवरण के संयोग से मिलकर बना है जिसका आशय चारों ओर का आवरण है। पर्यावरण प्राकृतिक एवं मानव निर्मित्त परिघटनाओं का मिश्रण है।

पर्यावरण के प्रकार–
1. प्राकृतिक पर्यावरण
2. मानव निर्मित पर्यावरण

प्राकृतिक पर्यावरण– प्राकृतिक पर्यावरण से अभिप्राय पृथ्वी पर उपस्थित उन जैवीय और अजैवीय तत्वों के योग से है जिनका निर्माण प्राकृतिक तत्वों से हुआ है। भूमि, जल, पेड़-पौधे, पर्वत और जीव-जन्तु मिलकर प्राकृतिक पर्यावरण बनाते हैं।

मानव निर्मित्त पर्यावरण– मनुष्य द्वारा अपनी आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए बनाए गए पर्यावरण को मानव निर्मित पर्यावरण कहा जाता है। जैसे– इमारतें, सड़कें, पुल जैसी चीज़ों का निर्माण करके अपने पर्यावरण को आकार दिया है।

"पर्यावरण संरक्षण का अर्थ –
पर्यावरण में संतुलन के लिए घर, समाज व आस-पास के समन्वय और सरसता लाया जाना आवश्यक है। ऐसे कार्यकलाप रोकने होंगे जो पर्यावरण को हानि पहुँचाते हैं जैसे वनों की कटाई, वायु प्रदूषण, जल स्रोतों में गिरता औद्योगिक और सामाजिक कचरा, कुछ पर्वतों पर होते विस्फोट, युद्ध क्षेत्र में होने वाले रासायनिक प्रकार के अनेक घातक अस्त्रों का प्रयोग आदि।
पर्यावरण के किसी भी एक अंग की क्षति पर्यावरण संतुलन पर अपना प्रभाव डालती है। छोटे-छोटे जीव जन्तु भी पर्यावरण संतुलन बनाने में अपना योगदान देते हैं।

पर्यावरण संरक्षण का महत्व– पर्यावरण और मानव का सम्बन्ध घनिष्ठ है। पर्यावरण से ही हम हैं। हर किसी के जीवन के लिए पर्यावरण का बहुत महत्व है क्योंकि पृथ्वी पर जीवन पर्यावरण से ही सम्भव है। पर्यावरण से हमें जल, वायु आदि कारक प्राप्त होते हैं। पर्यावरण केवल जलवायु में ही नहीं संतुलन बनाता है अपितु सभी आवश्यक वस्तुएँ उपलब्ध कराता है।

पर्यावरण संरक्षण के लिए निम्न कदम आसानी से उठाए जा सकते हैं-

- अधिक वृक्ष लगाकर हरियाली लाई जाए।
- वन्य जीवन की सुरक्षा और संरक्षण को बढ़ावा दिया जाए।
- नदी, झरनों, तालाबों, जल स्रोतों को प्रदूषण से बचाएं।
- घनी बस्तियों और उसके समीपवर्ती क्षेत्रों में पेड़-पौधों की हरित पट्टी का विकास किया जाए।
- वायु और ध्वनि प्रदूषण की यथासम्भव रोकथाम की जाए।
- औद्योगिक विकास अथवा आर्थिक लाभ के लिए वनों के विनाश को रोका जाए।
- हर परिवार अपनी आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए पेड़ ज़रूर लगाए।
- वायु प्रदूषण को रोकने के लिए धुआँ छोड़ने वाले वाहनों का कम उपयोग किया जाए।

गरीबों का मेवाः मूँगफली

खुशनुमा
बी.एससी. गृह विज्ञान, द्वितीय वर्ष
चमन लाल महाविद्यालय, लण्ढौरा, हरिद्वार

परिचय- यह कहना गलत नहीं होगा कि मूँगफली के फायदे बादाम से किसी भी तरह से कम नहीं हैं। यह न सिर्फ ठंड के मौसम में दोस्तों के बीच हँसी-ठिठोली और टाइमपास का बढ़िया ज़रिया है बल्कि यह पौष्टिक तत्त्वों का खज़ाना भी है। हालाँकि इनमें से कुछ फायदे ऐसे हैं जो शायद कई लोगों को पता होंगे लेकिन इनमें कुछ फायदे ऐसे हैं जिन्हें जानकर आप चौंक जाएंगे। फायदे के साथ-साथ मूँगफली खाने के नुकसान के बारे में भी जानने का भी प्रयास करेंगे। मूँगफली खाने का तरीका भी इस लेख में शामिल है। यह भी ध्यान रखें कि मूँगफली का सेवन किसी बीमारी का इलाज नहीं है। यह सिर्फ स्वास्थ्य समस्या से बचाव कर सकती है। गंभीर बिमारियों में हमेशा डॉक्टर से सलाह लें।

मूँगफली क्या है- मूँगफली के फायदे जानने से पहले बता दें कि मूँगफली क्या है। मूँगफली को फलों की श्रेणी में रखा गया है लेकिन इसमें सूखे मेवों के गुण भी मौजूद होते हैं। यही कारण है कि इसे नट्स की श्रेणी में भी शामिल किया जा सकता है। वहीं इसमें तेल की उच्च मात्रा पाई जाती है इसलिए इसे तिलहन फसल में भी शामिल किया जाता है। यह प्रोटीन और फाइबर से भरपूर होती है और नट्स तेल में इस्तेमाल होने के अलावा मूँगफली का उपयोग मक्खन, स्नैक उत्पाद और डेज़र्ट बनाने में भी किया जाता है। मूँगफली को कई नामों से जाना जाता है जैसे हिन्दी में मूँगफली, तेलुगु में 'पलेलु' (Pllelu), तमिल में 'केद्लाई' (Kadalai), मलयालम में 'निलक्कडला' (Nilakkadala), गुजराती में 'सिंगदाना' (Singdana) और मराठी में 'शेंगदाना' (Shengdaane) कहा जाता है। मूँगफली को ज़मीन से प्राप्त किया जाता है, जिस कारण इसे ग्राउण्डनट भी कहा जाता है। मूँगफली भारत में पूरे वर्ष हर जगह मिलती है और इसके उत्पादन में भारत का दूसरा स्थान है। जानकारी के लिए बता दें कि मूँगफली का उत्पादन चीन में सबसे ज़्यादा किया जाता है।

मूँगफली सेहत के लिए क्यों अच्छी है?- मूँगफली में कई स्वास्थ्यकारी पोषक तत्व पाए जाते हैं जिसमें प्रोटीन और फाइबर की उच्च मात्रा पाई जाती है। साथ ही इसमें हेल्दी फैट (मोनोअनसैचुरेटेड़ फैट) पाए जाते हैं। इसमें रेस्वेट्रॉल और फाईटोस्ट्रॉल जैसे न्यूट्रिएंट्स भी पाए जाते हैं। वहीं मूँगफली का उपयोग हृदय रोग, डायबिटीज़, अल्ज़ाइमर और कैंसर से बचाव में मदद कर सकता है, इसलिए मूँगफली को सेहत और स्वास्थ्य का पावर बैंक कहा जा सकता है।

मूँगफली के फायदे- मूँगफली के गुणों से अगर आप अभी तक अनजान थे तो हम बता रहे हैं कि मूँगफली के गुण कैसे स्वास्थ्यकारी हो सकते हैं। कच्ची मूँगफली खाने के फायदे से लेकर मूँगफली कैसे खाएँ यह सभी जानकारी यहाँ आपको मिल जाएगी। साथ ही आप जान सकेंगे कि मूँगफली में क्या-क्या पाया जाता है जो गुणकारी है क्योंकि इसमें मैग्नीशियम, फाइबर और हार्ट हेल्दी ऑयल्स मौजूद होते हैं। ये ब्लड ग्लूकोज़ को अधिक प्रभावित नहीं करते हैं।

मूँगफली को ऊर्जा का पावर बैंक कहा जाता है क्योंकि इसकी थोड़ी मात्रा से ही पर्याप्त ऊर्जा प्राप्त हो जाती है। इसमें लगभग 50% हैल्दी फैट होता है जो किसी भी पारंपरिक खाद्य पदार्थ की तुलना में अधिक कैलोरी दे सकता है। मूँगफली प्रोटीन का अच्छा स्रोत है क्योंकि मूँगफली भी उनमें से एक है। इसलिए यह भी काफी प्रोटीन से युक्त होती है और इससे शरीर को अच्छी एनर्जी मिल सकती है जो फैट टाइट की तुलना में मूँगफली और इसके उत्पाद दिल की सेहत के लिए फायदेमंद हो सकते है। शोध के अनुसार इसमें कुछ मोनोसैचेराइट फैट होते हैं जो कुल बॉडी कॉलेस्ट्रॉल को 11% और खराब कॉलेस्ट्रॉल को 14% तक कम कर सकते हैं। मूँगफली अच्छे कॉलेस्ट्रॉल (HDL) को बनाए रखने का काम कर सकती है। मूँगफली के ये गुण कॉलेस्ट्रॉल का संतुलन बनाए रखने में मददगार हो सकते हैं।

मूँगफली का चयन- मूँगफली पूरे साल सुपरमार्केट और किराने की दुकानों में उपलब्ध होती है। यह अलग-अलग रूप में जैसे छिल्के वाली, कच्ची, भुनी हुई या फिर नमक वाली होती है।

- छिल्के वाली बिना पकी हुई मूँगफली हर मायने में प्रोसेस्ड मूँगफली से ज़्यादा बेहतर है। प्रोसेस्ड नट के छिल्के को निकालने के लिए कई तरह की रासायनिक प्रक्रिया का उपयोग किया जाता है जो स्वास्थ्य के लिए हानिकारक साबित हो सकते हैं।
- अगर आप बाज़ार से पीनट बटर खरीद रहे हैं तो ध्यान रहे कि आप उसकी एक्सपायरी डेट देखकर ही खरीदें। कच्ची मूँगफली खरीदते समय यह सुनिश्चित् करें कि मूँगफली की फली क्रीम रंग की हो।
- मूँगफली खरीद और उपयोग करते वक्त उसे सूँघ लें। अगर उसमें से बदबू आ रही हो तो इसका मतलब यह है कि मूँगफली खराब है।

मूँगफली के नुकसान- किसी भी चीज़ का ज़रूरत से ज़्यादा सेवन हानिकारक हो सकता है। इसी प्रकार अधिक मूँगफली खाने पर मूँगफली के नुकसान नज़र आ सकते हैं इसलिए ज़्यादा मूँगफली खाने के नुकसान के बारे में ज़रूर जानें। मूँगफली से समस्या हो सकती है

- मूँगफली से एलर्जी है तो इसे खाने से बचें, चाहे तो पहले मूँगफली के एक या दो दाने खाकर देख लें कि यह आपको सूट कर सकती है या नहीं। कुछ लोगों को मूँगफली खाने से सांस लेने में परेशानी हो सकती है। ऐसी स्थिति में बिना देर करते हुए डॉक्टर से सम्पर्क करें।
- अगर त्वचा संवेदनशील है तो त्वचा में खुजली व रैशेज़ की समस्या हो सकती है। इसके अलावा त्वचा या गले में सूजन की समस्या भी एलर्जी के ही लक्षण हैं।

- ज़रूरत से ज़्यादा मूँगफली खाने से गैस, सीने में जलन यानि एसिडिटी की समस्या हो सकती है।
- मूँगफली की तासीर गर्म होती है इसलिए ध्यान रहे कि ठंड के मौसम में इसका सेवन करें। अगर गर्मी में खा रहे हैं तो ज़्यादा मात्रा में इसका सेवन न करें। गर्मी में मूँगफली को ज़्यादा खाने से पेट खराब हो सकता है।

बेटियाँ

मेहर जेहरा
बी.ए. प्रथम वर्ष
चमन लाल महाविद्यालय, लण्ढौरा, हरिद्वार

ओस की एक बूँद-सी होती है बेटियाँ,
सबके दु:ख में दु:खी हो रोती हैं बेटियाँ,
रोशन करेगा बेटा तो बस एक ही कुल को,
दो-दो कुलों की लाज होती हैं बेटियाँ।

कोई नहीं है एक दूसरे से ज़रा कम,
बेटा अगर हीरा है तो मोती हैं बेटियाँ,
काँटों की राह पर वह खुद को चला कर,
फूल दूसरों के लिए बोती हैं बेटियाँ।

ओस की एक बूँद-सी होती हैं बेटियाँ,
स्पर्श खुरदुरा हो तो रोती हैं बेटियाँ,
रोशन करेगा बेटा तो बस एक ही कुल को,
दो-दो कुलों को रोशन करती हैं बेटियाँ।

हीरा अगर बेटा है तो सच्चा मोती हैं बेटियाँ,
काँटों की राह पर खुद चलती रहेंगी,
औरों के लिए फूल ही बोती हैं बेटियाँ,
विधि का विधान है यही दुनिया की रस्म है,
मुट्ठी में भरे नीर-सी होती हैं बेटियाँ।

पर्यावरण

उदयवीर
बी.ए. प्रथम वर्ष
चमन लाल महाविद्यालय, लण्ढौरा, हरिद्वार

'परितः आवरण पर्यावरणम्' अर्थात् वे प्राकृतिक तत्व जिन्होंने चारों ओर से प्राणी जगत को घेरा हुआ है पर्यावरण का निर्माण करते हैं। हमारे चारों ओर का वह परिवेश जिसमें हम, आप व अन्य सभी जीव जैसे- पेड़-पौधे, जानवर आदि रहते हैं पर्यावरण हैं। जिस मिट्टी में पेड़-पौधे उगते हैं, बीज अंकुरित होते हैं। हम जिस धरती पर आवास का निर्माण करत हैं, प्यास लगने पर जो जल हम सभी जीव ग्रहण करते हैं, जिस वायु में उपस्थित ऑक्सीजन का प्रयोग हम श्वसन क्रिया हेतु करते हैं, पहाड़, रेगिस्तान, नदी, तालाब, चट्टानें, सूक्ष्मजीव आदि सभी मिलकर पर्यावरण का निर्माण करते हैं।
पर्यावरण शब्द का अर्थ दो शब्दों से मिलकर बना है-
परि + आवरण
परि अर्थात् 'चारों तरफ'
आवरण अर्थात् 'घेरा/ढकने वाला
अंग्रेज़ी शब्द Environment भी French भाषा के दो शब्दों से मिलकर बना है।
Environment = Environ + ment
Environment= Environ means घेरना
Ment means (चारों तरफ से) Surrounding
स्पष्ट है कि पर्यावरण का शाब्दिक अर्थ है-
1. चारों ओर से ढकने वाला आवरण
2. चारों ओर का घेराव
अर्थात् पर्यावरण हमारे आस-पास का वह घेरा है जिसमें जीवन की समस्त दशाएँ अथवा घटक चाहे वे जैविक घटक के रूप में मानव, पेड़-पौधे, जानवर, सूक्ष्मजीव आदि हों अथवा अजैविक (Abiotic) कारकों के रूप में प्रकाश, वायु, मिट्टी, जल, पर्वत, खनिज पदार्थ इत्यादि हों, सम्मिलित होते हैं।
पर्यावरण इन सभी जैवीय (Biotic) व अजैवीय (Abiotic) घटकों का जटिल युग्म है जिनसे मानव घिरा हुआ है, हम कह सकते हैं कि पर्यावरण (Environment) है।

Definition (परिभाषाएँ)-

जे.एस. रॉस के अनुसार, "पर्यावरण कोई भी वह बाहरी शक्ति है जो हमको प्रभावित करती है।"
"Environment is any external force that affects us."

पार्क सी.सी. के शब्दों में, " मनुष्य एक विशेष स्थान पर विशेष समय पर जिन सम्पूर्ण परिस्थितियों से घिरा हुआ है उसे पर्यावरण कहते हैं।"
"The entire condition/surroundings that humans are surrounded by at a particular place, at a particular time known as environment."

डगलस व हॉलैण्ड के अनुसार, "पर्यावरण शब्द का प्रयोग उन सब वाह्य प्रभावों व दशाओं के सामूहिक रूप में वर्णन करने हेतु किया जाता है जो जीवित प्राणियों/समावयवों (organism) के जीवन, व्यवहार, बुद्धि, विकास और परिपक्वता पर प्रभाव डालते हैं।

पर्यावरण संरक्षण : जीवन रक्षण

रुबीना
बी.ए. प्रथम वर्ष
चमन लाल महाविद्यालय, लण्ढौरा, हरिद्वार

- हमारे पर्यावरण को हर कीमत पर संरक्षित किया जाना चाहिए क्योंकि यह हमारे लिए एक जीवनदायी शक्ति है।
- हमें अपनी मातृ प्रकृति को प्रदूषण विषाक्तता और प्रदूषण से बचाना चाहिए। ज़हरीले वातावरण में रहना हमारे स्वास्थ्य को नुकसान पहुँचा सकता है और हमें स्थाई रूप से अपंग कर सकता है।
- वातावरण हमारे जीवन के लिए अति आवश्यक है।
- ज़हरीली गैसें और धुआँ पैदा करने वाले ईंधन प्रदूषण और स्मॉग का कारण बनते हैं जो हमारे जीवन के लिए हानिकारक है।
- हमें अपने पर्यावरण की रक्षा के लिए प्लास्टिक को त्यागना चाहिए और उसके स्थान पर जूट, कागज़ या कपड़े का उपयोग करना चाहिए।
- पर्यावरण का संबंध जीवित और गैर-जीवित चीज़ों से है।
- हमें पर्यावरण के बचाव के लिए जीवाश्म ईंधन का उपयोग कम से कम करना चाहिए।
- ऊर्जा बचाने वाले ट्यूबलाइट और बल्ब आदि उत्पादों का प्रयोग करना चाहिए।
- स्वस्थ और पूर्ण जीवन जीने के लिए स्वच्छ वातावरण हमारे लिए आवश्यक है।
- दूषित खाना खाने, पानी पीने से हमारे स्वास्थ्य पर गंभीर प्रभाव पड़ सकता है और टाइफाइड, पीलिया आदि रोग हो सकते हैं।
- हमें पर्यावरण के संबंध में सरकार द्वारा बनाए गए कानूनों का पालन करना चाहिए। स्वच्छ भारत अभियान ऐसे ही मिशन का एक उदाहरण है।
- पेट्रोल-डीज़ल और उद्योगों द्वारा ऊर्जा उत्पादन के लिए जीवाष्म ईंधन के बढ़ते दहन से वायु प्रदूषण में सबसे ज़्यादा वृद्धि हुई है।
- पर्यावरण हमारे लिए महत्वपूर्ण है। यदि पर्यावरण नहीं होगा तो हमारा जीवन असंभव हो जाएगा।
- कहीं आने-जाने के लिए पैदल कार-पूल या सार्वजनिक परिवहन का उपयोग करना चाहिए।

जल प्रदूषण : एक विकट समस्या

अर्पित
बी.ए. द्वितीय वर्ष
चमन लाल महाविद्यालय, लण्ढौरा, हरिद्वार

पानी प्रदूषण दिन-प्रतिदिन बढ़ता जा रहा है और इसी वजह से पानी की समस्या भी देश में बढ़ती जा रही है। हमारा लेख इसी से जुड़ा है जिसमें हम पानी की समस्या पर बात करने वाले हैं। इस लेख में पानी की समस्या के संदर्भित सभी महत्वों को आपके साथ साझा किया गया है।

जल प्रकृति द्वारा मनुष्य को दिए गए महत्त्वपूर्ण उपहारों में से एक है। जल प्रकृति पर बहुत बड़े हिस्से के अंतर्गत मौजूद है। कहीं जाएं तो पृथ्वी पर जल की कमी नहीं है, परन्तु मनुष्य अपनी सुख-सुविधाओं को अधिक महत्व देने के चलते जल को दिन-प्रतिदिन दूषित करके नष्ट करते जा रहे हैं। मनुष्य अपनी सुख-सुविधाओं को अधिक महत्व देते हुए ऐसी-ऐसी चीज़ों का इस्तेमाल करता है, जिनका वातावरण को दूषित करने में मुख्य योगदान है। वातावरण के दूषित होने के कारण ही आज के समय में मौसम बिगड़ते जा रहे हैं और सूखा पड़ने की समस्या अधिक हो रही है। पानी की समस्या गर्मियों के मौसम में और अधिक होती है। जल जो कि हमारे जीवन जीने के लिए सबसे बड़ी आवश्यकता है। जल के बिना हमारा जीवन कुछ भी नहीं है। जल पर ज़्यादा निर्भर हमारे भारत में जल की कमी धीरे-धीरे बढ़कर एक गंभीर समस्या का रूप लेती जा रही है। भारत में पानी की बर्बादी का स्तर दुनिया में सबसे ज़्यादा भारत है।

पानी की बर्बादी व पानी की कमी सिर्फ लोगों की लापरवाही के कारण हो रही है। इसीलिए आज के समय में भारत सरकार द्वारा पानी की बर्बादी को रोकने के लिए बहुत सारे नीति, नियम और कानून बनाए गए हैं।

हमारी बुनियादी ज़रूरतों में से एक पानी है और सोचने लायक बात यह है कि यदि हमारे पास पानी नहीं होगा तो हमारा क्या होगा।

मानव शरीर 60% पानी से बना हुआ है जो कि आधे से अधिक है। क्या हम यह कल्पना कर सकते हैं कि जब हमें इतने पानी की ज़रूरत है तो बाकी पेड़-पौधे, जानवरों को इस पानी की आवश्यकता होती होगी, परन्तु एक बात स्पष्ट है कि जल के बिना जीवन संभव नहीं है।

पानी की कमी के बारे में कुछ तथ्य-

भारत ही नहीं बल्कि कई ऐसे देश हैं जहाँ पर लोग साल भर में कम से कम छः महीने पानी की किल्लत का सामना करते हैं।

दुनिया के कई बेहतरीन शहर पानी की समस्या से जूझ रहे हैं।

प्रत्येक व्यक्ति प्रतिदिन 90 गैलन से अधिक पानी का उपयोग करते हैं।

नारी शक्ति

तमन्ना
बी.ए. द्वितीय वर्ष
चमन लाल महाविद्यालय, लण्ढौरा, हरिद्वार

नारी सहनशीलता, प्रेम, धैर्य और ममता की प्रतिमूर्ति है। किसी भी समाज की कल्पना नारी के बिना नहीं की जा सकती है। जब कोई नारी कोई भी चीज करने की ठान लेती है, तो वह कर दिखाती है। नारी की हिम्मत और सहनशीलता पुरुषों से भी अधिक है। नारी अपने वादे से पीछे नहीं हटती है। नारी अपने जिम्मेदारियों को निभाती है और कठिन परिस्थितियों में अपने शक्ति का परिचय देती हुयी नजर आती है।

देश में कई महिलाओं ने विभिन्न क्षेत्र में अपने साहस और सूझ-बूझ का परिचय दिया है। झांसी की रानी लक्ष्मीबाई ने अंग्रेजों के खिलाफ निडर होकर जंग लड़ी थी। उन्होंने आजादी के लिए अपने प्राणों की आहुति दे दी थी।

नारी ने अपने हर रूप में यह साबित किया है कि वह अबला नहीं है। वक्त आने पर वह अपने हालातों से लड़ भी सकती है और उसे काबू में भी ला सकती है। नारी चाहे वह माँ हो, या बहन, या फिर पत्नी, उसके हर रूप में उसका सम्मान करना चाहिए।

नारी के गर्भ से जीवन का आरम्भ होता है। नारी अपने जीवन में कई भूमिकाएं निभाती है। वह बिना थके घंटो काम करती है। वह अपने परिवार के सदस्यों की देख रेख करती है। परिवार के लोगों को अच्छी सलाह देती है।

जब परिवार का कोई भी सदस्य कभी बीमार पड़ता है, तो वह उसकी देखभाल करती है। जब घर का कोई सदस्य थक कर घर आता है, तो महिलाएं खाना परोसती है और कोई भी परिवार के सदस्य की चिंता और थकान अपने बातों से दूर कर देती है।

वह बच्चों की शिक्षक बन जाती है और उन्हें पढ़ाती है और अपने घरेलू नुस्खों से परिवार के सदस्यों का इलाज भी करती है। वह बिना शर्त रखे सभी काम करती है और अपनों को खुश रखती है। वह औरों के जिन्दगी में खुशी लाने के लिए बलिदान भी करती है।

महिलाएं अब नहीं है कमजोर

आज महिलाएं कमजोर नहीं है। वह शिक्षित हो रही है। वह अपने विचारों को घर से बाहर निडर होकर रखती है। वह सम्मान और मर्यादा में रहना जानती है। वह संस्कारों का पालन करती है। उन्हें कोई भी अपमान करे, तो अब वह चुप नहीं रहती है। महिलाओं ने अपने अधिकारों को पहचान लिया है और हर क्षेत्र में अपनी सशक्त भूमिका निभा रही है।

प्रेरणा स्रोत

इंदिरा गाँधी, कल्पना चावला, सरोजिनी नायडू जैसी महान शख्सियत ने अपने आपको अपने क्षेत्र में ना केवल साबित किया, बल्कि लोगों के लिए वे प्रेरणादायक स्रोत भी बनी।

आत्मनिर्भर

पहले लड़कियों का पढ़ना लिखना अच्छा नहीं माना जाता था। उन्हें घर के चार दीवारों में जैसे कैद कर लिया जाता था। वह अपना कोई भी निर्णय खुद नहीं ले पाती थी। आज नारी शिक्षित हो रही है। ऐसा कोई क्षेत्र नहीं है जहां महिलाएं काम ना कर रही हो। आज महिलाएं पुरुषों के साथ कंधे से कन्धा मिलाकर चल रही है। पुरुषों से किसी मामले में वह कम नहीं है। यहाँ तक की कई क्षेत्रों में महिलाओं ने पुरुषों को पीछे छोड़ दिया है। आजकल महिलाएं उच्च पदों पर काम कर रही है और घर चला रही है। वह घर और दफ्तर दोनों को बराबर संभाल रही है। महिलाएं खुद अपने पाँव पर खड़ी हो रही है और घर का खर्चा चला रही है।

आत्मविश्वास के साथ जिन्दगी जीना

नारी शिक्षित हो गयी है और आज देश में महिलाओं के प्रगति के लिए अभियान चलाये जा रहे है। नारी आत्मविश्वास के साथ सभी मुश्किलों का सामना करके आगे बढ़ रही है। हर क्षेत्र में वह सफलता प्राप्त कर रही है।

अत्याचार के खिलाफ आवाज उठाना

जिस देश में जहां देवी की पूजा की जाती है, वहाँ कुछ लोग ऐसे भी है जो महिलाओं को तुच्छ समझते हैं। कुछ घरों और समाज में आज भी महिलाओं के साथ अत्याचार होता है। आज वर्तमान युग में नारी पहले से अधिक जागरूक और समझदार हो गयी है।

जब उन पर अत्याचार बढ़ जाता है, तो वह उसके खिलाफ विरोध करना भी जानती है। बेवकूफ है वे लोग जो महिलाओं को कमजोर समझते हैं। अब वक्त आ गया है कि पुरुष भी महिलाओं की सोच और उनके विचारधाराओं का सम्मान करे। महिलाओं को वह इज्जत मिलनी चाहिए, जिसकी वे हकदार हैं।

नारी शक्ति

जब जब महिलाओं पर अत्याचार बढ़ जाता है, तो वह काली माँ जैसा रूप धारण कर लेती है और अपराधियों का सर्वनाश कर देती है। जो लोग महिलाओं का सम्मान नहीं करते है और उन्हें कमजोर समझते है, वे नारी शक्ति के प्रभावशाली शक्ति से परिचित नहीं होते हैं।

नारी शक्ति के कई उदाहरण है और वर्तमान युग में महिलाओं ने अपनी शक्ति और मजबूती का परिचय भी समय-समय पर दिया है।

महिला सशक्तिकरण नारे (स्लोगन)

शहराज़
बी.एस.सी. (गृह विज्ञान), द्वितीय वर्ष
चमन लाल महाविद्यालय, लण्ढौरा, हरिद्वार

अपने हौसले से नारी भर रही ऊँची उड़ान
न कोई शिकायत न कोई थकान।

महिलाओं को दें शिक्षा का उजियारा
पढ़-लिख कर करें रोशन जग सारा।

पुरुष और महिला एक समान
जन-जन का हो अब यही आह्वान।

नारी तुम केवल श्रद्धा हो,
विश्वास रजत नग-पग तल में
यूँ पीयूष स्रोत-सी बहा करो
जीवन के सुन्दर समतल में।

नारी तुम दुर्गा का रूप हो
शीतलता का दीप हो तुम।

ऐ नारी अब तो तू अपनी शक्ति को पहचान
कृष्णा से पहले लोग लेते हैं राधा का नाम।

पीछे छोड़ बंदिशों को निकल गई
पहचान बनाने अबला नहीं हो
न हो बेचारी
कर आसमाँ को अपने हवाले।

उखाड़ फेंकने उस दुश्मन का समय आया है।
जिसने नारी तुमको अबला नारी बनाया है।

तू सशक्त है सर्वशक्तिशाली है तू
पहचान खुद की बनाने का समय आज आया है।

नारी तू शक्ति है, कोई अबला या बेकार नहीं
तू तो विश्व की जननी है किसी की मोहताज नहीं।

बेटा घर की रौनक है,
तो बेटी भी पाप नहीं,
हर घर की लक्ष्मी है बेटी
बेटे से बेकार नहीं

आज नारी सम्मान पाने
लक्ष्मीबाई का रूप धरो
जो करे तेरा अपमान
चण्डी जैसी तुम बनो।

खुद ही बढ़ना है तुझको आगे
कोई रक्षक अब नहीं आएगा।

देश को आगे बढ़ाना है
तो नारी को सशक्त बनाना है।

महिलाओं को दें इतना सम्मान
कि बढ़े देश की शान।

महिलाओं को दें शिक्षा का अधिकार
क्योंकि यही है परिवार, समाज और देश का आधार।

सशक्त नारी, तो सुखी है परिवार
सुंदर जीवन का यही है आधार।

महिलाओं पर अत्याचार

अलिशा
बी.ए. प्रथम वर्ष
चमन लाल महाविद्यालय, लण्ढौरा, हरिद्वार

जिस प्रकार पुरुष दूसरे लोगों से प्यार और सम्मान की उम्मीद करते हैं, इसी प्रकार नारियाँ भी दूसरे लोगों से प्यार और सम्मान की उम्मीद करती हैं। परन्तु सामंतवादी सोच के लोग नारी को एक बँधुआ मज़दूर की तरह देखते हैं और उन पर तरह-तरह के अत्याचार करते हैं। नारी पर अत्याचार के कई कारण हो सकते हैं। जैसे अगर किसी लड़की की शादी कम दहेज पर हुई है, तो उसके ससुराल वाले उसे परेशान करते हैं। इसके अलावा अगर कोई नारी अपने मनपसंद के कपड़े पहनना चाहती है तो उसके घर के लोगों के द्वारा उसे रोका-टोका जाता है क्योंकि लोगों की नज़रों में ऐसा माना जाता है कि नारी को हमेशा घर में ही रहना चाहिए। परन्तु आज के इस आधुनिक समय में नारियाँ भी लड़कों की तरह ही अपनी ज़िन्दगी में आगे बढ़ रही हैं और अपने सपनों की उड़ान भर रही हैं। इसलिए किसी भी व्यक्ति को यह हक़ नहीं है कि वह किसी अन्य व्यक्ति की आज़ादी पर प्रतिबंध लगाए क्योंकि सभी को आज़ादी प्यारी होती है। एक आदर्श नागरिक होने के नाते हमारा यह फर्ज़ बनता है कि हम नारियों पर अत्याचार न करें और उन्हें भी वही सम्मान और प्रेम दें जो हम अन्य लोगों को देते हैं क्योंकि नारियाँ भी हमारी और आपकी तरह मनुष्य हैं, जो प्यार और सम्मान की भूखी हैं। जिस घर में नारियाँ हँसती रहती हैं वह घर स्वर्ग की तरह होता है और ऐसे घर में हमेशा खुशहाली बनी रहती है। जब एक नारी किसी पुरुष के साथ शादी करके अपने ससुराल में जाती है तो वह वहाँ पर सभी से प्यार की उम्मीद करती हैं। परन्तु कभी-कभी उसकी इन उम्मीदों पर पानी फिर जाता है, क्योंकि उसके ससुराल वाले विभिन्न कारणों से उसके ऊपर अत्याचार करना चालू कर देते हैं। हालाँकि कभी-कभी लड़कियों पर उनके खुद के घर में भी अत्याचार होते हैं। परन्तु खासतौर पर लड़कियों को शादी के बाद अनेक प्रकार के प्रतिबंध झेलने पड़ते हैं। कई बार दहेज कम लाने के कारण लड़कियों को उनके ससुराल वालों के द्वारा तंग किया जाता है और उन्हें मारा पीटा जाता है। क्या आज हम अपने आधुनिक समाज में केवल पुरुषों को ही रखना चाहते हैं? यदि नहीं तो फिर महिलाओं के साथ अत्याचार क्यों? क्या वो इस देश की नागरिक नहीं अथवा वे सिर्फ नारी हैं। इसलिए उनके साथ ऐसा व्यवहार किया जाए, ऐसा है तो फिर हमारी माँ, बहन, पत्नी, भाभी वो भी तो महिलाएं हैं। आए दिन नारी अत्याचार की घटनाओं में वृद्धि हो रही है। दुष्कर्म, बलात्कार, एसिड डालकर चेहरा जला देने, दहेज उत्पीड़न और तलाक जैसे अपराध आज भी हमारी सोच पर प्रश्नचिह्न लगाते हैं। मेरे शब्दों में पुरुष प्रधान समाज को अब जागने और जगाने का वक्त है। साथ ही महिलाओं

को अपनी शक्ति का एहसास करवाने और उन्हें अपनी खोई हुई शक्ति वापिस दिलाने का समय आ गया है। नारियाँ जीवन देना जानती हैं तो लेना भी जानती हैं। सती सावित्री का प्रसंग उल्लेखनीय है जिन्होंने अपने सत्य एवं सतीत्व के बल पर अपने पति के प्राणों को भी यमराज से छुड़ा लिया था। नारी शक्ति को अपनी शक्ति स्वयं ही जगानी होगी क्योंकि जिसका मन, आत्मा और विवेक मर चुका हो वो स्वयं मरा हुआ है फिर वह किसी को क्या जगाएगा यही हाल पुरुष प्रधान इस समाज का है।

पुरुष प्रधान समाज को अब जागने और जगाने का वक्त है। साथ ही महिलाओं को अपनी शक्ति का एहसास करवाने और उन्हें खोई हुई अपनी शक्ति वापस दिलाने का समय आ गया है।

द केरल स्टोरी

उज़्मा नूर
बी.ए. प्रथम वर्ष
चमन लाल महाविद्यालय, लण्ढौरा, हरिद्वार

"द केरल स्टोरी" निर्देशक सुदीप्तो सेन के द्वारा निर्देशित की गई फिल्म है। इस फिल्म पर लगातार विवाद चल रहा है। सोशल मीडिया पर इस फिल्म को लेकर हंगामा हो रहा है। फिल्म 'द केरल स्टोरी' युवा हिन्दू लड़कियों के कथित धर्मांतरण और इस्लाम की कट्टरता के इर्द-गिर्द घूमती है। फिल्म में दावा किया गया है कि यह केरल की तीन युवा लड़कियों की सच्ची घटना पर आधारित फिल्म है।

कहानी में युवा लड़कियाँ जिनके नाम फातिमा उर्फ शालिनी उन्नीकृष्णन (अदा शर्मा); इसके अतिरिक्त गीतांजलि (सिद्धि इदनानी), निमाह (योगिता बिहानी), आसिफा (सोनिया बलानी) हैं। ये चारों एक साथ मेडिकल हॉस्टल में पढ़ती हैं और शालिनी और उनकी तीन रूम मेट्स जो बाद में रूम शेयर करते-करते दोस्त बन जाती हैं। उसमें से एक लड़की जिसका नाम आसिफा है वो इस्लाम धर्म से है। जो शालिनी, निमाह और गीतांजलि का ब्रेन वॉश करती है वह उन्हें नशे की दवाईयाँ देती है। एक बार इन दोस्तों के साथ कुछ लड़के छेड़छाड़ करते हैं तो आसिफा उनका ब्रेन वॉश करते हुए कहती है कि जो लड़कियाँ हिजाब पहनती हैं, बुर्का पहनती हैं उनके साथ कभी रेप नहीं होता। आसिफा उन्हें हिन्दू धर्म के बारे में गलत आलोचना करती है जिससे वो तीनों लड़कियाँ अपने परिवार और धर्म से दूर जाकर इस्लाम धर्म कुबूल कर लेती हैं। आसिफा एक गुप्त एजेन्डा से जुड़ी है जिससे वो तीनों लड़कियाँ नावाकिफ हैं। आसिफा अपने दो नकली भाईयों का सहारा लेती है और ऐसा जाल बिछाती है कि लड़कियों को कट्टरपंथी बनाया जाए। शालिनी को अपने प्यार के जाल में फँसाने वाला रमीज़ उसे गर्भवती कर देता है। समाज के डर से वह धर्म परिवर्तित करके अंजान लड़के से निकाह करके भारत छोड़कर पाकिस्तान और अफ़गानिस्तान के रास्ते से सीरिया भाग निकलती है। आगे का सफर उसके लिए दर्दनाक साबित होता है। उसकी दो दोस्तों को भी दर्दनाक मंज़र से गुज़रना पड़ता है। यही नहीं शालिनी पुलिस द्वारा पकड़े जाने पर बताती है कि उसी की तरह 32,000 लड़कियाँ भी इसी जाल में फँसकर उनके साथ भी यही हो रहा है। उनके साथ अत्याचार हो रहे हैं, उनका बलात्कार हो रहा है।

इस फिल्म पर बैन लगाया जा रहा है क्योंकि कुछ कट्टरपंथी लोग मानते हैं कि ये इस्लाम धर्म को गलत साबित कर रही है और इससे देश में दो धर्म के बीच विवाद हो सकता है। कुछ राज्यों में फिल्म को रिलीज़ भी किया गया जहाँ हिन्दू धर्म के कट्टरपंथी लोग फिल्म को देखकर इस्लाम धर्म की आलोचना कर रहे हैं। वहीं इस्लाम धर्म के लोग इसे सच्ची घटना न मानकर झूठ मानते हैं और

कहते हैं कि उनके खिलाफ़ हिन्दुत्व को भड़काया जा रहा है जबकि ऐसा नहीं है।

वास्तव में फिल्म किसी धर्म को न लेकर उस अत्याचार को लेकर है जो केरल में लड़कियों के साथ हो रहे हैं तथा उस गुप्त एजेन्डा के विरुद्ध है जो केरल में है, जो सीरिया के गुप्त एजेन्डा से जुड़ा है। केरल में यह अत्याचार केवल हिन्दू लड़कियों के साथ ही नहीं बल्कि बाकी लड़कियों के साथ भी ऐसा हो रहा है चाहे वह कोई भी धर्म की हो। मेरा यह कहना है कि हम सबको इस फिल्म को धर्म से न जोड़कर उस पर ध्यान देना चाहिए कि उस गुप्त एजेन्डा से जो लड़कियों के साथ दर्दनाक घटना घट रही है तथा सरकार से अपील करनी चाहिए कि केरल में गुप्त एजेन्डा से फैल रहे आतंक की जाँच कर उसे खत्म करना चाहिए ताकि और लड़कियों के साथ ऐसा न हो। केवल हिन्दू धर्म के लोगों को ही नहीं बल्कि पूरे देश को उन लड़कियों का साथ देना चाहिए और उस गुप्त एजेन्डा को समाप्त करना चाहिए ताकि देश में अशांति न फैले और सभी लड़कियाँ सुरक्षित रहें। समाज के लोगों को प्रेरणा देने के लिए तथा उन्हें प्रेरित करने के लिए मेरी तरफ से एक कविता-

वर्षों से जो बन्द पड़े हैं,
उन नैनों को खोलो।
नारी आओ बोलो।
अब तक जो पुरखों के पीछे,
अब तक जो बुर्कों के पीछे,
अब तक जो मरघट के पीछे,
और अब तक जो घूँघट के पीछे
नाप रही है अपने मुख को,
छोड़ के पर्दे बोलो।
नारी आओ बोलो॥
सबसे पहला प्रश्न करो, उन माताओं से जाकर,
रोई जो लड़की होने पर, हँसी पुत्र को पाकर,
नारी होकर नारी को ही, छोटा समझा सबने,
नारी होकर नारी ही लगी क्यों हृदय को चुभने,
भेद किया क्यों तुमने, जब न भेद किया था रब ने,
जब दोनों को ही भेजा था कुदरत ने,
पूछो सबसे, जिन्होंने भेद किया शिक्षा में,
लड़की को चूल्हे पर भेजा, लड़के को कक्षा में,
पूछा उनसे भी, जिन्होंने दोनों को पढ़वाया,
लेकिन घर में लड़की से ही घर का काम करवाया,
अगला प्रश्न करो समाज से।
पूछो ये सब क्या है,
समता के अधिकार न रखना,
समता की हत्या है,
बहलाया-फुसलाया सबने, कन्या को अँधी कर,
चण्डी कहकर पूजा की, और बिठा दिया मण्डी पर,
मण्डी जिसमें कीमत तय करता है, केवल नर ही,
नर को चाबुक मिली हाथ में, नारी को बस डर ही,
नारी करती रही काम, छोटे चाबुक को सहकर,
आहें भरती रही सदा, रह-रहकर, सह-सहकर,
बुर्का, घूँघट सब महिला पर, पर्दा करे हम ही हम,
और वो भी क्योंकि मर्दों से नहीं होता मन पर संगम,
अंतिम प्रश्न करो खुद से, कि किसके संग खड़ी हो,
अपने पथ पर हो या, पुरुषों के पथ पर चलती हो,
अरे शिव के तीन नयन सोने दो,
अपने दो तो खोलो,
नारी आओ बोलो।
नारी आओ बोलो।।

नारी उत्पीड़न

बुशरा
बी.एससी. तृतीय वर्ष
चमन लाल महाविद्यालय, लण्ढौरा, हरिद्वार

शर्म करो ऐ पुरुषों तुम नारी पर हाथ उठाते हो,
नारी को देवी कहते हो फिर भी नहीं लजाते हो।
क्या बिल्कुल ही भुला दिया वैदिक परम्पराओं को,
बुजुर्गों के वचनों और वैदिक परम्पराओं को,
नारी की चुप्पी को उसकी कमज़ोरी मत समझो,
वो खुद को समस्याओं में डालकर सबको खुश करती है,
फिर न जाने वो कितने दु:खों से गुज़रती है।
शर्म करो, ऐ पुरुषों तुम नारी पर हाथ उठाते हो,
पूरे दिन उसे परेशान करके सारे घर का काम कराते हो,
फिर भी पूरे दिन ताना मार के उस बेचारी को रुलाते हो,
माँ भी नारी बहन भी नारी नारी से ही विश्व बना है,
तुम उसे ही दु:खी करते हो जिसने तुम्हें जना है।
नारी को ही सारे जग में रुलाया जाता है,
क्यों करते हैं ऐसा लोग फिर,
उन्हें माँ, बेटी, बहन कहकर बुलाया जाता है।
सारी समस्याओं का सामना करते हुए भी,
वह खुद को सँभाल लेती है,
इस तरह वो पूरे परिवार को सँभाल लेती है।
न जाने इन पर इतना जुल्म ढाया जाता है,
बात-बात पर इन्हें रुलाया जाता है,
फिर भी वो खुद को यूँ सँभाल लेती हैं,
ताना सुन-सुन कर वो अपना जीवन गुज़ार लेती हैं,
जगह-जगह पर प्रताड़ित किया जाता है,
तुम नारी हो ये बताया जाता है।
लड़कों की अपेक्षा नारी को कम सम्मान किया जाता है,
नारी कहकर उनका अपमान किया जाता है।

गृह विज्ञान : एक परिचय

प्रिया
बी.एससी. (गृह विज्ञान)
चमन लाल महाविद्यालय, लण्ढौरा, हरिद्वार

गृह विज्ञान शिक्षा की एक ऐसी धारा है जिसके अन्तर्गत सभी प्रकार के शिक्षा कार्य किए जाते हैं। गृह विज्ञान से हमें पाकशास्त्र, गृह अर्थशास्त्र, उपभोक्ता विज्ञान, बच्चों की परवरिश, मानव विकास, वस्त्र एवं परिधान, गृह निर्माण आदि सभी प्रकार के ज्ञान सीखने को मिलते हैं।

गृह विज्ञान का परिचय-
गृह विज्ञान के नाम से ही पता चलता है कि गृह का सम्बन्ध घर से है। अधिकांश लोगों को गृह विज्ञान को लेकर यह गलतफहमी रहती है कि गृह विज्ञान केवल खाना बनाना, सिलाई करना, साज सज्जा करना इत्यादि का विषय है, लेकिन ऐसा बिल्कुल नहीं है। गृह विज्ञान का क्षेत्र काफी बड़ा है। गृह विज्ञान को सत्य में देख जाए तो गृह विज्ञान ही एक ऐसा विषय है जो युवा विद्यार्थी को जीवन के दो महत्वपूर्ण लक्ष्यों के लिए तैयार करता है- घर तथा परिवार की देखभाल और जीवन में कैरियर अथवा पेशे के लिए तैयारी करता है। आजकल महिला तथा पुरुषों दोनों ही घर तथा परिवार की ज़िम्मेदारी समान रूप से निभाते हैं तथा अपने जीवन को सुखमय बनाने के लिए उपलब्ध संसाधनों के बेहतर उपयोग की तैयारी में भी बराबर की सहभागिता निभाते हैं। विज्ञान और कला का यह समन्वय आपके जीवन के हर क्षेत्र में काम आता है, उनमें से कुछ इस प्रकार हैं-

- घर जिसमें आप रहते हैं
- भोजन जिसे आप खाते हैं
- परिवार जिसकी आप देखभाल करते हैं
- संसाधन जिनका आप इस्तेमाल करते हैं

गृह विज्ञान के संघटन क्षेत्र- इसके प्रमुख पाँच अंग हैं। आज विज्ञान इतना विकसित हो गया है कि प्रत्येक अंग के उप-विभाग विकसित हो चुके हैं। ये उप-विभाग इस तरह से हैं-

अंग	**उप-विभाग**
आहार विज्ञान	पोषण विज्ञान, संस्थागत खाद्य सेवा
वस्त्र तथा सूत विज्ञान	टैक्सटाइल डिज़ाइन, फैशन
संसाधन प्रबंधन	आंतरिक सजावट, उपभोक्ता शिक्षा
मानव विकास	शिशु कल्याण, बुजुर्गों की देखभाल
शिक्षा तथा विस्तार	अनौपचारिक शिक्षा

गृह विज्ञान के प्रमुख क्षेत्र- गृह गणित, अर्थव्यवस्था, सफाई, सजावट आदि से जानकारी, स्वास्थ्य, रक्षा, बैक्टीरिया विज्ञान, आहार एवं पोषण विज्ञान, प्राथमिक चिकित्सा एवं परिचार्य, वस्त्र विज्ञान एवं परिधान।

गृह विज्ञान में रोज़गार के अवसर- गृह विज्ञान विषय को लेकर आप किसी बेकार बुटीक या डे-केयर सेन्टर में कार्य करके वेतन भोगी कर्मचारी बन सकता है, परन्तु यदि आप स्वयं की बेकरी, बुटीक या डे-केयर चलाते हैं तो स्वरोज़गार कहलाएगा।

वेतन रोज़गार के अवसर-

- बचत व निवेश योजनाओं के प्रतिनिधि के रूप में।
- खानपान के केन्द्रों, अस्पताल के पथ्य विभाग, जलपान, गृह कैन्टीन वाले खाद्य सामग्री से सम्बन्धित स्टोर कर्मचारी रूप में।
- ड्राईक्लीनिंग की दुकान के कर्मचारी के रूप में।
- गृह विज्ञान महाविद्यालयों व गृह विज्ञान विषय पढ़ाने वाले विद्यालयों के प्रयोगशाला सहायक के रूप में।

इस तरह से गृह विज्ञान विषय को लेकर न केवल खाना पकाना, सिलाई-कढ़ाई, साज-सज्जा इत्यादि कर सकते हैं, बल्कि अच्छी नौकरी भी कर सकते हैं जैसे कि ऊपर बताया गया है।

स्त्री शिक्षा की समाज के विकास में भूमिका

मानसी पंवार
बी.एस.सी (गृह विज्ञान)

शिक्षा जीवन जीने का एक अनिवार्य हिस्सा है चाहे वह लड़का हो या लड़की हो।

- महिला के अधिकारों की रक्षा में शिक्षा सबसे महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।
- यह लिंग के आधार भेदभाव को रोकने में भी मदद करती है। एक शिक्षित महिला में कौशल, सूचना, प्रतिभा और आत्मविश्वास होता है।
- अब महिलाएँ जीवन के सभी क्षेत्रों में पुरुषों के साथ प्रतिस्पर्धा कर रही हैं लेकिन फिर भी कुछ लोग हैं जो लड़कियों की शिक्षा का विरोध करते हैं क्योंकि उनका मानना है कि लड़की का काम घर तक सीमित है और उन्हें लगता है कि लड़की की शिक्षा पर पैसा खर्च करना व्यर्थ है।

एक सुशिक्षित और सुशोभित लड़की देश के विकास में महत्वूपर्ण भूमिका निभा सकती है। एक शिक्षित लड़की विभिन्न क्षेत्रों में पुरुषों के काम और बोझ को साझा कर सकती है।

- एक शिक्षित लड़की की अगर कम उम्र में शादी नहीं की गई तो वह लेखक, शिक्षक, वकील के रूप में देश की सेवा कर सकती है।
- शिक्षित महिला अपने भविष्य को सही आकार देने में अधिक सक्षम है।
- शिक्षित महिलाएँ काम करने और आर्थिक रूप से मजबूत होने के कारण गरीबी को कम करने में सक्षम है।
- शिक्षित महिलाओं की वजह से बाल मृत्यु दर का जोखिम कम होता है।
- शिक्षित महिलाएँ दूसरी महिलाओं की अपेक्षा 50% अधिक अपने बच्चों की रक्षा करने में सक्षम है।
- शिक्षित महिलाएँ परिवार की आय से योगदान करने के लिए बेहतर संचालन कर रही है।

yM+ds dh rjg yM+fd;ksa dks Hkh fofHké iz dkj ds f'k{kk nsuk t:jh gSA mudh f'k{kk bl rjg ls gksuh pkfg, fd os viuss drZO;ksa dks mfpr rjhds ls iwjk djus esa l{ke gksa ds A f'k{kk ds }kjk os thou ds lHkh {ks=ksa esa iq:"kksa ds cjkcj iqf"V gks tkrh gSA ,d f'kf{kr efgyk viuss dÙkZO;ksa v kSj vf/kdkjksa ds ckjs esa vPNh rjg tkurh gSA os ns'k ds fodkl esa ;ksxnku nsl drh gSA

अंतर्राष्ट्रीय नृत्य दिवस

गौरव
बी.ए. द्वितीय वर्ष
चमन लाल महाविद्यालय, लण्ढौरा, हरिद्वार

प्रत्येक वर्ष 29 अप्रैल को अंतर्राष्ट्रीय नृत्य दिवस विश्व स्तर पर मनाया जाता है। इस दिन नृत्य के मूल्य और महत्व से इस कला के रूप में नृत्य के कई लाभों को बढ़ावा देने, तनाव को दूर करने वाले के रूप में नृत्य को पहचानने, खुद को व्यक्त करने, खुशी मनाने का एक तरीका और लोगों को एक साथ लाने वाली एक्टिविटी के लिए भी मनाया जाता है। महान नर्तक जीन जॉर्ज नावेरे के जन्मदिन पर यूनेस्को के इंटरनेशनल थिएटर इंस्टीट्यूट की अंतर्राष्ट्रीय डांस कमेटी द्वारा 29 अप्रैल, 1982 को अन्तरराष्ट्रीय नृत्य दिवस धूमधाम से पूरी दुनिया में मनाया जाता है। बता दें कि नावेरा फ्रांस के एक पारंगत बेले डांसर थे जिन्होंने नृत्य पर 'लेटर्स ऑन द डांस' नाम की एक किताब लिखी थी जिसमें नृत्य कला से जुड़ी सभी चीज़ें मौजूद हैं। इसे पढ़कर कोई भी नृत्य करना सीख सकता है। कहा जाता है कि आज से 2000 वर्ष पूर्व त्रेतायुग में देवताओं की विनती पर ब्रह्माजी ने नृत्य वेद तैयार किया, तभी से नृत्य की उत्पत्ति संसार में मानी जाती है। इस नृत्य वेद में सामदेव, अर्थवेद, यजुर्वेद व ऋग्वेद से कई चीज़ों को शामिल किया गया। जब नृत्य वेद की रचना पूरी हो गई, तब नृत्य करने का अभ्यास भरतमुनि के सौ पुत्रों ने किया था।

"कथकली" नृत्य सत्रहवीं शताब्दी में केरल राज्य से आया। इस नृत्य में आकर्षक वेशभूषा इशारों व शारीरिक थिरकन से पूरी एक कहानी को दर्शाया जाता है। जिससे उसके चेहरे की अभिव्यक्ति स्पष्ट रूप से दिखाई दे सके।

"मोहिनीअट्टम" नृत्य कलाकार का भगवान के प्रति अपने प्यार व समर्पण को दर्शाता है। इसमें नृत्यांगना सुनहरे बॉर्डर वाली सफेद साड़ी पहनकर नृत्य करती है। साथ ही गहने भी काफी भारी-भरकम पहने जाते हैं। इसमें सादा श्रृंगार किया जाता है।

"कत्थक" इस नृत्य की उत्पत्ति उत्तर प्रदेश में हुई है। जिसमें राधाकृष्ण की नखरी शैली को प्रदर्शित किया जाता है। कथक का नाम संस्कृत शब्द कहानी व कथार्थ से प्राप्त होता है। मुगल राज आने के बाद जब यह नृत्य मुस्लिम दरबार में किया जाने लगा तो इस नृत्य पर मनोरंजन हावी हो गया।

"भरतनाट्यम" यह शास्त्रीय नृत्य तमिलनाडु राज्य का है। पुराने समय में मुख्यत: मंदिरों मे नृत्यांगनाओं द्वारा इस नृत्य को किया जाता था। जिन्हें देवदासी कहा जाता था। इस पारंपरिक नृत्य को दया, पवित्रता व कोमलता के लिए जाना जाता है। यह पारंपरिक नृत्य पूरे विश्व में लोकप्रिय माना जाता है।

"कुचिपुड़ी" आंध्र प्रदेश राज्य के इस नृत्य को भगवान मेला नटकम नाम से भी जाना जाता है। इस नृत्य में गीत, चरित्र की मनोदशा एक नाटक से शुरू होती है। इसमें खासतौर से कर्नाटक संगीत का उपयोग किया जाता है। साथ में ही वॉयलिन, मृदंगम, बाँसुरी की संगत होती है।

ओढ़ के तिरंगा क्यों पापा आए हैं

अनस खान
बी.एस.सी. प्रथम सेमेस्टर
चमन लाल महाविद्यालय, लण्ढौरा, हरिद्वार

ओढ़ के तिरंगा क्यों पापा आए हैं?
माँ मेरा मन बात ये समझ न पाए है,
ओढ़ के तिरंगा क्यों पापा आए हैं?
पहले पापा मुन्ना-मुन्ना कहते आते थे,
टॉफियाँ, खिलौने भी साथ में लाते थे,
गोदी में उठा के खूब खिलखिलाते थे,
हाथ फेर सर पे प्यार भी जताते थे,
पर न जाने आज क्यों वो चुप हो गए,
लगता है कि खूब गहरी नींद सो गए।
नींद से पापा उठो मुन्ना बुलाए है,
ओढ़ के तिरंगा क्यों पापा आए हैं?

फौजी अंकलों की भीड़ घर क्यों आई है?
पापा का सामान साथ में क्यों लाई है?
साथ में क्यों लाई है वो मैडलों के हार?
आँख में आँसू क्यों आते हैं बार-बार?
चाचा, मामा, दादा चीखते हैं क्यों?
माँ मेरी बता तो सर को पीटते हैं क्यों?
गाँव क्यों शहीद, पापा को बताते हैं?
ओढ़ के तिरंगा क्यों पापा आए हैं?

माँ तू क्यों है? इतना रोती ये बता मुझे,
होश क्यों हर पल है खोती? ये बता मुझे,
माथे का सिन्दूर क्यों दादी पोंछती है?
लाल चूड़ी हाथ में क्यों बुआ तोड़ती है?
काले मोतियों की माला क्यों उतारी है?
क्यों तुझे माँ हो गया समझाना भारी है?
माँ तेरा ये रूप मुझे न सुहाए है,
ओढ़ के तिरंगा क्यों पापा आए हैं?

पापा कहाँ हैं जा रहे अब ये बताओ माँ,
चुपचाप से आँसू बहा के यूँ सताओ न,
क्यों उनको सब उठा रहे हाथों को बाँधकर?
जय हिन्द बोलते हैं क्यों कन्धों पे लादकर?
दादी खड़ी है क्यों भला आँचल को भींचकर?
आँसू क्यों बहे जा रहे हैं आँख मींचकर?
पापा की राह में क्यों फूल से सजाए हैं?
ओढ़ के तिरंगे को क्यों पापा आए हैं?
क्यों लकड़ियों के बीच में पापा लिटाए हैं?
सब कह रहे हैं लेने उनको राम आए हैं?
पापा ये दादा कह रहे तुमको जलाऊँ मैं?
इस आग में समा के साथ छोड़ जाओगे?
आँखों में आँसू होंगे बहुत याद आओगे?
अब आया समझ माँ ने क्यों आँसू बहाए थे?
ओढ़ के तिरंगा पापा क्यों आए थे?

जनसंख्या नियंत्रण

आर्यन
बी.एससी. तृतीय वर्ष
चमन लाल महाविद्यालय, लण्ढौरा, हरिद्वार

जनसंख्या एक विशेष क्षेत्र में रहने वाले मनुष्यों की कुल संख्या दर्शाती है। हमारे ग्रह के कुछ हिस्सों में आबादी का तेज़ी से विकास चिंता का कारण बन गया है। जनसंख्या को आमतौर पर किसी क्षेत्र में रहने वाले लोगों की कुल संख्या के रूप में जाना जाता है। हालाँकि यह उन जीवों की संख्या को भी परिभाषित करता है। जो इंटरब्रिड कर सकते हैं। कुछ देशों में मानव जनसंख्या तेज़ी से बढ़ रही है। इन देशों को मानव नियंत्रण उपायों को नियंत्रित करने की सलाह दी जा रही है।

जनसंख्या का असमान वितरण- धरती पर जनसंख्या असामन रूप से वितरित है। जहाँ कुछ ऐसे देश हैं जो आवादी विस्फोट की समस्या का सामना कर रहे हैं, वहीं कई देश कम आबादी वाले भी हैं। ऐसा सिर्फ मानव आबादी के मामले में नहीं है। यही बातें जानवरों और अन्य जीवों के मामलों में भी देखी जाती हैं। कुछ जगहों पर आपको अधिक संख्या में जानवर दिखाई देंगे जबकि कुछ जगहों पर आपको कोई भी जानवर देखने को नहीं मिलेगा।

वर्तमान समय में भारत की जनसंख्या- वर्तमान समय में भारत की जनसंख्या पूरे विश्व में प्रथम स्थान पर है। इससे पहले पूरे विश्व में चीन जनसंख्या में प्रथम स्थान पर था। परन्तु वर्तमान में भारत का स्थान विश्व में जनसंख्या के कारण प्रथम स्थान है। आज के समय में भारत की जनसंख्या लगभग 142 करोड़ के आस-पास हो गई, जो कि एक चिंता का विषय है। बढ़ती जनसंख्या के कारण बहुत सी समस्या उत्पन्न होती है जो कि निम्न हैं-

1. बेरोज़गारी
2. भुखमरी
3. जनसंख्या के कारण वनों की कटाई

जनसंख्या के कारण बेरोज़गारी और भुखमरी - जिस भी देश में अधिक जनसंख्या होगी वहाँ बेरोज़गार बहुत ही आम बात है क्योंकि अधिक जनसंख्या के कारण लोगों को रोज़गार मिलने में परेशानी आती है। जब लोगों के पास रोज़गार नहीं होगा तो लोगों के पास धन का अभाव होगा। धन के अभाव के कारण लोगों में खान-पान का सामान खरीदने में समस्या उत्पन्न होगी और देश में भुखमरी आएगी जिसके कारण देश में समस्या उत्पन्न होगी।

सरकार को उठाने चाहिएं जनसंख्या नियंत्रण के लिए कुछ कदम व नियम- हमारे देश की सरकार को जनसंख्या नियंत्रण कानून बनाना चाहिए तथा उस कानून का हम सबको पालन करना चाहिए, क्योंकि हमारे अनुसार 'छोटा परिवार-सुखी परिवार'।

निष्कर्ष- भारत में बढ़ती आबादी गंभीर चिंता का विषय है। हालाँकि सरकार ने इस पर नियंत्रण करने के लिए कुछ कदम उठाए हैं लेकिन ये पर्याप्त प्रभावी नहीं हैं। इस मुद्दे को रोकने के लिए सरकार को कठिन कानून बनाने चाहिए।

सफलता की राह

दीपांशी
बी.एससी. प्रथम वर्ष
चमन लाल महाविद्यालय, लण्ढौरा, हरिद्वार

सफलता नहीं मिलती सिर्फ नींद में सपने देखने से
; ksr ksl ks sgt kjkay kx gSa
l ksusl sd gk, fey hmud ks
l Qy r k fey r hgS mud kst ks
j[kr sgSa gkSy k] v i uhefat y d ks i kusd sfy ,
cny r h mud h ft Unxh gS
t ksj kr ksd ks Hkh fnu esa fxuusy x sgSa
p kj ksav kjs p kgsgksv èkjsk
p kgsgksnfu; k d h gj [kqkh
[kqkh r ksr c fey xh
t c j[kksx sgkSy k v kl ek; d ks Nwusd kA
efat y d ks i kusea
d bZ p <+ uhi Mh l hf<;+ k;
ml v kf[kj h l h<+h d h oks [kqkh
; wg hughafey t kr h ef¶r ea
d bZ v èkjsh j kr ksd ks j kSsku fd ; k
j kSsku fd ; k fn, t y kd j
ugha Fkh nhokj h ml v kf'k; kusea
ml sr ksv kl ek; d h oks Å p h
efat y i d Mh Fkh

उन्नति की राहों में चल पड़े हैं
आगे देखे कितने पहाड़ पड़े हैं
देखा तो सब कुछ था
परन्तु ये न पता था
कि टाँग लटकाए कई खड़े हैं
खड़े हैं तो रहने दो खड़े
रास्ता तो बहुत बड़ा है
मंज़िल मिलेगी ज़रूर उसका
जिसने रातों को रोशन किया है।
पंछी नहीं देखते रास्ते में कितने पेड़ आए
वे तो बस
अपनी मंज़िल को पाने के लिए
निडर के चल पड़े हैं
सफलता ज़रूर है उसके सामने
पाना भी है उसको
क्यों डरे मुसाफिर मंज़िल ज़्यादा दूर नहीं
ज़्यादा दूर नहीं
जो रखता है हौसला आसमाँ को छूने का
उसे डर नहीं रहता नीचे गिरने का।

इक्कीसवीं सदी में दंत चिकित्सा में आए सुधार

शिवानी देवी
बी.एससी. (गृह विज्ञान)
चमन लाल महाविद्यालय, लण्ढौरा, हरिद्वार

परिचय- वास्तव में तो दंत चिकित्सा अर्थात् दाँतों की चिकित्सा का इतिहास बहुत प्राचीन है। बस अंतर आया है तो सिर्फ ये कि प्राचीन समय में दंत चिकित्सा का तरीका भिन्न था और अब इसमें तकनीक भी जुड़ गई है।
बलूचिस्तान के एक पुराने कब्रगाह से निकली खोपड़ियों के मिले अवशेषों में विशेष प्रकार के छेद मिले हैं, जो दंत चिकित्सा की ओर संकेत करते हैं।

प्राचीन भारत का दंत चिकित्सा का इतिहास- पुरातात्विक खोजों से भारत की दंत चिकित्सा का जो इतिहास सामने उभर कर आया है वह बड़ा ही रोमांचक है। प्राचीन काल में मानव के दाँतों में क्षरण की बीमारी के साक्ष्य मिले हैं तथा साथ ही विश्व की सबसे पुरानी भारतीय सभ्यता के मोहनजोदड़ों-हड़प्पा काल में यह भी साक्ष्य मिले हैं कि उस समय की दाँतों की चिकित्सा ड्रिल औज़ार से की जाती थी। साक्ष्यों से यह भी अनुमान लगाया गया कि उस समय ड्रिलिंग पद्यति से ही दाँतों का उपचार किया जाता होगा। अमेरिका, फ्रांस, इटली तथा मैक्सिको के शोधकर्त्ताओं ने यह निष्कर्ष निकाला था कि प्राचीन भारत में नर कंकाल व वहाँ से प्राप्त औज़ार लगभग 7000 साल पुराने हैं (नेट द्वारा)। इक्कीसवीं सदी की दंत चिकित्सा की सबसे आधुनिक तकनीक प्रत्यारोपण को माना जाता है, जिसमें जबड़े की हड्डी के अंदर दाँत की जड़ को स्थाई रूप से लगा दिया जाता है। यह दाँत भी प्राकृतिक दाँत की तरह ही मजबूत व स्थाई होता है तथा पूरी बत्तीसी भी फिक्स करके लगा दी जा सकती है। इस तकनीक के अनुसार आज डॉक्टर्स का भी यह मत है कि इस तकनीक में आसपास के दाँतों को घिसने की ज़रूरत नहीं पड़ती है।

भारत में दंत चिकित्सा- वास्तव में तो पुरातन काल में भी भारत में दंत चिकित्सा व उनके सहायकों की बड़ी कमी थी इसलिए स्वास्थ्य संगठन और स्वास्थ्य परिस्थितियों के संरक्षण के लिए सरकार ने भोर समिति नियुक्त की थी। उसका प्रतिवेदन 1946 ई0 में प्रस्तुत किया गया था। उसका मानना था कि 5000 व्यक्तियों के पीछे एक दंत चिकित्सक अवश्य होना चाहिए। वास्तव में तो प्राचीन दंत पद्धति में यह जो ड्रिलिंग की प्रक्रिया सामने आई है उसे इक्कीसवीं सदी में यानि आज के समय के शोधकर्त्ताओं ने भी दाँतों की स्पेलिंग तो काफी विश्वसनीय व प्रभावी पाया है। दाँतों की चिकित्सा में प्राचीन काल में लोग नीम की दातुन करते थे लेकिन अब यह दातुन अनेक प्रकार के मंजनों में बदल गई है और वर्तमान में दंत चिकित्सा में फिलिंग, रूट कैनाल, डेन्चर, अंदरूनी तत्व जाँच जैसी पद्धति अपनाई जा रही है।

भारतीय कला और संस्कृति का इतिहास और विकास

अंशु सैनी
बी.एससी. तृतीय वर्ष
चमन लाल महाविद्यालय, लण्ढौरा, हरिद्वार

भारतीय कला और संस्कृति हमारे देश की समृद्ध विरासत है जो हमारे देश के इतिहास, संस्कृति और विकास का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। भारतीय कला का इतिहास बहुत लम्बा है, जो समृद्ध संस्कृति और धर्म की समकालीनता को दर्शाता है।

भारतीय कला का विकास प्राचीनकाल से ही हुआ है। वेदों, पुराणों और इतिहासों में भारतीय कला के बारे में विस्तार से बताया गया है। स्थान, समय और संस्कृति के अनुसार भारतीय कला विविध शैलियों में विकसित हुई है। भारतीय कला के विकास में संस्कृति और धर्म दोनों का बहुत बड़ा योगदान है। धार्मिक और दार्शनिक महापुरुषों ने भारतीय कला के विकास में बहुत बड़ा योगदान दिया है। वेदों, पुराणों, रामायण, महाभारत और उपनिषदों में भी भारतीय कला के विकास का वर्णन मिलता है। भारतीय कला की विशेषता यह है कि यह अपने वैशिष्टपूर्ण शैलियों और उत्कृष्ट तकनीकों के लिए जानी जाती है।

भारतीय कला के विकास में मुगल वंश का भी बहुत बड़ा योगदान रहा है। मुगल शासनकाल में भारतीय कला और शिल्प का उन्नयन हुआ था और इस समय कई उत्कृष्ट शैलियां उत्पन्न हुई थीं। जैसे आगरा के ताजमहल, फतेहपुर सीकरी, हुमायूँ का मकबरा और रेड फोर्ट जैसे ऐतिहासिक स्थल भारतीय कला के उन्नयन के उदाहरण हैं। भारतीय कला में चित्रकला, शिल्पकला, वास्तुकला, संगीत, नृत्य और चित्रण जैसी अनेक शैलियां होती हैं। भारतीय कला के सभी शैलियों में संगीत एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। संगीत के माध्यम से भारतीय कला एक अनोखी पहचान बनाए रखती है। संगीत भारतीय कला की एक अहम शैली है जो दुनिया भर में लोकप्रिय है। यह एक ऐसी कला है जिसे सभी वर्गों के लोग समझ सकते हैं जो अलग-अलग भागों में विकसित हुई हैं। हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत और कर्नाटक संगीत भारतीय संगीत की दो प्रमुख शैलियों में से हैं। ये शैलियां विभिन्न तरह के वाद्य और गायन तकनीकों का उपयोग करती हैं। जो अपने अलग-अलग भागों में विकसित हुए हैं।

भारतीय संस्कृति और कला के विकास का निष्कर्ष यह है कि वे दुनिया भर में अनुपम और अद्‌भुत हैं। इनका विकास धर्म, समाज, भौतिक, वातावरण, इतिहास राजनीति और आर्थिक स्थिति जैसे विभिन्न कारकों से हुआ है। भारतीय संस्कृति एक ऐसी संस्कृति है जो समाज की विविधता और भाषण के साथ-साथ एकता और समानता को भी दर्शाती है। भारतीय कला उनकी संस्कृति का जीवंत रूप है जो समस्त दुनिया में केवल भारत में है। इसके लिए भारतीय संस्कृति और कला को संभावित रखना बहुत जरूरी है। इनका संरक्षण न केवल भारत में बल्कि पूरी दुनिया में महत्वपूर्ण है।

मुस्कुराना-एक वरदान

महर ज़ेहरा
बी.ए. प्रथम वर्ष
चमन लाल महाविद्यालय, लण्ढौरा, हरिद्वार

मुस्कुराकर ग़म का ज़हर जिसको पीना आ गया।
यह हक़ीक़त है कि जहाँ में उसको जीना आ गया॥

जब हम हँसते हैं तो चेहरे की लगभग 400 पेशियाँ संचालित होती हैं और जब हम क्रोध करते हैं तो लगभग 150 पेशियाँ चलती हैं, अत:
हँसने से अच्छी कोई दवाई नहीं
क्रोध से बड़ी कोई बुराई नहीं।
हँसने से अच्छी कोई दवाई नहीं है। उदास और बुझे चेहरे वाला व्यक्ति जीवन में कभी जीत हासिल नहीं कर सकता है। जीतने वालों के चेहरे हमेशा मुस्कुराते रहते हैं। वे मीठी हँसी बिखेरते रहते हैं और उनके चेहरे पर लाली बरकरार रहती है। इस काम को हर व्यक्ति कर सकता है क्यों इसमें कोई लागत नहीं लगती है।
एक उक्ति है-
"यदि अपने आप को और अधिक जानना है तो हँसी को अपना लो"
मानो या न मानो यह हक़ीक़त है कि हँसी इंसान की ज़रूरत है।
"यदि अपने आप को और अधिक जानना है तो हँसी को अपना लो।"
हँसना स्वास्थ्य के लिए एक बहुमूल्य औषधि है यह अतिश्योक्ति नहीं है वरन् वैज्ञानिक रूप से सत्य सिद्ध हो चुका है। वैज्ञानिकों की राय है कि यदि कोई व्यक्ति खुले मन से हँसे तो वह दर्द, बीमारी, तनाव से मुक्त हो सकता है। हँसने के दौरान दिमाग में प्राकृतिक पेन किलर भी पैदा होते हैं तथा तनाव दूर करने वाले होर्मोन्स भी तैयार होते हैं। ज़रा से हँसने मुस्कुराने में इतना सारा फायदा तो फिर हँसने में हमारा क्या जाता है। लेकिन हँसने का काम उचित-अनुचित अवसर पहचान कर करें। कहीं ऐसा न हो कि किसी के घर में शोक का माहौल हो और वहाँ जाकर आप हँसने लगें।

English Section

An Investigation of Shakespeare's Villaian in the Light of Gunas

Dr. Deepa Agarwal
Department of English
Chaman Lal Mahavidhyalaya,
Landhora, Distt. Haridwar., Uttarakhand (India)

William Shakespeare was born on April 23, 1564 in the village of Startford-upon-Avon in the country of Warwickshire. The extent, varity and richness of Shakespeare's plays are quite bewildering as one approaches them. Yet he never took the trouble to be original. He is one of the greatest of literary plagiarists. Ben Jonson was right, when he said that,

"He was not of an age, but of all ages, not of one country but of all countries."

He is world's immortal poet. He wrote for the Elizabethan stage and audience; but he is read and enjoyed even today not only by Englishman but by the English speaking people all over the world. His works have been translated into all the important languages of the world and the films based upon his dramas continue to draw packed houses. Shakespearean play, specially his tragedy, reaches beyond the facts of human life and suggests the struggle of man against some mysterious powerful forces lurking beyond the world of the senses; his characters often appear to be helpless puppets in the hands of some malignant power driving them to their doom. He is a matchless painter, albeit not with a brush, but with words. In the words of Dryden,

"he was the man, who of all morden, and perhaps ancient poets, had the largest and the most comprehensive soul."

There are two selves in everybody : the social self and the personal or Internal self. The social self participates in the play of life with a thick mask. With the help of this mask, person keeps hiding his/her feelings and thus keeps changing his/her mask time to In the society nobody without mask, though exception are there. We all know this fact but do not accept it. We all meet with one another by using a kind of mask and do our business. At this juncture, person cautiously keeps hiding his/her feelings which at varying intentional intervals keep coming up and going down. His/her internal self or personal self, a world of person's imagination and nature. The feelings of this internal empire, which are either absolutely pure or impure, keep changing also. Person socializes

those which are pure but the feelings like greed, jealousy, lust, hate, attachment, anger etc., the impure ones, are expressed carefully or kept hidden in the internal world. In order to perform this play successfully, person wears the mask of detachment, gentleness, civilization etc. and for his/her convenience, he remains busy in alternating the masks prepared for various situations arisen in the course of life. He/she at certain stage becomes conscious of this sinister design of the masks alternatively used by him/her. It is to note here that in this course of the play, the three *gunas,* which are present in person , now engender a struggle of GOOD and EVIL in him/her. This constitutes the true self or genuine self of person who is for the most part unconscious of it. From this state, it is not necessary that person always achieves a right path. It all depends upon the predominance of one particular *guna* of the three present in all human beings, though in different degrees. Accordingly he/she may have one of the three paths of *sattva, rajas,* and *tamas* and person is said to be' *'sattvik', 'rajasik'* and *'tamasik'* according to the dominant *guan* which prevails in his/her. A person whose nature aims at light and knowledge is called the *'sattvik';* a person , whose nature always wishes to be active and cannot sit still and its activities are limited by selfish desires, is called the *'rajasik';* and a person whose nature is dull and inert; mind is dark and confused and life is one continuous submission to environment is called the *'tamasik'*. It is here again worth noting that *'sattvik'* does not get rid of the ego-sense. It also causes desire though for noble objects. The self which is free from all attachment is here attachment is here attached to happiness and knowledge. Unless we cease to think and are with the ego-sense, we are not liberated. Prakriti is held to have three constituents, which may be likened to strands, Which by their twist, make a rope. They are termed *Gunas,* and are three in number:

SATTVA, the principle of purity or happiness.
RAJAS, the principle of energy or activity.
TAMAS, the principle of darkness or ignorance.

The characteristics of the gunas are:-

SATTVA: quality of light. Purity and goodness. It is clean and harmless, gives happiness and knowledge and secures health.

RAJAS: quality of restlessness. This quality generates passion and activity. It creates love for sensual objects. It awakens desires and stimulates many actions. It engenders ambition.

TAMAS: quality of idleness. It produces ignorance, inertia and darkness. It

Smothers the power of understanding. It promotes laziness and listlessness and makes man inactive.

All these three *gunas* influence man's thoughts intellect and desires and make him do good or bad deeds of all kinds. These acts give rise to desires and make impressions on the mind. The atma has to then take birth to reap the fruits of his actions. Once it has taken the mantle of a body the three *gunas* influence it in many ways.

Works Cited:

Sharma, Shrawan K. "Aesthetic Experience in the Indian Critical Tradition", *Asian Journal of Literature, Culture and Society.* Vol. 03. November 01/02 April/October 2009: 109-119.

—. "R.K. Narayan's The Guide: A Care of Interplay of Gunas", *The Vedic Path.* Quarterly English Jouranal Vol. Lxxxii. (No. 1&2) January-June 2009: 95-102.

1. https://www.britannica.com/biography/William-Shakespeare
2. https://www.lonelyphilosopher.com/prakriti-and-3-gunas-nature-and-its-3-fundamental-components/
3. http://www.shakespeare-online.com/quotes/themanquotes.html

Origin and Applications of Vedic Mathematics

Dr. Tarun Kumar Gupta
Assistant Professor, Head
Department of Mathematics
Chaman Lal Mahavidyalaya Landhaura-247664,
Haridwar (U.K) **Email –** guptamath06@gmail.com

1. Who Discovered the Vedic Mathematics?

As per the History of Vedic Mathematics, The Term Vedic mathematics coined by His holiness Jagadguru Sankaracharya Sri Bharati Krishna Tirthji Maharaja of Govardhana matha, puri(1884-1960). According to the Gurudev, Vedic Mathematics is the ancient system of computation which was rediscovered by him. He discovered it from Parishit of Atharvaveda which is also called Sulbha Sutras or Ganit Sutra. It was Originally written in Sanskrit. He spent 7 years in studying Vedanta. During these 7 years, he wrote 16 Sutras which were later called as Vedic Maths.

"Gurudev always said Vedic Mathematics is the science which is widely used and given by the by the ancient sages of India."

Vedic Maths traces its roots to the Vedas for knowledge and wisdom, which were ancient scripts (texts). One of the Vedas, especially Atharavaveda, is considered to provide knowledge of the origins of Vedic Maths.

Between 1911-1918, Vedic Guru Sri Bharati Krishna Tirthaji made Vedic Maths more famous. For quick and simple calculations, Sri Tirthaji constructed 16 Sutras and their sub sutras. The simplicity of Vedic Math systems was so profound that with lighting speed, math calculations can be done mentally. Difficult math problems can be solved in no time by the techniques of Vedic Maths.

Let's take an example to illustrate the incredible power of Vedic sdddover the process of normal calculation. Take an example of a complex mathematics calculation of multiplying a 3 digit number with another 3 digit number First number is 999 and second number is 998 Therefore, using standard 998 X 989 multiplication method could take anywhere between 2-3 minutes or more depending on how quickly the person calculates manually using standard measures, but by Vedic Maths, we can mentally calculate the same in 3 seconds Let's see how to calculate in 3 seconds flat. For all these numbers, one relation is that they are close to number 1000, 998 is also 2 less than 1000 & 989 is 11 less than 1000. The Original copy of vedic Mathematics was kept in Nagpur. Many other books were been written by other mathematicians of Vedic period. Most of their works were either destroyed or stolen by foreigners. Many of the

Mathematicians books are still stored in museums or libraries.

2. The Sixteen Sutras and their Corollaries are as follows:

Ekadhikina Purvena - By one more than the previous one (Corollary: Anurupyena)

Nikhilam Navatashcaramam Dashatah - All from 9 and the last from 10 (Corollary: Sisyate Sesasamjnah)

Urdhva-Tiryagbyham - Vertically and crosswise (Corollary: Adyamadyenantyamantyena)

Paraavartya Yojayet - Transpose and adjust (Corollary: Kevalaih Saptakam Gunyat)

Shunyam Saamyasamuccaye - When the sum is the same, that sum is zero (Corollary: Vestanam)

(Anurupye) Shunyamanyat - If one is in ratio, the other is zero (Corollary: Yavadunam Tavadunam)

Sankalana-vyavakalanabhyam - By addition and by subtraction (Corollary: Yavadunam Tavadunikritya Varga Yojayet)

Puranapuranabyham - By the completion or non-completion (Corollary: Antyayordashake'pi)

Chalana-Kalanabyham - Differences and Similarities (Corollary: Antyayoreva)

Yaavadunam - Whatever the extent of its deficiency (Corollary: Samuccayagunitah)

Vyashtisamanstih - Part and Whole (Corollary: Lopanasthapanabhyam)

Shesanyankena Charamena - The remainders by the last digit (Corollary: Vilokanam)

Sopaantyadvayamantyam - The ultimate and twice the penultimate (Corollary: Gunitasamuccayah Samuccayagunitah)

Ekanyunena Purvena - By one less than the previous one (Corollary: Dhvajanka)

Gunitasamuchyah - The product of the sum is equal to the sum of the product (Corollary: Dwandwa Yoga)

Gunakasamuchyah - The factors of the sum is equal to the sum of the factors (Corollary: Adyam Antyam Madhyam)

3. Benefits of Vedic Maths

When regularly used, Vedic Maths demonstrates enhanced academic success for students. It enhances mental endurance as one is able to mentally do several complicated calculations and get answers within seconds. Students who learn vedic maths are able to produce immediate results as calculations are up to 15 times faster than regular maths. As students are able to do mental math

calculations at lightning speed through vedic math techniques, it is really helpful in improving student trust for normal math school curriculum or for any entrance exams. Via daily practise, vedic maths sharpens the intellect and knowledge of students as it holds the brain in active mode.

4. Applications of Vedic Maths

Vedic Math is an ancient technique that simplifies multiplication, divisibility, complex numbers, squaring, cubing, square roots, cube roots, recurring decimals, and auxiliary fractions.

Vedic Maths has the following benefits:

- Makes elementary calculation 10-15 times faster
- Helps in accurate guessing
- Useful for all classes
- Reduces burden (need to learn tables up to 9 only)
- A magical tool to reduce finger counting and rough work
- Increases concentration
- Helps in reducing silly mistakes

5. Why should you know Vedic Maths?

Vedic maths provides answers in one line, as opposed to the several steps of traditional mathematics. There are six Vedanganas. The Jyotish Shastra is one of the six. Vedic Math forms part of this Jyotish Shastra. Vedic maths consists of 3 segments or 'skandas' (branches). The beauty of Vedic Math lies in its simplicity; all calculations can be done on pen and paper. The approach to solve problems stimulates and sharpens the mind, memory, and focus. It improves creativity and promotes innovation.

6. Easy to understand

Vedic Maths is elementary and can be comprehended easily. Once a student begins to understand the basic concepts, they can get creative with their approach. Consequently, their understanding improves. It is flexible and applies to students of all ages. Using Vedic Math in competitive exams may give students an edge over the others.

7. Conclusion

You have learnt about Veda, Upaveda and Vedanga. Vedic Mathematics is the Discovery of the Gurudeva which is related to the Ancient Vedic period. This exceptional piece of work is closely related to the his holiness jagadguru Sankaracharya Sri Bharati Krishna Tirthji Maharaja of Govardhana matha, and our Primary focus is to develop and spread the awareness about this ancient

Indian vedic mental mathematics modus operandi.

8. References

1. Tirthaji B.K. (1965) Vedic Mathematics, Motilal Banarsidass.
2. Bidder G.P. (1856) On Mental Calculation. Minutes of Proceedings, Institution of Civil Engineers (1855-56), 15, 251-280
3. Scripture E.W. (1891) American Journal of Psychology. Vol. IV 1-59
4. Mitchell F.D. (1907) American Journal of Psychology. Vol. XVIII 61-143
5. Williams K.R. (1984) Discover Vedic Mathematics. Vedic Mathematics Research Group.
6. Nicholas, Williams, Pickles (1984) Vertically and Crosswise. Inspiration Books.

Production of Bio-fertilizer use of Algae

MOHD. IRFAN
Department of Botany
ChamanLal Mahavidhyalya, Landhaura
Haridwar-247664 *e-mail: irfanclm17@gmail.com*

Introduction:

- The fertilizers are used to improve the fertility of the land using biological waste, hence the term Biofertilizers.
- Biofertilizers are 100% natural and organic fertilizer that helps to provide & keep in the soil all the nutrients and micro organisms required for the benefits of the plants.
- Micro organisms have always been associated with humans since the down of civilization. They have played a key role in the causing many deadly diseases of humans, animals & plant as well as providing good health, food, beverages several valuable products have been possible only because of micro organisms.
- "Biofertilizers" are the source of microbial inoculants, which have brought hopes for many countries both economically & environmentally.
- The term Biofertilizers denotes all the nutrient inputs of biological origin of plant growth.

History:

- In India the production of biofertilizers on commercial scale started only during late 1960's when yellow seeded soyabeen was introduced for the first time.

Advantages:

- The increased use of chemical fertilizers in agriculture helped the country in achieving self sufficiency in food grains production.
- However, it has also polluted the environment and is causing slow deterioration in soil health.
- With the increase in population the compulsion will not only to abilize agricultural production but also to increase it further in a sustainable manner.
- Biofertilizers differ both quantitatively & qualitatively in their distribution and activity with different soils & host plant.
- Moreover demand for vegetables, crops, cereals is increasing with increasing population and farmers are forced to apply various types of biocides and

agrochemicals to enhance the productivity of crops, which in term affects adversely on our environment including animal & plant health.

Aims:

- Exploitation of "biofertilizers" to promote the plant growth and yield and as an alternative to agrochemicals must be raised.
- Biofertilizers primarily aims at cultivating the land and raising crops in such a way so as to keep the soil alive and in good health.

Benifits:

- Biofertilizers helps in maintaining environmental health by reducing the level of residue in the products.
- It helps in keeping agricultural production at a higher level and reduces its cost & makes it sustainable, improves soil health.
- The benefits of biofertilizers for crop production and seeding establishment are also immense.
- Biofertilizers inoculated plants exhibit an increased plant growth, high nutrient status including that of phosphorus besides offering resistance to pathogenic microbes.
- Crop production, increasing nutrient uptake and in disease control biofertilizers minimizes the risks of environmental damage.
- The commercial cultivation of important medicinal plants, aromatic crop, pulses etc. needs special attention to improve agronomic practices for qualtitative and quantitative improvement.

Need for the use of biofertilizers :

The need for the use of biofertilizers has arisen, primarily for the two reasons:—

1- Because increase in the use of fertilizers leads to increased crop productivity.
2- Because increased usage of chemical fertilizers leads to damage in soil texture and raises another environmental problems.

National project on development & use of Bio Fertilizers:

- The Government of India has launched the "NATIONAL PROJECT ON DEVELOPMENT & USE OF BIOFERTILIZERS" during the sixth five year plan.
- Under this project, one national centre and six regional centers and 40 blue green algae (BGA) production centres have been established.
- These centers will produce 800 tones of Rhizobia and 600 tones of Blue Green Algae annually.

Location of National and Regional Biofertilizers Production and Development Centres:

- National Biofertilizers Development Centre, Ghaziabad,U.P.
- Regional Biofertilizers Development Centre, Hissar, Haryana.
- Regional Biofertilizers Development Centre, (Central) JNKW, Jabalpur, M.P.
- Regional Biofertilizers Development Centre, (South) UAS, Bangalore, Karnataka.
- Regional Biofertilizers Development Centre, (North-East),ICAR.
- Research Complex For North Eastern Hill Region, Shilong, Meghalaya.

Algal Biofertilizer (Blue-Green Algae):

- Algalization is a mode of applying the blue green algae culture in the field as biofertilizers.
- Extensive work on algal biofertilizers is being promoted and practiced in China, U.S, S.R, Philippines, India etc.
- The promotory and qualtitative, quantitative role of varied blue green algae like Anabeana, Nostoc, Cyanobacteria, Aulosira, Azolla, Cylindrospermum etc has been widely seen in Paddy fields. They have minimized the harmful effects & shown tolerance against heavy metals & chemical fertilizers.
- The blue green algae, which are rich in nitrogen and phosphorus, are better fertilizers than seaweeds. In tropical countries, the bottom mud of dried up ponds is regularly used as manure in crop fields.
- The mud of this as a manure is mostly due to the high content of BGA .
- A suitable blended mixture of seaweeds and cyanophycean manures (eg- Bloom of Microcystis) may serve as an ideal fertilizer.

Nitrogen Fixation Through B.G.A.:

- The nitrogen- fixing BGA have been successfully used as a potent biofertilizer in several Indian status & are now being widely applied in rich fields.
- Azolla- Anabaena system has also been found to contribute significantly to the nitrogen status of rice fields.
- In the Sambhar salt lake in Rajasthan, cartloads of algal consisting of Anabaenopsis and Spirulina are produced annually, from September to December, and are employed by local farmers as to paddy and other crops.

Azolla:

- Azolla is an active system very useful as a biofertilizer for rice production.
- It has been well established that Azolla can supply around 25-30 kg N/hc crop.

- Nitrogen addition to rice crop, Azolla is known to suppress the weed population in wet land rice.
- Common use of Azolla has produced a tremendous impact on rice production system and is not only a cheap substitute of nitrogenous fertilizers.

Uses of Azollo:

Azolla has been reported to be a potential fertilizer due to :—

- High nitrogen fixing ability.
- High Biomass due to rapid growth.
- Scavenger of potassium.
- Improves soil physicochemical properties.
- Increases utilization efficiency of area.

Mode of Mass Procuction:

- Blue green algae are manageable system and can be produced in bulk with ease. Depending upon the requirements and methods of algal production have been developed like; in troughs, or tanks.
- Former two methods are essentially for individual farmers and the latter two are for commercial scale production.
- An open air tank culture method for producing soil based algal inoculums is in vogue in our country for last 10 years. The method is based on the natural ecology of BGA and can easily adapt and integrated into the village-oriented technology as it does not need and appreciable capital investment & energy input.
- However, since the crop response to the inoculums produced by this method is not consistent, the technology needs improvement so that quality inoculums can be made available to the farmers at competitive rates in required quantity.
- Because of the decentralization production on going upto the farmers level use of unsterilized soil and re use of the produce as fresh inoculums.
- All the inoculants algae are recommended to be multiplied together in the some pond, desiired along composition of the final produce cannot be maintained the production of the inoculum cannot be done throughout the year in areas with wider temperature fluctuations as the multiplication is done in open air ponds and the growth as algae in this set up is regulated by the prevailing climatic conditions.
- Since the biofertilizere are living organisms and their contribution depends upon their ability to colonize the soil, quality of the inoculums production of quality inoculums is possible only through growing individual algae separately under at least partially controlled conditions.

- It is important to make agricultural increasingly organic and "ecological" in view of the severe adverse effects of agrochemicals endangering the very existence of life on earth.
- The technology is based on the socio-economic settings of Indian farming community.

Adulteration in food and Pollution leading to cancer

Vidhi Tyagi
Department of Zoology, Chaman Lal Mahavidhyalaya,
Landhaura -247664 India

Cancer can be defined in simple words as the uncontrolled growth of cells. Another characteristic of cancer cells is their ability to survive alongside normal cells of the body. The cancer has been known to spread to distant organs and may also occur locally after treatment.

This condition has plagued humans ever since our civilization has existed. Cancer is not new to humans as it is seen today. It is recorded in Egyptian texts about 5,000 years ago and is likewise mentioned in the ancient Indian medical texts Charaka and Sushruta Samhitas. It was known as "Arbud".

A study published in Lancet 2017 reveals that cancer cases in children are increasing day by day. UK based charity; The Children with cancer organization says that exposure to external factors such as pesticides, air pollution and dietary habits may be influencing the rising incidence of childhood cancer.

The Indian Council of Medical Research (ICMR) 2016 data shows a significant increase in the incidence of cancer among both men and women. The cancer burden in India has more than doubled in the last 25 years. The most common cancer cases in women are breast cancer and oral cavity cancer in men. According to the Government of India report, breast, cervical, oral cavity and lung cancer together account for about 40 percent of the total cancer.

Tobacco in any form is known to cause cancer. Consumption of tobacco causes lung cancer and chewing tobacco causes oral cancer. Alcohol consumption is mainly linked to liver and colon cancer, but it can also lead to breast cancer. It has been found that smoking and drinking

The synergistic effect occurs in the risk of developing several types of cancer, especially oral cancer and colon cancer. Several major studies have found increased cancer risk associated with urban air pollution. Particulate matter present in ambient air has been found to be a major contributor to the increased risk of cancer.

Diet plays an important role in maintaining good health. Most of the lifestyle diseases like diabetes, hyper tension, coronary artery disease, atherosclerosis, hyper lipidemia and many more are linked to poor diet. But some foods like broccoli, cauliflower, cabbage, radish, carrot, beans, berries, tomato reduce the chances of cancer and can significantly reduce the growth of cancer cells. Other foods like turmeric, garlic, cinnamon, citrus fruits, flaxseed,

olive oil and fatty fish are also known to reduce the chances of cancer. It's becoming clear that eating more can have a big impact on your risk of developing cancer.

Green tea is one of the healthiest and probably the cheapest beverages on the planet and is packed with hundreds of micronutrients and plenty of antioxidants that have powerful effects on the body. It not only improves brain function but also reduces body weight and reduces the risk of cancer.

Improper diet, adulterated food, contaminated and polluted air, water and soil are common causes of cancer. More recently other factors such as lack of physical activity and obesity have been linked to the development of cancer. Cancer awareness and early detection should be a priority for all governments, and our country in particular, because of the negative socio-economic effects. It would be worthwhile to spread awareness among people to take steps to prevent cancer and to understand the importance of early detection and adequate treatment.

The Prevention of Food Adulteration Act, 1954
The Fruit Products Order, 1955
The Meat Food Products Order, 1973
The Vegetable Oil Products (Control) Order, 1947
The Edible Oils Packaging (Regulation) Order, 1998
The Solvent Extracted Oil, De oiled Meal, and Edible Flour (Control) Order, 1967
The Milk and Milk Products Order, 1992
Essential Commodities Act, 1955

Biosensors: An Useful Aid in Environmental Monitoring

Deepika Saini, Sagarika Kabra
Department of Zoology, Chaman Lal Mahavidyalaya,
Landhora, Haridwar, Uttarakhand

Maharishi School of Pharmaceutical Sciences, Maharishi University of Information Technology, Lucknow, Uttar Pradesh

The Biosensors in accordance to their transduction mechanism, biosensors can be categorised as optical, electrochemical and piezoelectric or based on their recognition component as immunosensors, aptasensors, genosensors, and enzymatic biosensors, which detect antibodies, aptamers, nucleic acids, and enzymes.

The majority of biosensors used in environmental monitoring are immunosensors and enzymatic biosensors, but recently, the development of aptasensors has increased due to aptamers' beneficial properties, including their adaptability, thermal stability, in vitro synthesis, and the ability to customise their structure, distinguish targets with different functional groups, and allow for rehybridization.

Various chromatographic techniques, such as gas chromatography and high performance liquid chromatography combined with capillary electrophoresis or mass spectrometry, are used in traditional analytical methods for the environmental monitoring of pollutants. However, these techniques are expensive and require time-consuming sample pre-treatment and expensive equipment.

The success of the detection of environmental pollutants depends on the contribution of nanotechnology to the development of quick and intelligent biosensing devices; the vast majority of contemporary biosensors contain nanomaterials and novel nanocomposites in their systems, which is advantageous for the enhancement of analytical performance such as sensitivity and limit of detection.

The biggest obstacle to the commercialization of these biosensors is connected to the interdisciplinary manufacturing setting and restrictions on the in-situ operation and analytical performance, particularly in reproducibility.

Additionally, since the majority of environmental biosensors are successfully tested in buffered solutions or distilled water contaminated by environmental pollutants and, when applied to real samples, the matrix effect influenced their analytical performance, commercially available environmental biosensors are also restricted to their application in real samples.

Biosensors:

Recent biosensors for environmental monitoring, including immunosensors, aptasensors, genosensors, and enzymatic biosensors has been reported for the detection and monitoring of various environmental pollutants. These biosensors use antibodies, aptamers, nucleic acids, and enzymes as recognition elements.

The pesticides are among the most significant environmental toxins because of their widespread use in the environment. Due to their high toxicity, the organo-phosphorous insecticides, which are widely used in agriculture, are a class of pesticides that pose a serious environmental risk.

Disposable amperometric enzymatic (acetylcholinesterase) biosensors were proposed employing a cysteamine self-assembled monolayer on gold screen-printed electrodes for the detection of organophosphorous insecticides using paraoxon as the model analyte.

Using hydrolase and a uniform nanocomposite made of magnetic Fe3O4 (average diameter of 120 nm) and gold nanoparticles (diameter 13 nm), a sensitive and selective enzymatic biosensor was used to measure the concentration of methyl parathion, another organophosphorous insecticide.

By using colorimetric aptasensors, acetamiprid has been found in actual environmental samples like fresh surface soil samples.

Pathogens

Pathogens can pose a major threat to human health when present in environmental matrices, particularly water compartments, and certain biosensors have recently been proposed for their environmental monitoring. For the detection of metabolically active Legionella pneumophila in complicated environmental water samples, quick and precise optical biosensors based on surface plasmon resonance have been proposed.

The identification of bacterial RNA by the RNA detector probe immobilised on the biochip gold surface was the basis for the detection principle in one study [40]. The detection period was around three hours, and the use of streptavidin-conjugated quantum dots for signal amplification suggested the viability of the biosensing system for efficient detection of bacteria in the range of 104-108 CFU mL1.

Portable, affordable, and quick heavy metal analyses are a key concern globally due to the serious health risks that heavy metal pollution of natural water environments can have on people.

In order to evaluate a DNA optical biosensor for the detection of heavy metal ions, which are extremely harmful and pervasive environmental contaminants, mercury ions (Hg2+) were utilised as the model target.

Heavy metal Pollution

As heavy metal pollution of natural water settings poses substantial health concerns to individuals, portable, inexpensive, and rapid heavy metal tests are a major concern worldwide. Mercury ions (Hg2+) were used as the model target to assess a DNA optical biosensor for the detection of these highly dangerous and pervasive environmental pollutants.

The biosensor was portable, inexpensive, and quick, screening for Hg2+ in natural waters in less than 10 minutes. The method of detection is based on the capacity of certain metal ions to specifically coordinate with certain bases to form stable metal-mediated DNA duplexes; in the instance of Hg2+, they are capable of doing so to produce stable thymine-Hg2+-thymine complexes.

Since cyanobacteria blooms caused by eutrophication of aquatic systems create harmful toxins such brevetoxins and microcystins, reliable and affordable technologies are required for the early identification of such toxins. Using gold electrodes functionalized with cysteamine self-assembled monolayer, an electrochemical aptasensor was used to sensitively detect brevetoxin-2, a marine neurotoxin.

Additionally, the use of biosensors for the toxin okadaic acid detection in real algal, saltwater, and shellfish samples was described. A multiplex surface plasmon resonance biosensor was suggested for okadaic analysis in algal and seawater samples, as well as for the detection of saxitoxin and domoic acid. Okadaic acid was detected in algal cells using a straightforward sample preparation technique that involved using glass beads to lyse the cells and release the toxins, followed by centrifuging and filtering the extract. Saxitoxin, okadaic acid, and domoic acid, in that order, had limits of detection of 0.82, 0.36, and 1.66 ng mL-1, respectively.

Stability

After daily regeneration with new antibody solutions, the biosensor remained stable for eight weeks with just a slight fluctuation in response. The biosensor detected saxitoxin, okadaic acid, and domoic acid in 47%, 59%, and 61% of the 256 saltwater samples from European nations, respectively, with dangerous samples being discovered in Spain and Ireland [61]. The proposed multiplex immunological techniques were mentioned by the authors as potential early warning monitoring tools for a range of different marine biotoxins in seawater samples.

Plant Tissue Culture, A Technique for Propagation and Conservation of Endangered Plant Species

ANURADHA SAINI
JRF (Department of Botany)
Chaman Lal Mahavidyalaya, Landhura (Haridwar)

Plant tissue culture is a technique that involves in vitro cultivation of plant cells, tissues, and organs under sterile conditions. It is a powerful tool for the propagation, preservation, and modification of plants, and has numerous applications in agriculture, horticulture, forestry, and biotechnology.

The process of plant tissue culture involves the isolation of plant cells or tissues from an Explant (a small piece of plant material, such as a leaf, stem, or root), and their cultivation on a nutrient medium containing a balanced mixture of inorganic salts, vitamins, amino acids, and plant growth regulators. The nutrient medium provides the necessary nutrients and energy sources for the cells to grow and divide, while the plant growth regulators control the growth and differentiation of the cells.

There are several types of plants tissue culture techniques, including callus culture, cell suspension culture, organ culture, and embryo culture. Callus culture involves the cultivation of undifferentiated cells that form a mass of tissue, while cell suspension culture involves the cultivation of single cells in liquid medium. Organ culture involves the cultivation of plant organs, such as shoots, roots, or embryos, while embryo culture involves the cultivation of embryos in vitro.

Plant tissue culture has numerous applications in plant breeding, including the production of disease-free plants, the propagation of rare and endangered species, and the development of new varieties with desirable traits such as high yield, disease resistance, and drought tolerance. It is also used in the production of secondary metabolites, such as alkaloids and flavonoids which have medicinal and industrial applications.

In addition to its applications in plant breeding and biotechnology, plant tissue culture has also been used in the study of plant physiology, biochemistry, and molecular biology. It has provided valuable insights into the mechanisms of plant growth and development, and has been used to study the effects of various environmental factors, such as light, temperature, and nutrients, on plant growth and metabolism.

Despite its many advantages, plant tissue culture also has some limitations and challenges. One of the main challenges is the risk of contamination by

microorganisms, which can affect the growth and development of the cultured cells and tissues. Another challenge is the difficulty of scaling up the process from laboratory to commercial production, due to the high cost and technical complexity of the equipment and facilities required.

In conclusion, plant tissue culture is a powerful tool for the propagation, preservation, and modification of plants, with numerous applications in agriculture, horticulture, forestry, and biotechnology. It has revolutionized the field of plant.

Organic farming : Friend and foe

Sagar Chaudhary
Asst. Professor, Department of Agriculture
Chamanlal mahavidhayalaya, Landhura, Haridwar

New confusion is arises now a days among the youth who find their career in the field of agriculture.

Present scenario of organic farming in the cultivation of crops require long time period for their proper development. organic farming use animals manure, compost and human sewage which has been heated to destroy any harmful microbes to make their good growth in crops.

As we all know organic farming is a system of agriculture that uses natural and biodegradable inputs while deliberating avoiding the use of synthetic fertilizes.

Organic farming as a friend involve some main principles of care that underline precautionary and responsible manner.

Some important points that not need to be forget while considering organic farming as a friend . Let's discuss how does organic farming help in conserving the environment.

1. It uses inputs that don't leave toxic residue in the soil and general environment.
2. It promotes biodiversity of crops and animals to ensure complete and sustainable ecological system with each species complementary the other for common good of nature
3. It has very strong advocate arm that fights for sustainable system of farming that tries to replicate nature as closely as possible.

Organic farming is a progressive step towards creating a positive culture of nurturing the planet . Studies show that organic farming can prevent over 250 million kgs of chemical and pesticides from entering the environment each year. As famous proverbs goes , tiny drops makes an ocean.

little act of conversation can go a long way in restoring the health of our planet .

Organic farming as a foe here are some facts that even we all know that organic farming is best way to produced crops of high nutritional values. But these crops are highly price when sold to market.

Farmers practicing organic farming face a lack of subsidies enjoyed by farmers using conventional farming methods. Therefore, they take a huge hit when Abad weather condition damage their cropos as they are not compensated

accordingly .

Organic farmers may also use organic pesticides and other organic chemicals. Most organic farms still operate under the ancient agricultural style but the transportation of the goods in industrialised leading to high carbon footprint.

The soil required for carrying out organic farming is more expensive than the soil used in traditional farming methods.This means that the initial investment required to carry out organic farming is higher.

CONCLUSION

There is number of debate that is going on wheather the organic farming is friend or foe. Many studies or debate support the organic farming as a friend and other studies or debate support organic farming as a foe. There are so many positives too organic farming. Obviously there is no pollution involved , food distribution across urban areas could be helped out tremendous due to the increase in urban farms. It has been sterotype that all the work, cost, labour,that goes is not worth the output.

However, with the increasing high input costs of conventional farming that simply isn't true anymore.....

Physics demonstrations for promoting STEM Education

Arvind Kumar
Assistant Professor, Department of Physics
Chaman Lal Mahavidyalaya, Landhora, Haridwar

STEM (Science, Technology, Engineering and Mathematics) education is very crucial as it is pervading every part of world around us. Additionally, it is regarded as the foundation of every profession and the backbone of economic development in several countries [1, 2]. Technology, for instance, not only makes life easier, but also promotes economic growth [3]. Evidently, science and technology could be essential to maintaining our way of life in the twenty-first century. The goal of STEM education is to improve teaching techniques, student learning, and subject capability in a way that is similar to everyday occurrences like friction, heat, radiation, cooking, walking, rust development, etc. As a result, education ministries in numerous nations across the world are continually interested in STEM education [2, 4].

Particularly significant and a key component of STEM education is physics. Understanding the laws and regulations governing natural events that occur in our daily lives is made possible by this subject. It includes a wide range of topics related to our physical environment, such as materials, the gadgets we use every day, and everything from galaxies to elementary particles [5, 6]. Under the umbrella of the Natural Sciences, which also includes other important subjects like Chemistry and Biology, Physics is regarded as a fundamental subject or discipline. Engineering can be seen as a type of applied science with Physics as a crucial component. Physics knowledge is also highly important for the advancement of technology.

The quick pace of modern science and technology advancement necessitates the use of cutting-edge information and renewal in physics education, which can greatly enhance learning and inspire students to learn a subject with useful and applicable knowledge [7, 8]. Use of demonstrations or hands-on experiments during class teaching is considered one of the best approaches to focus students' attention towards Physics. This approach also creates conducive environment that improve scientific reasoning and conceptual thinking of the students [7-10]. For example, Professor Walter-Lewin developed a novel and innovative way of teaching Physics at Massachusetts Institute of Technology (MIT, USA). In order to motivate students towards Physics, he created many exciting demonstrations and turned the Physics lectures into a work of art. For examples, he can be seen taking risk of his life to illustrate height of pendulum do not go above the initial height if no external force is applied [12,13]. Professor

Julius Sumner Miller's has demonstrated a lot of experiments/working models and Physics toys for improving the learning process on various topics in Physics world including gravity, energy momentum, atmospheric pressure, waves, etc. [12,13]. In addition, Professor David Wright performs whacky experiment to make Physics interesting; he is seen utilizing liquid nitrogen to create ice cream and even enjoying a bit in front of the class (Figure 1).

Figure 1: Screenshot of the news about Prof. David Wright who performs the whacky Physics experiment in class room.

Development of such innovative teaching equipped with such activities and demonstrations are at very nascent stage in India, however, Professor H.C. Verma (IIT-Kanpur) started developing similar activities to inspire and help the students to learn Physics deeply. During my last five teaching experiences in rural area, I observed that science education is seriously lacking at both schools and college levels. Therefore, these physics demonstrations at different colleges as well schools of Uttarakhand can help appreciably to significantly enhance their scientific analysis and improve their ability to apply scientific knowledge for practical application. With the financial support of UCOST, Dehradun, various demonstrations related to light properties; electrostatics, mechanics, electricity, etc. are being developed at the college level.

References

1. M.-H. Lee, C. S. Chai, and H.-Y. Hong, "STEM Education in Asia Pacific: Challenges and Development," Asia-Pacific Edu Res 28(1), 1–4 (2018).
2. D. Bell, "The reality of STEM education, design and technology teachers' perceptions: a phenomenographic study," Int J Technol Des Educ 26(1), 61–79 (2015).
3. S. Kihombo, Z. Ahmed, S. Chen, T. S. Adebayo, and D. Kirikkaleli,

"Linking financial development, economic growth, and ecological footprint: what is the role of technological innovation?," Environ Sci Pollut Res (2021).

4. Y. Li, K. Wang, Y. Xiao, J. E. Froyd, and S. B. Nite, "Research and trends in STEM education: a systematic analysis of publicly funded projects," IJ STEM Ed 7(1), (2020).
5. Walker, Jearl, David Halliday, and Robert Resnick. 2011. *Fundamentals of physics*. Hoboken, NJ: Wiley.
6. Walker, Jearl, David Halliday, and Robert Resnick. 2011. *Fundamentals of physics*.Hoboken, NJ: Wiley.
7. Sultonova O.N. & Sultonov S. (2018). Types and forms of organization of independent learning activities of students. Problems of increasing the role and place of the service sector in the formation of an innovative economy (pp. 60-62). SamSU.
8. E. M. Smith and N. G. Holmes, "Best practice for instructional labs," Nat. Phys. 17(6), 662–663 (2021).
9. https://ejmcm.com/article_5063_56a4b2ef9697a103d078725c3009bba7.pdf
10. J. Radovanović and J. Sliško, "Applying a predict–observe–explain sequence in teaching of buoyant force," Phys. Educ. 48(1), 28–34 (2012).
11. https://www.youtube.com/watch?v=Zw1bp1V_RwA&ab_channel=MatlabTricks
12. https://www.nytimes.com/2007/12/19/education/19physics.html
13. https://cosmolearning.org/courses/julius-sumner-miller-dramatic-physics-demonstrations/

GENDER SENSITIZATION NEED OF THE HOUR FOR WOMEN EMPOWERNMENT

Dr. Kanika Rawat
Assistant Professor, School of Management and Commerce Studies,
Shri Guru Ram Rai University, Dehradun

Abstract:

Empowerment is a dynamic process; it is challenging to sum up it in a single sentence. It may be characterised in a variety of ways, such as self-reliance, economic independence, social transformation, decision making authority, knowledge expansion, demanding equality, control over resources, and so on. In order to empower women, gender sensitization must be viewed as a crucial action point. The process of gender sensitization involves challenging society's stereotypical viewpoint, which holds that men and women are "unequal entities" that must operate in distinct socioeconomic domains. Gender sensitization alters the perception of both men and women towards women. When men acknowledge the accomplishments of women, then men recognize the women's contribution.

Keywords: *Women Empowerment, gender sensitization, economic independence and social transformation.*

Introduction

The fundamental prerequisite for an individual's total development is gender sensitization. Without being sensitive to the requirements of a certain gender, which entails having empathy for the other sex, one cannot comprehend oneself.The goal of gender sensitization is to alter how men and women view one another. It changes the way males think about women so they no longer see them the normal perception.

Need of the hour

Eve-teasing, marital abuse, or horrific rape are just a few of the issues that are either directly or indirectly linked to a lack of gender sensitivity.It's time to stop passively crying over the injustices done to women and start taking proactive steps to uphold their rights to dignity, equality, and empowerment so that they may play a significant part in creating a society free from prejudice. These strong women contribute to the growth of the family, neighborhood, society, and generation. As members of society, educational institutions, classrooms, students, and teachers may face a variety of concerns, including poverty, gender discrimination, oppression, inequities, social prejudices, and other problems. For shaping the mindset of the students, gender sensitization is the need of the hour.

Measures to Promote Gender Sensitization and Woman Empowernment

Following measures to promote gender sensitization and women empowerment

1. Facilitating the importance of Education to Women.
2. Advancing the contents of women's studies and, more particularly, establishing centres for women's studies.
3. Promoting educational activities in the classroom to instill moral principles and respect for all genders.
4. Several safeguards measures for girl's students in a school environment.
5. Seminars, workshops, and training programmes must be held on a regular basis.
6. facilitating opportunities for women to express their rights at work, in the community, and at home

Need for Gender Sensitized Society

Gender Sanitization is the process of challenging men's and women's stereotypical mindsets, which firmly hold that men and women are "unequal entities" and thus operate in distinct socioeconomic domains. Gender sensitization tends to change the mindsets and perception of both men's and women's for each other. Women often come to believe that they are not inferior to males and that they play an equal part in making decisions at the family, community, and organizational levels.

Need of Gender Sensitization in India

The need for a more systematic, well-planned, and professional approach is desired to inculcate this sensitivity and emphasizes the contribution of both genders in the creation and development of a well-balanced society, especially in a country like India with the vast diversity existing in terms of its customs, traditions, rituals, social values, family beliefs, and individual perception.

Lack of respect for women's participation in a variety of activities is the fundamental issue facing Indian society. The males, who are reluctant to recognize the contributions of women, step forward as a result of being persuaded to do so. Women certainly possess knowledge, and because of this, they must participate in decision-making, according to the gender sensitization process. They should be treated with respect and given an equal opportunity to gain from social and economic advantages since they have concerns.

Conclusion

It can be summed up that women comprises of the half of the population. But still Indian society is patriarchal in nature and women are not treated equally.

They are viewed as a helpless and destitute beings. Although the government is undertaking several programs to support women's empowerment, no tangible outcomes have been seen. Both men and women must participate in the gender sensitization process so that males are psychologically ready for the sensitive duties, responsibilities, and power that their female counterparts have. Despite several attempts since independence, nothing has been accomplished due to a lack of gender sensitization. It is very necessary to alter society's perception of women so that they are viewed positively.

Bibliography

1. Rao, G. V. (2004). Women and society, Himalaya Publishing House, New Delhi.
2. Desai, N. and U. "Thakkar (2007): "Women and political participation in India" Women in Indian society, New Delhi, National Book Trust.
3. Iyengar, R.G. (2016). Gender Sensitization in Education: A pathway to women empowerment.

Financial Freedom of Women in India: Empowering Through Economic Independence

Abhishek
(Lab Assistant- Deptt. of Geology)

Introduction- In recent years, there has been a significant shift in the status and role of women in Indian society. Alongside educational advancements and increased participation in the workforce, women in India are progressively seeking financial independence and striving for greater control over their financial lives. The pursuit of financial freedom is not only empowering for women but also contributes to the overall socio-economic development of the nation. In this article, we explore the importance of financial freedom for women in India and the challenges they face in achieving it.

Economic Empowerment and Gender Equality- Financial freedom plays a crucial role in empowering women and promoting gender equality. When women have control over their financies, they gain decision-making power and the ability to shape their lives according to their aspirations. Economic empowerment enables women to make choices regarding education, healthcare, investments and entrepreneurship, fostering their overall development and contributing to a more equitable society.

Breaking Barriers: Challanges faced by Women in India-

- **Gender Pay Gap**- Women in India often face disparities in wages and income compared to their male counterparts. The gender pay gap persists across various industries and occupations, limiting women's earning potential and inhibiting their journey towards financial freedom.
- **Lack of Financial Literacy-** Limited access to financial education and awareness programs has been a significant challange for women in India. Many women have minimal knowledge of financial concepts, investments and strategies, making it difficult for them to navigate the complex financial landscape and make informed decisions.
- **Socio-cultural Factors**- Deep-rooted societal norms, cultural beliefs and traditional gender roles can pose obstacles to women's financial independence. Social expectations and familiar obligations sometimes discourage women from pursuing careers, entrepreneurial ventures, or financial autonomy.

- **Limited Access to Financial Services**- Women, particularly those in rural areas, often face challanges in accessing formal financial services such as banking, loans, and insurance. Lack of financial inclusion hampers their ability to save, invest and grow their wealth effectively.

Empowering Women: Steps towards Financial Freedom-

- **Promoting Financial Education**- Efforts should be made to enhance financial literacy among women through targetted educational initiatives, workshops and awareness campaigns. Empowering women with knowledge about personal finance, budgeting, saving and investement strategies can built their confidence and enable them to make informed financial decisions.
- **Encouraging Entrepreneurship**- Encouraging and supporting women entrepreneurs is vital for their economic empowerment. Initiatives such as providing access to credit, business development programs, and mentorship opportunities can help women establish and sustain their enterprises, fostering financial independence.
- **Bridging the Gender Pay Gap**- Advocating for gender equality in the work force and promoting equal pay for equal work is essential. Encouraging organizations to implement fair and transparent pay policies, providing equal opportunities for growth and advancement , can contribute to closing the gender pay gap.
- **Improving Financial Inclusion**- Expanding access to financial services and digital banking platforms can empower women, especially in rural areas to save, invest and access credit facilities. Government initiatives and partnerships with financial institutions can facilitate the development of inclusive financial ecosystems.

Conclusion- The journey towards financial freedom for women in India is a critical step in achieving gender equality and socio-economic progress. By addressing the challanges they face and promoting their economic empowerment, society can unlock the immense potential of women as contributors to the country's growth and development. Empowering women with financial knowledge, opportunities and support systems will not only benefi individuals but also create a more inclusive and prosperous nation. It is a collective responsibility to create an environment that enables women in India to thrive financially and realise their aspirations for a brighter future.a

Importance of Education

Anuradha
B.A. 1st Year
Chaman Lal Mahavidyalaya, Landhora, Haridwar

"Education is the key to unlocking the world .
It is the passport to freedom."

Education is the most important factor for the development of human civilization. Education provides the nation with man powers, promotes national unity and uplifts public awareness. A country needs different kinds of man powers such as Doctors, Engineers, Teachers, Judges, Administrative Officials, Economists and other Technical hands. Education provides the nation with those educated hands. If people are educated, they can understand their duties and rights. In order to uplift human society, each should be capable to understand others. If people can understand each other, they will be united. Thus, education can promote national unity. In order to uplift the degree of awareness in the society. Education profoundly enhances human prosperity. Educated people understand what is wrong and what is right. It means-

"Education is the most powerful weapon, which you can, use to change the world."

Ancient Indian Universities- Taxila and Nalanda

In ancient India many universities had been flourished, from the Taxila to Vikramshila, these universities were the main center of education. Due to the emergence of these universities, India gained attention from its frontier states also. If we start from the hierarchial continuity Taxila becomes first.

Taxila- According the archaeological sources, it was established in the 5 BC inthe Gandhara region of that time and now it is situated at modern Pakistan, it was a center of brahmanical education. It was the first center of education in India. Many well known personalities of that time got education from this university. The famous grammarian Panii, who wrote "Ashtadhyayi" taught at Taxila.

Jivaka, who was specialist in medical sciences and was the court doctor of Hararyanka Dynasty ruler Bimbisara, so we can say that Taxila was the main center of education of ancient India.

Chanakya, Kautilya writer of famous book on policy Arthashastra was the student of this center and during the course of time, he also became the Acharya in

this university. His student Chandra Gupta Maurya also got the education from this university, from vedic subjects to medical subjects were taught there.

Nalanda- Name of Nalanda was Nal and it is siutated in modern Bihara. It was the main center of Buddhism education and during the Gupta's reign it got its education status. Kumar Gupta constructed the Nalanda University. It gains a special position in terms of old education that time.

There were 300 rooms for 10,000 students had been studied there and 1,000 to 1,500 teachers were taught there this university was not only famous in India but also in other countries. Students from China, Japan, Tibbet also come here. Chinese pilgrim Hiuen Tsang and Itsing visited this University.

To get admission in this University a competitive test was organized and the ratio was 3 out of 10. The graduates of this University got respected in the society and got high rank post in many fields.

There was a library of 9 storeyed building named Dharmaganja and contains very big collection of ancient books or manuscripts.

In this University the famous professors were Shiladitya, Dipankar. Ateesh and Padamshambhav and many other go to Tibbet in spreading Buddhism teachings. Many subjects were taught there like Yoga Shastra.

But in the 11th century its declinement started when Tantrayism spreads, Buddhist were effected from it and in the 13th century Bakhtiyal Khalji destroyed this University.

My friend

Shama
B.Sc- 2nd Year
Chaman Lal Mahavidyalaya, Landhora, Haridwar

My friend is a Mirror,
that reflects my Face.

My friend is a soap,
with which I wash my heart.

My friend is a dictionary,
by which I gain knowledge.

My friend is a window,
through which I see the world.

My friend is a poem,
wherein I express my feelings.

My friend is everythink to me,
from whom I learn loving.

I wish everone had,
a friend like mine.

G-20

Gayatri
BA- Ist Year
Chaman Lal Mahavidyalaya, Landhora, Haridwar

The Group of Twenty (G-20) is the premier forum for International Economic Cooperation. It plays an important role in shaping and strengthning global architecture and governance on all major National and International Economic Ideas.

India holds the Presidency of the G-20 from 1 December 2022 to 30 November 2023. The G-20 Presidency is responsible for bringing together with the G-20 Agenda in consultation with other members and in response to developments in the global economy.

G-20 Members- The Group of Twenty (G-20) comprises 19 countries (Argentina, Australia, Brazil, Canada, China, France, Germany, India, Indonesia, Italy, Japan, Republic of Korea, Mexico, Russia, Saudi Arabia, South Africa, Turkey, United Kingdom and United States) and the European Union. The G-20 members represent around 85% of the global GDP, over 75% of the Global Trade and about two third of the World countries.

G-20 Presidencies-

The G-20 Presidency steers the G-20 Agenda for one year and hosts the Summit. The G-20 consists of two parallel tracks. The Finance Track and the Shepra Trade.

Finance Ministers and Central Bank Governor lead tje Finance Track while sherpas lead the Shepra Track after finance Track.

The G-20 process from the Shepra side is coordinated byt he Shepras of member countries, who are personal emissaries of the leaders. The Shepras overseas negotiations over the course of the year, discussing agenda items.

In addition, there are Engagement, Groups which bring together Civil societies.

The Group does not have a permanent secretariat. The Presidency is supported by the Triko- previous, current and Incoming Presidency. During India's Presidency the Trikola will comprise Indonesia, India and Brazil respectively.

Importance-

This logo of the G-20 is not just a symbol. It's message. Its a feeling that

is in our veins. This is a resolution that has been included in our thinking. The spirit of universal brotherhood that we have been living through the mantra of 'Vasudhaiva Kutumbakam' is being reflected on this logo and the theme. In this logo, the lotus flower is depicting India's mythological heritage, our faith, our intellectualism, all these together.

The contemplation of Advaita here has been the philosophy of the unity of the living beings. India's G-20 Presidency is coming at a time of crises and chaos in the world. The world is going through the after effects of a disrupture once in a centure pandemic, conflicts and lot of economic uncertainty.

It is true that whenever there is a conference of big platforms like G-20 in the world. It has its own diplomatic and geo political implications. Its also natural.

Its our responsibility to introduce the world to India's thinking and strength, to India's culture and social power.

It is our responsibility to enhance the knowledge of the world with the intellectualism of our thousands of years.

Importance- Today, as India is going to chair the G-20 Presidency, this event is a reflection of the strength, of 130 crore, Indians for us. Today India has reached this point. But, behind this is our long journey of thousands of years, infinite experiences we have seen thousands of years of opulunce and splendour.

The G-20 forms an important role in shaping and strengthning global architecture and governance on all major International Economic issues.

Its influence the 'Vasudhaiva Kutimbakam' which translates to "One Earth, One Family, One Future*" is the theme of G-20 Presidency.

Influence of G-20 in India-

The G-20 is an organisation rooted in the concept of International Governance and the need for cooperation among states to addrerss global challanges, is a key platform for promoting International Economic Cooperation among states to address Global Economic challanges.

India, being the only major global economy stated to have 6% GDP Growth figures in the years ahead, outpaced British last year to become the fifth largest economy in nominal GDP terms. In these times of flobal challanges, the G-20 Presidency gives India a unique opportunity to strengthen its role in the world economic order.

The world bank has warned of a possible global recession of its latest forecast, cutting down global growth estimates for 2023 and 2024, swing to factors like the geopolitical scenario, persistently high Inflation, and highest Interest rates. However, India remains a promising figure in the current sce-

nario.

In conclusion, the G-20 Presidency gives India a unique opportunity to strengthen its role in the world economic order.

Conclusion- India has been active in G-20 meetings and has taken a leadership role in several areas, such as promoting inclusive growth, increasing investment in Infrastructure and strengthening financial regulation.

India's G-20 Presidency provides the country with an opportunity to further strengthen its position as a major player in the global arena. One of the main priorities for India's G-20 Presidency will be to promote global economic recovery and to ensure that the benefits of growth are shared by all.

The G-20 has both the necessary weight and legitimacy to play a central role in global economic Governance. Its members are not only responsible for 89 percent of global GDP and around 60 percent each of global merchandise exports and imports, but also account for a good two thirds of the world's population.

G-20 Summit

Karen Singh Bisht
B.Sc- 3rd Year
Chaman Lal Mahavidyalaya, Landhora, Haridwar

The 2023 G-20 New Delhi Summit is the eighteenth meeting of Grouo of Twenty, a summit scheduled to take place in International Exhibition- Convection Centre (IECC), Pragati Maidan, New Delhi in 2023.

It will be the first even G-20 Summit to be held in India as well as in South Asia.

The G-20 Summit will be chaired by the Indian Prime Minister, Narendra Modi. India's Presidency began on 1st December 2022, leading up to the Summit in the third quarter of 2023. The Presidency handover ceremony was held as an intimate event, in which the G-20 Presidency gavel was transferred from Indonesia President, Joko Widodo to Indian Prime Minister Narendra Modi at the close of the Bali Summit.

The India's G-20 Presidency would guide the work of the G-20 under the theme of "Vasudhaiva Kutumbakam" or "Our Earth". "One Family- One Future"- drawn from the Sanskrit pharase of the Maha Upnishad, which means "The Worls is one family".

Essentially, the theme affirms the value of all life- himan, animal, plant and microorganisms and their interconnectedness ont he planet Earth and in the wider Universe.

G-20 India ha put forth six agenda priorities for the G-20 dialogue in 2023-

- Green Development, Climate Finance & Life.
- Accelerated, Inclusive & Resident Growth.
- Accelerating progress on SDGs
- Technological Transformation & Digital Public Infrastructure.
- Multilateral Institutions for the 21st century.
- Women-led development.

Originally India was scheduled to host the G-20 Summit in 2021 and Italy in 2022. At the 2018, G-20 Summit in Argentina, Prime Minister Narendra Modi said he had requested Italy to host the Summit in 2021 and allow India to host it in 2022, on the occassion of the 75th Year of India's Independence. Italy agreed to let India host the G-20 Summit in 2022 in its place owing to the momentum in bilateral ties.

But after request made by Indonesian Foreign Minister Reatno Marsudi, India exchanged it Presidency of the G-20 with Indonesia would also chair the

Association of Southeast Asian Nations (ASEAN) in 2023.

The G-20 Summit is held annually with a rotating Presidency, and in 2023, India will hold the Presidency. The group does not have a permanent secretariat and is supported by the previous, current and future holders of the Presidency, known as the Troika. In 2023, the trioka consists of Indonesia, Brazil and India.

The G-20 comprises of 19 countries like, Argentina, Australia, Brazil, Canada, China, France, Germany, India, Indonesia, Italy, Japan, Mexico, Russia, Saudi Arabia, South Africa, South Korea, Turkey, UK, USA and the European Union (EU).

The logo of G-20 draws its inspiration from India's National Flag. Same as our tricolour, the logo of G-20 also is a mixture of Saffron, White, Green and Blue.

It juxtaposes planet Earth with the lotus, India's national flower that reflects growth amid challenges.

The Earth reflects India's pro-planet approach to life, one in perfect harmony with nature. Below the G-20 logo is "Bharat", written int he Devangari script.

The G-20 initially focussed largely on broad macroeconomic issues, but it has sinch expanded its agenda to inter alia, include trade, sustainable development, health, agriculture, energy, the environment, climate change and anti-corruption.

ANCIENT INDIAN UNIVERSITIES : TAXILA AND NALANDA

Shivank Sharma
Assistant Professor, Department of History
Chaman Lal Mahavidyalaya, Landhora, Haridwar

In ancient india many universities had been flourished, from the Taxila to vikramshila, these universities were the main center of education. Due to the emergence of these universities, India gained attention from its frontier states also. If we start from the hierarchial continuity Taxila becomes first.

TAXILA

According to archaeological sources, it was established in the 5 BC in the Gandhara region of that time and now it is situated at modern Pakistan. It was a center of brahmanical education. It was the first center of education in the India. Many well known personalities of that time got education from this university. The famous grammarian Panini who wote "Ashtadhyayi" taught at taxila.

Jivaka, who was specialist in medical sciences and was the court doctor of hararyanka dynasty ruler Bimbisara.so we can say that Taxila was the main center of education of ancient india.

Chanakya, kautilya writer of famous book on polity **Arthashsatrawas** the student of this center and during the course of time, he also the Acharya in this university. His student Chandra Gupta Mauryaalos got the education from this university. from vedic subjects to medical subjects were taught there.

NALANDA

Ancient name of Nalanda was Naland it was situated in modern Bihar. It was the main center of Buddhism education and during the Guptas reign it got its education statuskumar Gupta construcrted the Nalanda university and it got its special position in terms of education at that time .

There were 300 rooms for teaching for 10000 students had been studied there and 1000 to 1500 teachers were taught at there. this university was not only famous in India but also in other countries. students from china, Japan,Tibbet also come here. Chinese pilgrim HiuenTsang and Itsing visited this university.

Hiuen Tsang also got the knowledge of yogachara from this university.

To get admission in this university a competitive test was organized and the ratio was 3 out of 10.the graduates of this university got respected in the society and got high rank post in many fields.

There was a library of 9 storeyed building named Dharmaganja it made with three houses Ratnaranjak, Ratnoddhi and Ratnasagar and it contains very big collection of ancient books or manuscripts in the search of these universities many pilgrims reached here.

In this university the famous professors were shiladitya, Dipankar and Ateesh, Padamshambhav many others go to Tibbet in spreading Buddhism teachings. Many subjects were taught there like yoga Shastra sankhyaism etc.

But in the 11th centery it's declinement was started when Tantrayism spreads in Buddhism and Buddhist were effected from it. In the 13th century Bakhtiyarkhalji destroyed this university. And the famous Nal ANDIAN UNIVERSITY was collapsed.

SURYA CHIKITSA

Neetu Singh
M.A. Yoga, 2nd Year, Yogic Science
Chaman Lal Mahavidyalaya, Landhora, Haridwar

We speak of Soul or Pran residing in every body. It is the reason for our body being alive. Once the Soul or Pran leaves the body, the body is lifeless. So what is Pran: Where does it reside in the body? Why does it leave the body? Where does it go after leaving the body? Science is silent on these queries. This is where Surya Chikitsa comes in. Surya Chikitsa strives to ensure well-being of the Pran. Pran is the vital energy which instills life in the body. Surya Chikitsa is a natural line of treatment based on the tenet that health of the body is directly related to the well-being of the Pran or vital energy in the body. All energy required by living beings to survive is ultimately derived from the Sun. In a way, Sun is the life giving force. The imbalance of quantum of Sun's energy in our body leads to loss of vitality or weakening of Pran. This in turn leads to sickness." Sun Ray Therapy or Surya Chikitsa can be used to restore this balance. This therapy uses the natural source of life giving energy – the Sun – to heal and preserve the Pran which increases the vitality and eliminates sickness."Colors have been used for the well-being and for balancing emotions for thousands of years. This alternate therapy is organic, simple to make, effective, requires minimum cost and is recyclable. It is gentle on children and does not have any major side effects. Colors and our emotions are intricately linked. Colors influence our thoughts, moods and behaviors by stimulating the pituitary and pineal glands. For example, red stimulates the sympathetic nervous system, while white and blue color stimulate the parasympathetic nervous system. According to Color Psychology, the energy vibration and frequency of colors is used to enhance and balance our physical, emotional and spiritual state. Color is energy and each cell in our body requires this energy to stay healthy. Main colors linked to different chakras of our body's solar plexus as like Red balances the Muladhara or Root Chakra, Orange balances the Swadhisthana or Sacral Chakra, Yellow, Green, Blue, Indigo, Violet colors balances the Manipura or Solar Plexus Chakra, Anahata or the Heart Chakra, Vishuddha or Throat Chakra, Vishuddha or Throat Chakra, Shahsrara or Crown Chakra simultaneously. Sun ray therapy has the following properties as a natural line of treatment having no side effects. Root cause of disease is eliminated rather than merely suppressing symptoms of the disease. Persistent, recurrent diseases are cured once and for all. Potency of medicine does not reduce despite prolonged storage. Body immunity is not developed by frequent or prolonged use of medicine.

Effectiveness of CRM In Banking Sector

Dr. Shweta
Assistant professor, Department of Commerce
Chaman lal Mahavidhyalaya, landhoura, Haridwar

Customer relationship management (CRM) may be a term that refers to practices, methods and technologies thatcorporations use to manage and analyze client interactions and information throughout the client lifecycle, with the goal of up business relationships with customers, helping in client retention and driving sales growth. Customer Relationship Management (CRM) may be a strategy for managing all the company's relationships and interactions together with your customers and potential customers. It helps you improve your profitability. More normally, when people talk about CRM they are usually referring to a CRM system, a tool which helps with contact management, sales management, workflow processes, productivity and more.

Customer Relationship Management facilitates to specialize in the organization's relationships with individual folks – whether or not those as customers, service users, colleagues or suppliers. CRM is not just for sales. Some of the largest gains in productivity will come back from moving on the far side CRM as a sales and selling tool and embedding it in your business – from time unit to customer services and supply-chain management. CRM systems square measure designed to compile info on clients across completely different channels or points of contact between the customer and therefore the company that might embody the company's web site, telephone, live chat, unsolicited mail, promoting materials and social media. CRM systems can even offer customer-facing workers elaborated info on customers' personal info, purchase history, buying preferences and concerns. CRM has become a way to continuously improve understanding of customer needs and behavior. Data preferences, sub-editors, and prominent organizations empowered to separate data into smaller subsets for the purpose of assessing rigorous ratings, as well as customer motivation data and feedback. This paper will provide banks in the public sector.

India's banking industry has undergone rapid changes followed by a series of significant developments. Most important among them is the development of information technology and communication system. This has changed the concept of Traditional Banking activities and has been instrumental in increasing the dissemination of financial information and reducing the cost of many financial services. Information technology and network communication systems have changed the performance of banks. Second, increasing competition between a

variety of domestic and foreign institutions in the product market becomes a widespread practice.

Why we need Customer in Banking sector

- The longer a relationship continues; the better a bank can understand the customer and his/her needs & preferences, and so greater the opportunity to tailor products and services and cross-sell the product / service range.
- Customers in long-term relationships are more comfortable with the service, the organization, methods and procedures. This helps reduce operating cost and costs arising out of customer error.
- The Customers in Banking Industry today are well informed. With the introduction of new technology, the world has become like a small village. Thus, if a Bank wants to have more customers, it should develop a good relationship with its present customers and try to maintain the same in the future also.
- In the present scenario, brand loyalty is on decline. The customers are switching over frequently to avail the better facilities from other banks. Newer and superior products and services are being introduced continuously in the market. Thus, the banks have to upgrade their products, improve customer service and create bonds of trusts through proper care of customer needs and regular communications.

Some of the measures that Increase the importance of CRM in banking sector

- Influence a 360-Degree View of Every Customer

A banking CRM is a consolidated system that can integrate with your other banking software programs to provide a single view of every customer account. From making a deposit at an ATM to requesting information about a certain type of loan, every predetermined action a customer takes can be recorded in your CRM. This makes it quick and easy to gain deeper insights into their habits and personal preferences, which can help you align certain products to their financial goals.

- Improve Customer Retention

  With customers opting for online banking solutions as opposed to in-person experiences, strategizing a way to foster long-term relationships can be difficult for many organizations.With a banking CRM, there is a great deal of data available right at your fingertips, which can be used to proactively deliver personalized services. Since your CRM enables you to record customer notes and personal information, you can enhance every experience. For example, if a bank teller adds a note to a customer

profile that says they were asking questions about a certain type of loan, the loan department can follow up by emailing them helpful resources that explain their options. Showing your customers that you're listening to them and making efforts to improve their experience at your bank is a strategic way to promote loyalty.

- Enable Quicker Processes
  With a single, unified system, any bank employee can access a customer profile to quickly get up to speed on an account.For example, if a customer contacts a call center, the employee they speak with can make real-time updates to their profile in the CRM. When the customer visits their local bank branch, the bank tellers will be able to see notes from their interaction with the call center. This can eliminate any duplicate conversations and provide the bank teller with a holistic understanding of the customer's situation.
- Use Insights to Improve Sales and Marketing Efforts
  The data in your CRM can be compiled into reports so you can gain a much deeper understanding of your customers. From there, you can identify trends, successful campaigns, and areas for improvement that will help you anticipate customer needs and tailor your future marketing efforts.You can also use the data in your customer profiles to pinpoint areas for cross-selling and upselling. For example, if a customer makes a deposit inside the bank, the teller can have a full view of their profile and notify the customer of new products they may be interested in or qualify for, such as a platinum credit card.

5. Make Your Staff More Productive

With all customer information available under one CRM system, there's no need for employees to search through emails or check multiple platforms for the answer to a quick question. Repetitive administrative tasks are eliminated so employees spend less time scrounging through data and more time fostering client relationships. According to Nucleus Research, sales representatives saw a productivity increase of 26.4 percent when social networking and mobile capabilities were utilized in their CRM. Users can also access a CRM from any device, such as a laptop, desktop, or smart phone, meaning there's no limitation to where and when data can be viewed.

- Ready to see what banking CRM software can do for your organization? Hitachi Solutions' Engage for Banking is designed to provide bankers with a customer centric view of their business. As a Microsoft Dynamics 365 solution, Engage for Banking integrates seamlessly with the entire suite of Microsoft products, giving bankers the tools they need to

understand who their customers are and what they need from their.

Conclusion

CRM offers the most holistic route for banks to enhance customer relationships. Banks can enhance customer retention, profitability and loyalty and get an increased share of banks from their customers. Banks need to embrace CRM as a principle and adopt a strategy for managing customer relationships that effectively addresses three key areas, customers, processes and technology. Finally banks should take actions such as recognition and delegation of work, freedom to handle customer's grievances and management's approval to take decision according to the situations.

References

1. Parvatiyar, A. and Sheth, J.N. "Customer Relationship Management: Emerging Practice, Process, and Discipline." *Journal of Economic & Social Research*, vol. 3, no. 2, 2001, pp. 1-34.
2. Ryals, L. and Knox, S. "Cross-Functional Issues in the Implementation of Relationship Marketing through Customer Relationship Management." *European Management Journal*, vol. 19, no. 5, 2001, pp.534-542.
3. Brown, S.A. and Coopers, P.W. *Customer Relationship Management: A Strategic Imperative in the World of E-Business*, John Wiley & Sons, Hoboken, 1999.
4. Jayachandran, S., Sharma, S., Kaufman, P. and Raman, P. "The Role of Relational Information Processes and Technology Use in Customer Relationship Management." *Journal of Marketing*, vol.69, no.4, 2005, pp.177-192.
5. Ngai, E.W. "Customer Relationship Management Research (1992-2002) An Academic Literature Review and Classification." *Marketing intelligence & planning*, vol.23, no. 6, 2005, pp.582-605.
   - www.centurionbop.co.in
   - www.pnbindia.com
   - www.statebankofindia.com
   - www.icicibank.com
   - www.rbi.org.in
   - www.iba.org.in
   - www.knowledgestom.com
   - www.igniter.com

संस्कृत अनुभाग

भारतवर्षे विदेशीयाक्रमणम्

अंजली कुमारी
बी.ए. प्रथम वर्ष
चमन लाल महाविद्यालय, लण्ढौरा, हरिद्वार

अथ स मुनिः -भगवन्! धैर्येण प्रसादेन, प्रतापेन, तेजसा, वीर्येण विक्रमेण, शान्तया, श्रिया, सौख्येन, धमैण विधया व सममेव परलोक सनाथितवति तत्र भवति विक्रमादित्ये शनैः शनैः पारस्परिका विरोधविशिथिलीकृत स्नेहबन्धनेषु राजसु, भामिनि- भ्रू-भङ्ग-भूरिभाव प्रभाव पराभूत वैभवेषु भटेषु स्वार्थ चिन्ता-सन्तान वितानैकतान्येप्वमात्यवर्गेषु, प्रशंसामात्रप्रियेषु प्रभुषु इन्द्रस्त्व वरुणस्त्व कुबेरस्त्वम् इति वर्णनामात्र संकतेषु बुधजनेषु कञ्चन गजनीस्थाननिवासी महामदो यवन ससेनः प्राविशद् भारतेवर्षे। स च प्रजाः विलुण्ठय मन्दिराणि निपात्य, प्रतिमा विभिद्यः

परश्शतान् जनाश्च दासीकृत्य, शतं उष्ट्रेषु रत्नान्यारोप्य स्वदेश मनैपीत एवं स ज्ञातास्वादः पौनं पुन्येन द्वादशवारमागत्य भारतलुलुण्ठत्। तस्मिन्नेन च रवसरम्भे एकदा गुर्जरवेश चूडायित सोमनाथतीर्थ मपि धूलीचकार।

अद्य तु तत्तीर्थस्य नामापि केनापि न स्मर्यते, पर तत्समये तु लोकोत्तर तस्य वैभवमासीत्। तत्त हि महार्ह-वैदुर्ये-पद्मराग-माणिक्य-मुक्ता फलादि जटितानि, कपाटानि, स्तम्भान्, गृहावग्रहणीः, भित्ती, वलभीः विटङ्कानि च निर्मथ्य, रत्ननिचयमादाय शतद्वयमणसुवर्ण श्रङ्गलावलम्बिनी चञ्चच्चाकव्य चकितीकृतावलोचक लोचन निचया महाघण्टां प्रसह्य संग्रह्व महादेवमूर्तावपि गदामुद्तूतुलत्।

नीतिश्लोकाः

नीतू
बी.ए. प्रथम वर्ष
चमन लाल महाविद्यालय, लण्ढौरा, हरिद्वार

1. अज्ञं: मुखमाराध्य: सुखतरमाराध्यते विशेषज्ञ:
ज्ञानलवदुर्विदग्धं ब्रह्माऽपि नरं न रज्ज्यति।

2. प्रसह्य मणिमुद्धदरेन्मकरवक्त्रदष्ट्रान्तरात्
समुद्रमपि संन्तरेत् प्रचलदूर्मिमाल कुलम्।
भुजङ्गमपि कोपितं शिरसि पुष्पवद्धारयेत्
न तु प्रतिनिविष्ट मूर्खजन चित्तमाराध्येत्॥

3. लभेत् सिकतासु तैलमपि यत्नत: पीडयन्
पिवेच्च मृगतृष्णिकासु सलिलं पिपासार्दित:।
कदाचिदपि पर्यटन् शश विषाणमासादयेत्
न तु प्रतिनिविष्ट मुर्खजन चित्तमाराध्येत्॥

4. व्यालं बालमृणालतन्तुभिरसौ रोद्धुं समुज्जम्भते
छेत्तुं वज्रमणिशिरीषकुसुमप्रान्तेन सन्नह्यति।
माधुर्य मधुबिन्दुना रुचि रचयितुं क्षाराम्बुधेरीहते।
नेतुं वांछति य: खलान् पंथि सतां सूक्तै: सुधास्यन्दिभि:॥

5. स्वायत्तमेकान्तुगुणं विधात्रा
विनिर्मितं छादनज्ञताया:।
विशेषत: सर्वविदां समाजे
विभूषणं मौनमपण्डितानाम्॥

6. यदा किञ्चिज्ञोऽहं द्विप इव मदान्धः सम्भवम्
तदा सर्वज्ञोऽस्मीत्यभवदवलिप्तं मम मनः
यदा किञ्चित् किञ्चित् बुधजनसकाशादवगतं
तदा मुर्खोऽस्मीति ज्वर इन मदो मे व्यपगतः॥

7. शक्यो वारयितुं जलेन हुतभुक् छत्रेण सूर्यातपो
नागेन्द्रो निशितांकुशेन समदो दण्डेन गोगर्दभः
व्याधिर्भेषजसंग्रहैश्च विविधैर्मन्त्रप्रयोगैर्विषं
सर्वस्यौषधमस्ति शास्त्रविहितं मुर्खस्य नास्त्यौषधम्॥

अस्माकं देशः

प्रियंका
बी.ए. द्वितीय वर्ष
चमन लाल महाविद्यालय, लण्ढौरा, हरिद्वार

भारतोऽस्माकं देशः।
अस्माकं देशोऽति विशालः अस्ति।
अस्य भूमिः शस्यश्यामला अस्ति।
अस्माकं देशे अनेके प्रदेशाः सन्ति।
अस्माक देशे अनेकाः भाषाः सन्ति।
अस्मिन हृदये भावात्मिकी एकता विधते।
भारतभूमिः अस्माकं माता अस्ति।
वयं सदा स्वराष्ट्रस्य रक्षा कर्तुम उद्यताः
कथितमस्ति-जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी।

वृक्षाणां लाभः

संकलन : मनीषा कुमारी
बी.ए. द्वितीय वर्ष
चमन लाल महाविद्यालय, लण्ढौरा, हरिद्वार

वने वने निवसन्तो वृक्षाः।
वनं वनं रचयन्ति वृक्षाः॥

शाखादोलासीना विहगाः
तैः किमपि कूजन्ति वृक्षाः॥

पिबन्ति पवनं जलं सन्ततम्।
साधुजना इव सर्वे वृक्षाः॥

स्पृशन्ति पादैः पातालं च।
नभः शिरस्सु वहन्ति वृक्षाः॥

पयोदर्पणे स्वप्रतिबिम्बम्
कौतुकेन पश्यन्ति वृक्षाः॥

प्रसार्य स्वच्छायासंस्तरणम्।
कुर्वन्ति सत्कारं वृक्षाः॥

पर्यावरणम्

साक्षी
बी.ए. द्वितीय वर्ष
चमन लाल महाविद्यालय, लण्ढौरा, हरिद्वार

परि + आवरणम् इति पर्यावरणम्।
पर्यावरणं जीवनस्य आवश्यकं अंग अस्ति।
स्वस्थ-पर्यावरणे एवं स्वस्थः विकास भवति
पर्यावरणस्य संरक्षण अस्माकं कर्तव्यं अस्ति।
प्राचीन काले पर्यावरणं विशुद्ध आसीत्।
अधुना पर्यावरण समस्या अति विकराला अस्ति।
वृक्षानां अभावः पर्यावरण प्रदूषणस्य प्रमुख कारणम् अस्ति्
जनाः स्वार्थ प्रभादवशात् पर्यावरण प्रदूषयन्ति।
पर्यावरणस्य अर्थे, जलं, पवनं च विशुद्ध भवितत्वम्।
शासनम् अपि पर्यावरणस्य रक्षाय कृतसंकल्पः अस्ति।
पर्यावरणम् मानव जीवने अतिमहत्वपूर्ण स्थानं वर्तते।
वयं वायुजलमृदामिः आवृते वातावरणे निवसामः।
एतदेवः वातावरणं पर्यावरणं कथ्यते।
पर्यावरणेनैव व्यं जीवनोपयोगिवस्तुनिः प्राप्तुमः।
जलं वायुः च जीवने महत्वपूर्णो स्तः।
साम्प्रत शुद्ध-पेयजलस्य समस्या वर्तते।
अधुना वायुरपि शुद्धं नास्ति।
एवमेव प्रदूषित पर्यावरणेन विविधा रोगाः जायन्ते
पर्यावरणस्य रक्षायाः अति आवश्यकता वर्तते।
औद्यौगिकापाशिष्टः प्रमुखानि कारणानि सन्ति।
भारतवर्षः अस्माकं देशः अस्ति
भारतस्य भूमिः विविधरत्नानां जननी अस्ति।
भारतस्य प्राकृतिकी शोभा अनुपमा अस्ति।
हिमालयः भारतस्य प्रहरी अस्ति।
एषः उत्तरे मुकुटमणिः इव शोभेत।
सागरः भारतस्य चरणौ प्रक्षालयति।
अनेकः पवित्रतमाः नद्यः अत्र बहीन्तः
गंगाः सरस्वतीः यमुनाः, गोदावरीः नद्यः अस्य शोभा वर्द्धयन्ति
भारतः सर्वासां विद्यानां केन्द्रम अस्ति।
अयं अनेक प्रदेशेषु विभक्तः।

सुभाषितानि

अन्नू
बी.ए. प्रथम वर्ष
चमन लाल महाविद्यालय, लण्ढौरा, हरिद्वार

वरमेको गुणी पुत्रो न च मूर्खशतान्यपि।
एकश्चन्द्रस्तमो हन्ति न च तारागणो अपि च॥

स जातो येन जातेन याति वंश समुन्नतिम्।
परिवर्तिनि संसारे मृतः को वा न जायते॥

उद्यमेन हि सिद्धयन्ति कार्यणि न मनोरथैः।
न हि सुप्तस्य सिंहस्य प्रविशन्ति मुखे मृगाः॥

मातापितृकृताभ्यासो गुणितामेति बालकः।
न गर्भच्युतिमात्रेण पुत्रो भवति पण्डितः॥

माता शत्रुः पिता वैरी येन बालो न पाठितः।
न शोभते सभामध्ये हंसमध्ये बको यथा॥

काव्यशास्त्रविनोदेन कालो गच्छति धीमताम्।
व्यसनेन च मूर्खाणां निद्रया कलहेन वा॥

मीडिया दर्पण

चमन लाल डिग्री कॉलेज को नैक से बी-प्लस ग्रेड मिला

लंढौरा, संवाददाता। चमन लाल महाविद्यालय को नैक की टीम के मूल्यांकन में बी प्लस ग्रेड मिला है। नैक की टीम ने 27-28 फरवरी को महाविद्यालय की निरीक्षण किया था।

महाविद्यालय में नैक से मूल्यांकन ... कर्मचारियों, छात्र-छात्राओं और अभिभावकों के सामूहिक प्रयास से ही यह उपलब्धि मिली है। सचिव अरुण हरित ने कहा कि संस्था के लिए यह एक शुरुआत है।

कोषाध्यक्ष अतुल हरित ने उम्मीद ...

रंगोली प्रतियोगिता में सृष्टि, जोया अव्वल

संवाद न्यूज एजेंसी

लंढौरा। चमन लाल महाविद्यालय में आजादी के अमृत महोत्सव के उपलक्ष्य में आयोजित सांस्कृतिक कार्यक्रम में छात्राओं ने बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया। इस दौरान हुई रंगोली प्रतियोगिता में सृष्टि और जोया ने पहला स्थान प्राप्त किया। ...

चमन लाल डिग्री कॉलेज के छात्रों ने किया संसद का भ्रमण

प्रतिनिधिमंडल ने किया सांसद निशंक का सम्मान, अभिनंदन

मदारलैंड संवाददाता

लंढौरा। चमन लाल डिग्री कॉलेज लंढौरा के राजनीतिक विज्ञान विभाग एवं विधि विभाग के शिक्षकों और छात्र-छात्राओं के एक प्रतिनिधिमंडल ने लोकसभा का भ्रमण किया। प्रतिनिधिमंडल ने भ्रमण के दौरान हरिद्वार के लोकसभा सांसद और पूर्व केंद्रीय मंत्री रमेश पोखरियाल निशंक से मुलाकात की। निशंक ने शिक्षकों और छात्र-छात्राओं के प्रतिनिधिमंडल को संबोधित करते हुए कहा कि भारतीय संसद का पूरे विश्व में विशेष सम्मान है और भारत में लोकतंत्र की जड़ें बहुत मजबूत हैं। भारत विश्व का सबसे बड़ा लोकतांत्रिक देश है, जहां पर सत्ता परिवर्तन बैलेट के आधार पर होता है, बुलेट के आधार पर नहीं। उन्होंने छात्र-छात्राओं को ... नए अवसर पैदा करेगी। साथ ही राष्ट्र की एकता और अखंडता को और अधिक मजबूत करेगी। इस अवसर पर प्रतिनिधिमंडल के प्रमुख अतुल हरित और राजनीतिक विज्ञान विभाग के प्रोफेसर डॉ अरविंद कुमार ने पूर्व केंद्रीय मंत्री निशंक को ... को संसद का भ्रमण कराने हेतु निशंक का आभार जताया। प्रतिनिधिमंडल में प्रोफेसर डॉ अनामिका चौहान, प्रो. नवीन कुमार, डॉ गिरीश कुमार कपिल, सतना, डॉ भारती धावा आदि शामिल थे। छात्र-छात्राओं ने संसद का भ्रमण करने के बाद खुशी जाहिर ...

योग अपने आप में संपूर्ण विज्ञान : स्वामी कर्मवीर

...तिष्ठानों में धूमधाम से मनाई जयंती

जयंती पर 50 यूनिट रक्तदान

लंढौरा/खानपुर। लंढौरा स्थित चमन लाल महाविद्यालय में जयंती पर रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया। शिविर का शुभारंभ देव सुमन उत्तराखंड विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. एमएस रावत, कुलसचिव केआर भट्ट ने किया। शिविर में 50 यूनिट रक्त एकत्रित किया गया। खादर किसान मजदूर एकता संगठन के कार्यकर्ताओं ने कस्बे में बैठक आयोजित कर सुभाष चंद्र बोस की जयंती पर श्रद्धांजलि दी। संगठन महामंत्री अश्वनी तंवर ने कहा कि अंग्रेजों से भारत को आजाद कराने में सुभाष चंद्र बोस ने हिंद फौज की स्थापना की थी। इस दौरान सचिव बृजेश शर्मा, ब्रिजेश शर्मा, सुमित शर्मा, अनुज कुमार, संदीप कुमार आदि मौजूद रहे। वहीं नारसन में आईटीआई प्रांगण में जयंती मनाई। इस मौके पर प्रेम विद्यालय सभा के उपाध्यक्ष योगेश चौधरी, प्रधानाचार्य अरविन्द सिंह, विनीत शर्मा, सावन कुमार, संदीप कुमार मौजूद रहे। संवाद

लंढौरा स्थित चमनलाल डिग्री कॉलेज में छात्रा को प्रमाणपत्र देते अतिथि। -संवाद

नई शिक्षा नीति के पांच साल में आएंगे परिणाम

चमन लाल महाविद्यालय में संवाद कार्यक्रम में बोले पूर्व शिक्षा मंत्री डॉ. निशंक

संवाद न्यूज एजेंसी

लंढौरा स्थित चमनलाल डिग्री कॉलेज में आयोजित संवाद कार्यक्रम के दौरान सांसद डॉ. रमेश पोखरियाल निशंक के साथ छात्र-छात्राएं। संवाद

गणितज्ञ रामानुजन को याद किया

स्वतंत्रता और समानता का हर किसी को अधिकार : सिंह

संवाद न्यूज एजेंसी

चमन लाल महाविद्यालय में व्याख्यान का समापन

जनसंख्या रोकने के लिए जन जागरूकता जरूरी

सुभाष चन्द्र बोस की जयंती पर रक्तदान कि...

लंढौरा, संवाददाता। चमन लाल महाविद्यालय में नेताजी सुभाष चंद्र बोस जयंती पराक्रम दिवस के रूप में मनाई गई। इस मौके पर 50 छात्र-छात्राओं ने रक्तदान किया। श्रीदेव सुमन विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. एमएस रावत, कुलसचिव के आर भट्ट ने शिविर का शुभारंभ किया।

कुलपति प्रो. रावत ने कहा कि एक व्यक्ति के रक्तदान से तीन व्यक्तियों का जीवन बचाया जा सकता है। रक्तदान से रक्तदाता खुद भी कई बिमारियों से बच सकता है। उन्होंने कहा कि जल्दी ही चमन लाल महाविद्यालय में श्रीदेव सुमन विवि का मूल्यांकन केंद्र स्थापित किया जाएगा।

कुलसचिव ने बताया कि एकेडमिक ...

लंढौरा के चमन लाल डिग्री कॉलेज में सोमवार को रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया। • हिन्दुस्तान

आईडी जल्द बनानी है ताकि परीक्षा फॉर्म भरने में किसी प्रकार की कठिनाई न हो।

विशिष्ट अतिथि सीएमएस डॉ. संजय ...

... में जानकारी दी। उन्होंने बताया कि आभा कार्यक्रम के अंतर्गत प्रत्येक भारतीय को 14 अंकों की एक विशिष्ट स्वास्थ्य पहचान संख्या दी जाएगी। ...

... का धन्यवाद दिया। प्रबंध सचिव अरुण हरित, कोषा... हरित ने भी कार्यक्रम को ... किया। प्राचार्य डॉ. दीपा ... बताया कि शिविर में 50 ...

नैक ने मूल्यांकन कर चमन लाल को दिया बी प्लस ग्रेड

रुड़की। हाल ही में राष्ट्रीय मूल्यांकन एवं प्रत्यायन परिषद (नैक) ने चमन लाल कॉलेज का मूल्यांकन कर कॉलेज को बी प्लस ग्रेड दिया है। इस उपलब्धि से कॉलेज प्रबंधक के साथ ही स्टाफ और छात्र-छात्राओं में हर्ष की लहर है।

बता दें कि चमनलाल महाविद्यालय ने नैक में कॉलेज के निरीक्षण के लिए आवेदन किया था। इसके बाद नैक की टीम ने कॉलेज पहुंचकर व्यवस्थाओं का जायजा लिया था। सभी व्यवस्थाओं के दुरुस्त मिलने और मानकों पर खरा उतरने पर कॉलेज को श्रेणी मिला। कॉलेज प्रबंध समिति अध्यक्ष रामकुमार शर्मा ने कहा कि यह उपलब्धि किसी एक व्यक्ति के सहयोग से नहीं बल्कि कॉलेज के हर स्टाफ और हर छात्र-छात्राओं की मेहनत का नतीजा है। कहा कि अब स्टाफ और छात्र-छात्राएं मेहनत कर ग्रेड को ए प्लस तक पहुंचाएंगे।

उन्होंने बताया कि छात्रों का चयन राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर हो रहा है। पिछले साल एक छात्र का चयन राजस्थान पीसीएस में एक का आईआईटी पीएचडी में हुआ। केवल नौ वर्ष में कॉलेज ने बहुत बड़ी उपलब्धि हासिल की है। इस मौके पर समिति सचिव अरुण हरित, कोषाध्यक्ष अतुल हरित और प्रचार्य डॉ दीपा अग्रवाल ने भी सबको शुभकामनाएं दी। संवाद

भारतीय संस्कृति के मूलाधार हैं वेदः डॉ. अरुण मिश्रा

लंढौरा के चमनलाल कॉलेज में शुक्रवार को आयोजित कार्यक्रम में मौजूद

भारतीय दर्शन में कर्म को प्रधानता : अग्रवाल

लंढौरा, संवाददाता। चमनलाल महाविद्यालय में अंग्रेजी और जंतु विज्ञान विभाग की ओर से भारतीय दार्शनिक अनुसंधान परिषद के सहयोग से भारतीय दर्शन मूल्य ...

... दर्शनों को समान सम्मान प्राप्त हुआ है। भारतीय दर्शन में कर्म को तात्विक प्रधानता प्रदान की गई है। पुनर्जन्म, पाप-पुण्य आदि की अवधारणा कर्म सिद्धांत पर ही आधारित है।

संगोष्ठी में पुस्तक का किया विमोचन

रुड़की। चमन लाल महाविद्यालय लंढौरा के प्रांगण में दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। संगोष्ठी के पहले दिन महाविद्यालय के सेमिनार हॉल में मां सरस्वती के सामने दीप जलाकर संगोष्ठी की शुरुआत की गई। संगोष्ठी के प्रथम सत्र में मुख्य अतिथि के रूप में गांधीवादी विचारक डॉ. विजय शुक्ला मौजूद रहे। संगोष्ठी संयोजक डॉ. निशु कुमार ने बताया कि सेमिनार विषय पर राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय शोध पत्रों का संकलन करके एक पुस्तक का निर्माण कराया गया है। इसका विमोचन भी सेमिनार में किया गया। महाविद्यालय की कार्यवाहक प्राचार्य डॉ. किरण शर्मा ने अतिथियों का स्वागत किया। प्रबंध समिति के सचिव पं. अरुण हरित एवं कोषाध्यक्ष अतुल हरित ने सभी आमंत्रित अतिथियों को पुष्प गुच्छ, पौधा एवं शॉल भेंट करके स्वागत किया। सेमिनार में विशिष्ट अतिथि के रूप में डॉ. भवारत वेदालंकार, डॉ. प्रकाश लखेड़ा, डॉ. प्रवेश त्रिपाठी, पंडित अतुल हरित ...ति, पं. अरुण हरित, प्राचार्य डॉ. किरण शर्मा, डॉ. नवीन त्यागी ...

आहार शुद्धि के बिना योग का अस्तित्व नहीं है : शंकराचार्य

लंढौरा स्थित चमनलाल महाविद्यालय में आयोजित संगोष्ठी में पहुंचे थे जगद्गुरु

बोले- योग के स्वरूप को जानने के लिए आहार सात्विक होना चाहिए

लंढौरा स्थित चमनलाल डिग्री कॉलेज में आयोजित दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी के समापन पर शिरकत करते जगद्गुरु शंकराचार्य स्वामी राजराजेश्वराश्रम महाराज।

शिविर में सौ लोगों के स्वास्थ्य की जांच

लंढौरा। चमन लाल महाविद्यालय में गणतंत्र दिवस पर आयोजित कार्यक्रमों की श्रृंखला के दूसरे दिन स्वास्थ्य विभाग के सहयोग से स्वास्थ्य जांच शिविर का आयोजन किया गया। इसमें महाविद्यालय के शिक्षकों, छात्र-छात्राओं, उनके अभिभावकों के स्वास्थ्य की भी जांच की गई।

शिविर का शुभारंभ करते हुए महाविद्यालय प्रबंध समिति अध्यक्ष राम कुमार शर्मा ने कहा कि हमें समय-समय पर अपने स्वास्थ्य की जांच कराते रहना चाहिए। प्राचार्य डॉ. दीपा अग्रवाल ने बताया कि शिविर में लगभग सौ से अधिक लाभार्थियों की स्वास्थ्य जांच की गई। शिविर के संचालक डॉ. अमित डावरा ने बताया कि शिविर के लाभार्थियों में मुख्य रूप से हीमोग्लोबिन की कमी सामने आई। संवाद

देश को नई ऊंचाइयों पर ले जाएगी नई शिक्षा नीति

लंढौरा, संवाददाता। चमन लाल महाविद्यालय में हिंदी विभाग की ओर से राष्ट्रीय शिक्षा नीति एवं भविष्य का भारत पर आयोजित ... पूर्व केंद्रीय शिक्षा मंत्री डॉ. रमेश पोखरियाल निशंक ने कहा कि नई शिक्षा नीति देश को नई ऊंचाइयों पर लेकर जाएगी।

राष्ट्रीय संगोष्ठियाँ

योग प्रशिक्षण शिविर

दशम् महाविद्यालय स्थापना दिवस

सांस्कृतिक गतिविधियाँ

रोवर्स–रेंजर्स प्रशिक्षण शिविर

आंतरिक गुणवत्ता संवर्धन प्रकोष्ठ द्वारा आयोजित कार्यक्रमों की झलकियाँ

विभिन्न अवसरों पर आयोजित एन.एस.एस. गतिविधियाँ

राष्ट्रीय पर्व एवं एन.सी.सी. गतिविधियाँ

चित्रकला विभाग द्वारा पेंटिग प्रदर्शनी

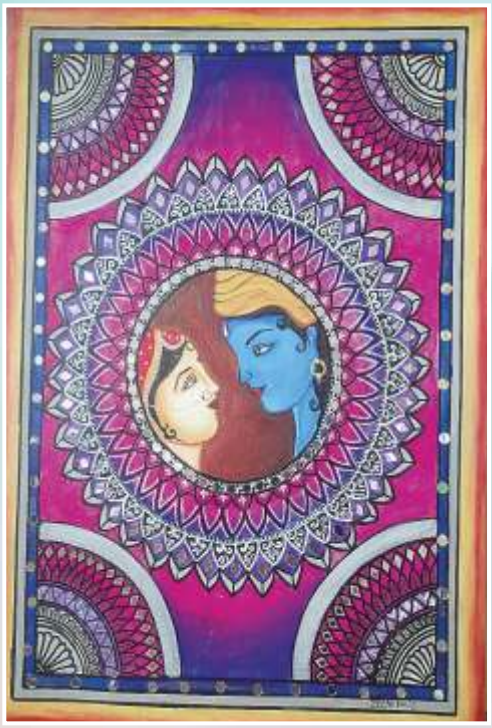

चमन लाल महाविद्यालय, लंढौरा

जनपद हरिद्वार (उत्तराखण्ड)

सम्बद्ध : श्रीदेव सुमन उत्तराखण्ड विश्वविद्यालय
बादशाली थौल, टिहरी गढ़वाल, उत्तराखण्ड–249149

श्रीदेव सुमन उत्तराखण्ड विश्वविद्यालय, टिहरी गढ़वाल से सम्बन्धित पाठ्यक्रम

बी.ए./एम.ए.	:	हिन्दी, अंग्रेजी, संस्कृत, इतिहास, चित्रकला, अर्थशास्त्र, भूगोल, गृहविज्ञान राजनीति शास्त्र, समाज शास्त्र
बी.कॉम/एम.कॉम	:	सी.एफ.ए./नॉन.सी.एफ.ए.
गणित संवर्ग		
बी.एससी./एम.एससी.	:	भौतिक विज्ञान, रसायन विज्ञान, गणित
		भौतिक विज्ञान, गणित, भूगर्भ विज्ञान
		भौतिक विज्ञान, गणित, कम्प्यूटर विज्ञान
प्राणी विज्ञान संवर्ग		
बी.एससी./एम.एससी.	:	वनस्पति विज्ञान, जन्तु विज्ञान, रसायन विज्ञान
		वनस्पति विज्ञान, जन्तु विज्ञान, सूक्ष्म जीवन विज्ञान
		वनस्पति विज्ञान, जन्तु विज्ञान, भूगर्भ विज्ञान
		वनस्पति विज्ञान, जन्तु विज्ञान, भूगर्भ विज्ञान
		जन्तु विज्ञान, रसायन विज्ञान, भूगर्भ विज्ञान
बी.एससी.	:	गृह विज्ञान
बी.लिब./एम.लिब.	:	पुस्तकालय विज्ञान
बी.एससी.	:	कृषि विज्ञान

उत्तराखण्ड संस्कृत विश्वविद्यालय, हरिद्वार से सम्बन्धित पाठ्यक्रम

एम.ए. (योगाचार्य)
पी.जी. डिप्लोमा (योग)
एम.ए. (आचार्य) पत्रकारिता

Visit us at:
Website : www.cldcollege.com, Fax/Phone 01332-251492, 251493
E-mail : cldegree21@gmail.com
COntact No.: 7456099119, 9719757846, 7017590322

सहयोगी संस्थाएं

चमन लाल लॉ कॉलेज, लंढौरा
चमन लाल कॉलेज ऑफ फार्मेसी, लंढौरा

पाठ्यक्रम

बी.ए.एल.एल.बी. (पांच वर्षीय)
एल.एल.बी. (तीन वर्षीय)
एल.एल.एम. (एक/दो वर्षीय)
डी.फार्मा (दो वर्षीय)

अर्हता

इण्टरमीडिएट
तीन वर्षीय स्नातक उपाधि
विधि स्नातक
इण्टरमीडिएट (विज्ञान वर्ग)

प्रवेश प्रक्रिया

उत्तराखण्ड तकनीकी विश्वविद्यालय देहरादून द्वारा मेरिट के आधार पर।
उत्तराखण्ड प्राविधिक शिक्षा परिषद, रुड़की के नियमों के आधार पर।

आरक्षण एवं छात्रवृत्तियां

उत्तराखण्ड राज्य के आरक्षण संबंधी समस्त प्रावधान लागू। आरक्षित वर्ग के छात्र-छात्राओं तथा सामान्य वर्ग के मेधावी छात्र-छात्राओं के लिए छात्रवृत्तियां उपलब्ध।

विशेष

विस्तृत विवरण के लिए लॉ कॉलेज तथा चमन लाल कॉलेज ऑफ फार्मेसी की प्रवेश विवरणिका देखें अथवा कॉलेज की वेबसाइट www.cldcollege.com पर क्लिक करें।

Printed By : Sameya Sakshaya 0135-2658894

Visit us at:
Website : www.cldcollege.com, Fax/Phone 01332-251492, 251493
E-mail : cldegree21@gmail.com
Contact No.: 7456099119, 9719757846, 7017590322

ISBN : 978-81-19743-23-0